H 080
Gan/Tri
53849

THE LIBRARY

श्री नाथीबाई दामोदर ठाकरसी
महिला विद्यापीठ

S. N. D. T.
WOMEN'S UNIVERSITY
BOMBAY.

S. N. D. T. WOMEN'S UNIVERSITY
LIBRARY

23 APR 1974

paper
60
40/-

बापू–चित्रावली

अथवा

(गांधी – दर्शन)

महात्मा गांधी के चित्र एवं जीवनवृत

रचयिता :–

पन्नालाल त्रिपाठी

(पत्रकार एवं कलाकार)

H 080 B
Gan/Tri

53349

प्रकाशक :–

उत्तर प्रदेश गांधी–स्मारक–निधि

सेवापुरी, वाराणसी ।

मूल्य ४०) रुपया

मुद्रक:—संजय बाक्स एण्ड कार्टन कम्पनी
लाजपतनगर, कानपुर ।

पंडित जवाहरलाल जी नेहरू ने गांधी-चित्रावली सम्पूर्ण होने के पूर्व १९४२ में और उसके पूर्ण होने के पश्चात् १९४६ में अपनी अमूल्य सम्मति लिखकर प्रोत्साहित किया था। दोनों सम्मतियां संलग्न पृष्ठ पर हैं। यह चित्र भी १९४२ में लिया गया था।

पूज्य बापू की चित्रावली देखी। मूर्तिमंत 'बापू' को देख रहे हो ऐसा अनुभव कराती आपके कुछ नक्शों से मिलता है। [illegible] पार्थिव सौंदर्य में तो है ही, परन्तु जिनकी आत्मा की प्रभा रहती है उनकी सरलता और आकर्षण है। इस संग्रह में कुछ नक्शों पर सिद्ध करती है।

उ. न. ढेबर

कानपुर. दि.

२२. ६. ५८

चित्र संग्रह देखा। यहां बापू के केवल फोटो नहीं है
उनके भिन्न भिन्न भावों का सुभग प्रदर्शन है।
जनता को यह प्राप्त होना ही चाहिये। २१-९-६१
कानपुर. काका कालेलकर.

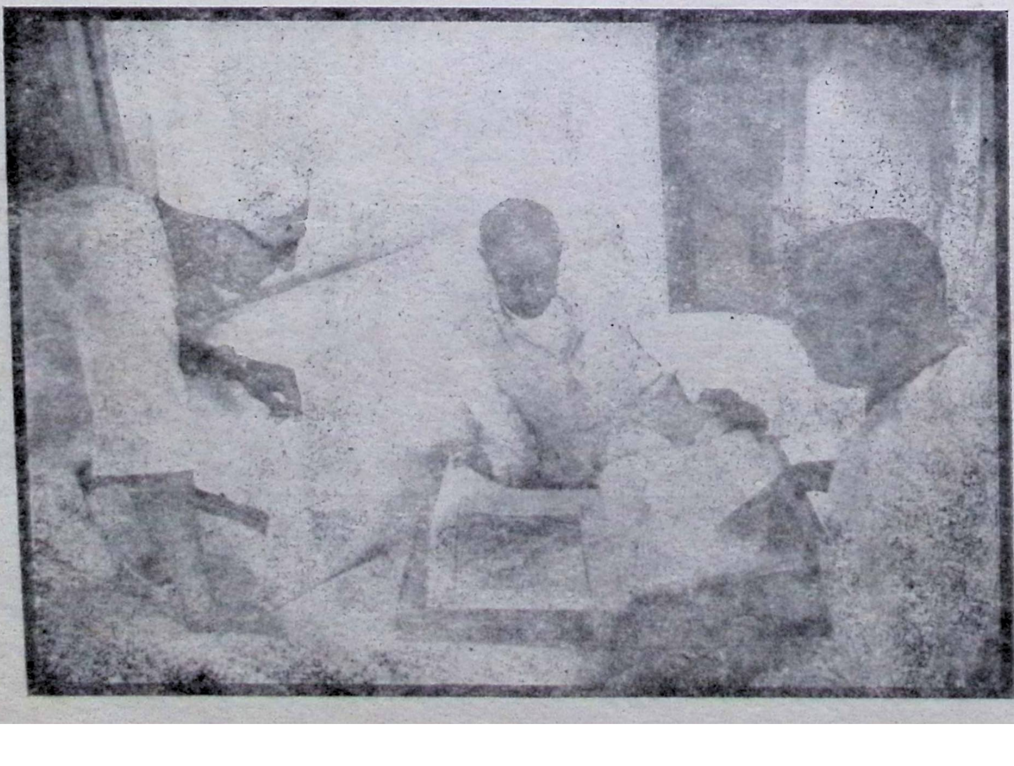

अत्यंत भावुकता से नेहरू जी चित्रावली देख रहे हैं। स्व० पं० बाल कृष्ण शर्मा (दाहिनी ओर) और चित्रकार पन्नालाल त्रिपाठी (दांयीं ओर) हैं।

नियोजित चित्रों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण

यह गांधी जी के चित्रों का आकर्षक संग्रह है। चित्रकारों एवं उनके कैमरे से परिहार करने अथवा बचने के कारण गांधी जी के चित्र लेना सहज कार्य नहीं है। उनके चित्र अनजानेमें ही लिये जा सकते हैं। इस संग्रह में जो चित्र हैं वे ऐसे ही लिये गये हैं। अतः ये चित्र पूर्व नियोजित चित्रों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण और प्रभावोत्पादक हैं। चूँकि गांधी जी महत्ता भारत में इतनी अधिक है कि उनके चित्रों का मूल्य केवल हमारे लिये ही नहीं वरन उन सबके लिये है जो हमारे पश्चात् आवेंगे।

—जवाहरलाल नेहरू

कानपुर, ९ फरवरी १९४२

पुनः सात वर्ष पश्चात्

सात बरस बाद फिर इन चित्रों को मैंने देखा और उन को देखते ही सैकड़ों और तसवीरें मेरे मन में आ गईं। अच्छा है कि यह चित्रावली छापी जा रही है, विशेषकर उन लोगों के लिये जिनके पास यह तसवीरों का ख़ज़ाना दिमाग़ में नहीं है।

जवाहरलाल नेहरू

कानपुर
२८ अगस्त १९४९

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली-4.
RASHTRAPATI BHAVAN,
NEW DELHI-4.

January 4, 1970.

राष्ट्रपति की शुभ कामना

गांधी जी के चित्रों का यह अप्रतिम संग्रह देख कर मुझे आनन्द हुआ। इन चित्रों में गांधी जी के विभिन्न भाव स्पष्ट रूप में उभर आये हैं। मैं आशा करता हूं कि इस संग्रह से गांधी साहित्य में उपयोगी वृद्धि होगी।

–(वराह गिरि वेंकट गिरि)

V.V. Giri

गवर्नर, उत्तरप्रदेश

GOVERNOR
UTTAR PRADESH

राजभवन-लखनऊ

RAJ BHAVAN
LUCKNOW
October 8, 1969.

मैंने आज अभी श्री पन्नालाल त्रिपाठी कानपुर द्वारा समय समय लिये गये कुछ दुर्लभ चित्र देखे। उनमें से कुछ जैसे यज्ञ करते हुए, दुष्प्राप्य हैं, जिसमें गांधी जी ब्राह्मण पुरोहितों तथा कतिपय अन्य जनों के साथ यज्ञ सम्पन्न कर रहे हैं। प्रार्थना में संलग्न चित्र आदि भी अति उत्तम और दुष्प्राप्य है। प्रकाशित होने पर जनता के लिए अत्यन्त रोचक सिद्ध होंगे। मैं सब प्रकार से प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं।

(वी० गोपाला रेड्डी)

B. Gopala Reddi

(B.Gopala Reddi)

PRIME MINISTER

प्रधान मंत्री

का

प्राक्कथन

भारतीय महापुरुषों में महात्मा गांधी के चित्र सबसे अधिक लिये गये। फिर भी प्रत्येक नया चित्र उनके व्यक्तित्व के किसी न किसी नये पहलू का दर्शन कराने वाला है। कानपुर के श्री पन्नालाल त्रिपाठी को निकट से गांधीजी के चित्र लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मुझे प्रसन्नता है कि वे अपनी स्मृतियों को दूसरों के साथ बंटा रहे हैं।

—(इंदिरा गांधी)

Indira Gandhi

(Indira Gandhi)

New Delhi,
January 7, 1970.

सत्यमेव जयते

No. [illegible]

शिक्षा मंत्री, भारत
EDUCATION MINISTER
INDIA

New Delhi
January 26,1970

प्रस्तावना

गांधीजी के चित्रों के इस संग्रह ने मुझे मोह लिया है। ये अतिशय मूल्यवान हैं, क्योंकि ये सब ऐसे अवसरों पर लिये गये थे जब गांधीजी को यह जानकारी नहींथी कि उनके चित्र लिये जा रहे हैं। इस प्रकार, ये गांधीजी के-महान व्यक्तित्व के बदलते हुए भावों के, अतीव व्यंजक प्रतीक बन गये हैं। इन चित्रों को देख कर ये भाव उठते हैं कि कैसे जटिल व्यक्तित्व की विभूति थे वे, और फिर भी, साथ-साथ, कितने हृदयवान गांधी जी उन बड़ी से बड़ी आत्माओं में थे जिन्होंने इस शताब्दी में शरीर धारण करके कर्म-साधना की। उनकी शिक्षाएं विश्व के भविष्य के लिए चरम महत्व की हैं। उन्होंने जो बात बार-बार कही वह थी कि, मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। उन्हें उनके महान ज्ञान और उच्च विचारों के कारण ही इतना विशिष्ट स्थान प्राप्त नहीं हो गया था। महत्व की बात यह थी कि वे जो शिक्षा देते थे उस पर स्वयं आचरण करते थे। फलतः, उनके जीवन का अध्ययन करने से उनकी शिक्षाएं अधिक स्पष्टता से समझ में आ सकती हैं। अतएव उनके चित्रों के इस मनोरम संग्रह का मैं स्वागत करता हूं।

–ह० (वी० के० आर० वी० राव)

Yours sincerely,

[signature]

(V.K.R.V. Rao)

कृतकार्य और कृतज्ञ

गांधी जी अपने चित्र खिंचाना पसन्द नहीं करते थे। अपने जीवन के आरंभिक काल और अत्यन्त विशिष्ट अवसरों को छोड़ कर शायद ही कभी उन्होंने चित्रकारों को अपने चित्र खींचने का सौभाग्य प्रदान किया हो। फिर भी संसार के नेताओं में उनके सबसे अधिक चित्र लिये गये। जब भी अवसर मिलता, फोटोग्राफरों की सेना उन्हें घेर लेती थी। जब वे सार्वजनिक कार्य के लिये बाहर निकलते या सभा आदि में भाषण देते, फोटोग्राफर भारी संख्या में उनके आस पास एकत्र हो जाते थे। जनता का उनके प्रति इतना आदर और प्रेम था कि फोटोग्राफरों के लिये इसके सिवा कोई गति ही नहीं थी।

गांधी जन्म शताब्दी महोत्सव के दिनों में और उसके पहले गांधी जी की अनेक चित्रावलियां प्रकाशित हो चुकी हैं। उनमें जो चित्र दिये गये हैं अधिकतर गांधी जी के सार्वजनिक कार्य-क्रमों के अवसरों पर लिये हुये हैं। चित्र खिंचाने की उनकी अनिच्छा के कारण निकट से उनके चित्र लेना असंभवप्राय था। इस लिये जो सुन्दर और मूल्यवान चित्रावलियां अब तक प्रकाशित हुई हैं उनमें भी निकट से लिये हुये चित्र अधिक नहीं हैं। दूर से लिये हुये साधारण चित्र सम्भवतः बहुत छोटे होते हैं। उन्हें जब बहुत बढ़ाया जाता है तब उनकी आकृति में अन्तर आ जाता है। अतएव एक सीमा के आगे बढ़े हुये चित्र प्रस्तुत करने की उनकी क्षमता मर्यादित होती है। मैं शौक के कारण चित्र लेने वाला नौसिखिया था, इस लिये मैंने इस मर्यादा को तब समझा जब दूर से गांधी जी के अनेक चित्र ले चुका। मेरी श्रद्धा उनके सच्चे और बड़े चित्रों का संग्रह करने के लिये मुझे व्याकुल किये थी। अतः मैं निकट से चित्र लेने के प्रयत्न करने लगा। इसी बीच पंडित जवाहरलाल नेहरू की ओर मेरा भी मन आकृष्ट हुआ। इस प्रकार प्रयोजन दूना हो गया। दूसरे श्रद्धेय नेताओं के भी चित्र लेने की सम्भावना मुझे दिखाई पड़ी अन्ततः मैंने एक मूल्यवान कैमरा खरीदा। और निकट से गांधी जी के चित्र लेने की घातें लगाना शुरू किया परन्तु इसका मुझे सदा ध्यान रहता था कि बापू रुष्ट न हों। १९३० और १९४८ के बीच मैंने अनेक प्रयत्न किये। कभी—कभी सफलता भी मिली। मैंने उनकी एक आधे घण्टे की फिल्म भी तैयार कर ली। पंडित जवाहरलाल नेहरू के चित्र लेना तो कठिन नहीं था। वे सरलता से चित्र देने को तैयार हो जाते थे। परन्तु उनके अच्छे चित्रों की तो कोई कमी है ही नहीं।

निवेदन

श्री पन्नालाल त्रिपाठी ने मुझे गांधी जी की चित्रावली दिखाई। मुझे लगा कि इस चित्रावली में गांधी जी के विभिन्न मुद्राओं के अच्छे चित्र हैं। अगर इन्हें प्रकाशित किया जाय तो बहुत लोग इन्हें पसन्द ही न करेंगे बल्कि इनका संग्रह करना भी पसन्द करेंगे। उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि के दूसरे मित्रों ने भी इस विचार को पसन्द किया और परिणाम-स्वरूप यह संग्रह उपस्थित है।

आशा है इस प्रयत्न का स्वागत किया जायगा।

विचित्रनारायण शर्मा
सभापति उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि
सेवापुरी, वाराणसी।

३ ला प्लेस,
लखनऊ।

गांधी जी के निकट से लिये कुछ चित्र बड़े आकार में इस चित्रावली में दिये गये हैं। इनमें से अनेक भीड़ में सावधानी के साथ गांधी जी पर फोकस जमा कर लिये गये थे। मेरा प्रयत्न था कि उनके विभिन्न भावों और उनके रूप—सौष्ठव को यथावत् चित्रित किया जाये। इस प्रयत्न में मुझे कहां तक सफलता मिली है, इसका निर्णय पारखी ही कर सकते हैं।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने १९४२ में और फिर १९४९ में ये चित्र देखे थे। उन्होंने मुझे इनको प्रकाशित कर देने का प्रोत्साहन दिया था। बाद में आचार्य काका साहब कालेलकर, श्रीउच्छंगराय ढेबर, श्री बी० गोपाल रेड्डी और कानपुर विश्वविद्यालय के उप-कुलपति श्री राधाकृष्ण ने इन्हें देखा, पसन्दगी व्यक्त की और अपनी संचित स्मृतियों को जनता के साथ बंटा लेने की भी प्रेरणा दी। परन्तु मेरे सामने अजेय कठिनाइयां थीं। उनसे मेरा यह मनोरथ व्यर्थ हो रहा था। हाल में मुझे ये चित्र गांधी जी के परम शिष्य, खादी के क्षेत्र में उनके सहायक, अखिल भारतीय खादी ग्राम—उद्योग संघ एवं कमीशन के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश गांधी-स्मारक निधि के अध्यक्ष श्री पंडित विचित्र नारायण शर्मा को दिखाने का अवसर मिला। उन्होंने इन्हें तुरन्त प्रकाशित कर देने की आवश्यकता महसूस की और अपने साथी, उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि के मन्त्री श्री अक्षयकुमार जी करण से परामर्श करके प्रकाशन की व्यवस्था भी कर दी। इस बात की उन्होंने कोई परवाह नहीं की कि अब विलम्ब हो गया है और अनेक गांधी चित्रावलियां प्रकाशित हो चुकी हैं। यह इतनी बात ही उनकी दिलचस्पी का परिचय देने के लिये पर्याप्त है। वे इतनी दिलचस्पी न लेते तो इस चित्रावली का प्रकाशन कठिन ही बना रहता।

मुझे ये चित्र राष्ट्रपति वराहगिरि वेंकटगिरि, प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी, केन्द्रीय शिक्षा—मन्त्री डा० वी० के० आर०-वी० राव और केन्द्रीय राज्य शिक्षा मन्त्री श्री भक्तदर्शन को दिखाने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने इन चित्रों को पसन्द किया और इसके प्रकाशन के लिये अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

सब महानुभावों के प्रति मैं पर्याप्त कृतज्ञता किन शब्दों में प्रकाशित करूं?

—पन्नालाल त्रिपाठी

जनरलगंज, कानपुर।
बसन्त पंचमी १० फरवरी १९७०

शिक्षा राज्य मंत्री,
भारत सरकार,
नई दिल्ली।

MINISTER OF STATE
FOR EDUCATION,
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.

सत्यमेव जयते

नं० 488/ रा०मं०।७० दिनांक: ८ जनवरी, १९७०।

प्रिय त्रिपाठी जी,

मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मेरे आदरणीय मित्र श्री सीताचरण जी दीक्षित के साथ मेरे कार्यालय में पधार कर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के उन चित्रों का समूह मुझे दिखाने का कष्ट किया, जिन्हें आप 'बापू-चित्रावली' के शीर्षक से पुस्तकाकार रूप मे प्रकाशित करने जा रहे हैं।

आपका यह चित्र संग्रह बड़ा अभूतपूर्व और महत्वपूर्ण है। आपने बहुत निकट से राष्ट्र पिता के विभिन्न अवसरों के स्पष्ट चित्र लिये हैं और इस प्रकार उनकी पावन-स्मृति को चिर स्थायी करने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। ऐसे सुन्दर कार्य के लिये आप बधाई के पात्र हैं।

मुझे आशा है कि आपकी यह बापू 'चित्रा-वली' प्रकाशित हो जाने पर बहुत पसन्द की जायेगी और उसका सर्वत्र स्वागत होगा।

एक बार आपको फिर धन्यवाद देता हूँ।

भवदीय,
(भक्त दर्शन)

श्री पन्नालाल त्रिपाठी,
४९/२१, जनरलगंज,
कानपुर, (उ०प्र०)

कानपुर विश्व-विद्यालय

के

उप कुल पति

की

शुभ-कामना

इस चित्रावली को देख कर स्वाभवतः कितनी ही पुरानी स्मृतियाँ उभड़ आती हैं और कितने ही पुराने चित्र सामने घूमने लगते हैं। छविकार श्री पन्नालाल त्रिपाठी ने गांधी जी का विभिन्न अवस्थाओं में कैमरा द्वारा अध्ययन किया है और उसका लाभ जन-साधारण को भी पहुंचाया है। उन्हें इसके लिए बहुत २ बधाई।

[illegible]
उप-कुलपति

कानपुर विश्वविद्यालय
सर्वोदय नगर
कानपुर
२२-२-१९६९

श्री मोहनदास करमचन्द गांधी

(२ अक्टूबर १८६६–३० जनवरी १६४८)

महात्मा गांधी का जन्म काठियावाड़ (सौराष्ट्र) के पोर बन्दर में भाद्र कृष्ण १२, संवत १९२५ विक्रमी अर्थात् २ अक्टूबर १८६९ ई० को हुआ था। उनके पितृकुल को तीन पीढ़ियों से दीवानगीरी का उच्चपद प्राप्त था। उनके पिता का नाम करमचन्द और माता का पुतली बाई था। पिता को साधारणतः कबा गांधी कहते थे। गांधी जी ने लिखा है :—

"पिताजी कुटुम्ब प्रेमी, सत्यप्रिय, शूर और उदार किन्तु क्रोधी थे। वे रिश्वत से दूर भागते थे। इसलिए शुद्ध न्याय करते थे। उनकी यह प्रसिद्धि हमारे परिवार में और बाहर भी थी। वे राज्य के बड़े वफादार थे। एक बार नायब पोलिटिकल एजेण्ट ने राजकोट के ठाकुर साहब के विषय में अपमानजनक शब्द कहे। कबा गांधी ने उसका विरोध किया। साहब खफा हो गये। कबा गांधी को माफी माँगने का हुक्म हुआ। उन्होंने माफी मांगने से इन्कार कर दिया, जिससे उन्हें कुछ घण्टे हवालात में भी रहना पड़ा। पर वे डिगे नहीं। इसके अन्त में साहब ने उन्हें छोड़ देने का हुक्म दिया।"

कबा गांधी की शिक्षा अधिक न थी। उनमें व्यावहारिक ज्ञान की विशेषता थी। धार्मिक शिक्षा अधिक न होने पर भी वे धार्मिक थे और नित्य गीता पाठ किया करते थे। वे अपने साहस, बुद्धिमत्ता और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे।

पूज्या माता :—

अपनी माता के सम्बन्ध में गांधी जी ने लिखा है :—

"मेरे मन पर यह छाप है कि माता जी साध्वी स्त्री थीं। बड़ी भावुक, पूजा-पाठ के बिना भोजन नहीं करती थीं। हवेली के वैष्णव मन्दिर में रोज जातीं। कठिन से कठिन व्रत लेतीं और उन्हें पूरा करतीं। बीमार पड़ने पर भी लिए हुए व्रत को न छोड़तीं। .... माता जी व्यवहार कुशल थीं। दरबार की सब बातें जानती थीं। वे बुद्धमती समझी जाती थीं।"

विरासत में गुण :—

गांधी जी ने उच्च-जीवन का निर्माण और विकास करने वाले श्रेष्ठ गुण अपने पूर्वजों से विरासत में पाये थे। श्रद्धा-भक्ति के साथ माता-पिता एवं गुरु-जनों की सेवा का पाठ बाल्य-काल से ही उनमें ओत-प्रोत था। श्रवण और हरिश्चन्द्र की जीवनी एवं आदर्शों का उन पर विशेष प्रभाव था। तत्कालीन एक गुजराती कवि की निम्न पंक्तियों का प्रभाव उन पर विशेष हुआ :—

गुण केड़े तो गुण दश गयो, मन वाचा कर्म करी।
अवगुण केड़े जो गुण करे, तो जग्मो जीत्यो सही ॥

जिस पोर बन्दर में उनका जन्म हुआ था, वह कृष्ण-सखा सुदामा का नगर माना जाता है। अतः उसे सुदामा-पुरी भी कहते हैं। गांधी जी इस नगर में लगभग सात वर्ष की आयु तक रहे। यहाँ उनका पाठशाला जाना आरम्भ हुआ ही था तभी उनके पिता को राजस्थानिक कोर्ट का सदस्य बनकर राजकोट जाना पड़ा। गांधी जी का वास्तविक विद्याध्ययन वहीं हुआ। अठारहवें वर्ष में उन्होंने इन्ट्रेन्स (मैट्रिक) की परीक्षा पास की। शिक्षा-काल में उनमें दृढ़ता एवं आध्यात्मिकता का विकास दृष्टिगत हुआ। एक बार, जब वे पहली या दूसरी अंग्रेजी कक्षा में पढ़ते थे, शिक्षा विभाग के इन्सपेक्टर जाइल्स शाला को देखने आये। उन्होंने परीक्षा के रूप में बच्चों से कुछ शब्द लिखने को कहा। बालक गांधी एक शब्द के हिज्जे गलत लिख रहे थे। शिक्षक ने उन्हें अपनी बूट की ठोकर से इशारा किया कि सामने वाले लड़के की नकल करके हिज्जे ठीक लिखो बालक गांधी ने न तो नकल किया और न बाद में मूर्ख कहे जाने पर दुखी ही हुये।

सिगरेट पीना :—

रिश्ते के एक भाई की संगति में पड़ कर सिगरेट पीने के लिये एक दो बार नौकर की जेब से एकाध पैसा चुरा लिया। उसके पश्चाताप-स्वरूप आत्महत्या तक करने का उन्होंने निश्चय किया। ऊँची कक्षा में पहुंचने पर एक मित्र के कुप्रभाव से मांस खाने की उनके मन पर जो प्रति-क्रिया हुई वह उनके शब्दों में जानने योग्य है :—

"ऐसे भोजनों के बाद घर आना कठिन होता। मां खाने को बुलाती तो आज भूख नहीं है, पहले का खाया पचा नहीं है, ऐसे बहाने बनाने पड़ते। ऐसा कहते हुए हर बार मेरे दिल को चोट लगती यह झूठ और मां के सामने।" अन्त में उन्होंने झूठ न बोलने और मांस-भोजन-त्याग का निश्चय किया। यद्यपि मांस खाने की बात स्वाद के हेतु न होकर उनके मन में शक्ति-संचय कर विदेशी शासन को हटाने के उद्देश्य से थी। फिर भी उन्होंने झूठ बोलने की अपेक्षा मांस-भोजन का त्याग करना उचित समझा।

सोने की चोरी :—

उन्हीं दिनों एक और एक ऐसी घटना हुई जिसने गांधी जी के जीवन में एक विशेष परिवर्तन ला दिया। उनके भाई ने किसी से २५ रु० का कर्ज लिया था। उसे अदा करने के लिए दोनों भाई व्यग्र थे। उनके भाई के हाथ में सोने का एक कड़ा था, जिसमें से कुछ भाग काट कर कर्ज अदा किया गया। गांधी जी को इस कृत्य से विशेष ग्लानि हुई कि वे अपने माता पिता से झूठ बोले और कर्ज अदा करने की सही बात क्यों न कही। चोरी न करने का निश्चय तथा आगे झूठ न बोलने का दृढ़ निश्चय तो उन्होंने कर लिया किन्तु बीती बात का समाधान कैसे हो ? अतः एक पत्र पर सब सत्य बातें लिखकर कांपते हुए हाथों से पिता जी को दिया, अपना दोष स्वीकार करते हुए दण्ड की याचना भी की। गांधी जी ने इस सम्बन्ध में लिखा है :—

"उन्होंने (पिता जी ने) पत्र पढ़ा। आँखों में मोती की बूंदें टपकीं। पत्र भीग गया। उन्होंने क्षण भर के लिये आंखें मूंद लीं। पत्र फाड़ डाला।......मैं भी रोया। पिता जी की पीड़ा का अनुभव कर सका। मैं चित्रकार होता तो आज भी उस हृदय की पूरी तस्वीर खींच सकता था...... इन मुक्ता बिन्दुओं के प्रेम-बाण ने मुझे वेध दिया। मैं क्षुब्ध हुआ।"

इस प्रकार अपनी छोटी छोटी भूलों को गांधी जी विशेष महत्व देकर, आगे उसे न करने की प्रतिज्ञा कर खरे सोने जैसे सत्य और अहिंसा के व्रती बने। जीवन की त्रुटियाँ उन्हें सदा उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करतीं और उनकी साधुता को बढ़ातीं। उनका दृढ़ प्रतिज्ञ एवं कर्मठ जीवन सदा उनकी सहायता करता।

रामायण का महत्व :—

बाल्यकाल में ही लाधा महाराज के मुख से रामायण की कथा सुनकर तुलसीकृत-रामायण पर गांधी जी की विशेष श्रद्धा बढ़ी और आगे चलकर अगाध हो गई उन्होंने लिखा है :—"मुझे उनकी कथा में खूब रस मिला। यह रामायण-श्रवण, रामायण पर मेरे अत्यान्तिक प्रेम की बुनियाद है। आज मैं तुलसी की रामायण को भक्ति मार्ग का सर्वोत्तम ग्रन्थ मानता हूँ।" मनुस्मृति पढ़ने के पश्चात् उनके मन में भावना उठी :—

"यह संसार नीति पर टिका हुआ है। नीति मात्र का समावेश सत्य में है। सत्य की खोज तो करनी ही है। दिन दिन सत्य की महिमा मेरे मन में बढ़ती गई और अब भी आती जा रही है। नीति विषय में, अपकार का बदला अपकार नहीं, बल्कि उपकार ही हो सकता है, यह बात जीवन सूत्र बन गई।.........इसके अगणित प्रयोग मैंने किये।"

गांधी जी ने कुसंगति के कीचड़ को धोकर शुद्धता ही नहीं प्राप्त की वरन् वे सत्य-परायणता और अहिंसा व्रती बन कर परम आदर्श को प्राप्त हुए। धर्म और सत्यनीति को उन्होंने जीवन में व्यावहारिक रूप दिया। बाल्यकाल की शिक्षायें जीवन पर्यन्त उन्हें उच्चतर ले जाती रहीं।

देवी कस्तूरबा :—

उनका विवाह बाल्यकाल (१३ वर्ष की आयु) में गोकुलदास मकनजी की कन्या कस्तुर बाई के साथ हुआ था। बाद में कस्तुर बाई केवल कस्तुरबा या 'बा' कहलाने लगी। गुजरात में 'बा' का अर्थ मां होता है। 'बा' अपने जीवनकाल में ही सम्पूर्ण भारत की माँ बन गई और २२ फरवरी १९४४ को आगा खां महल में उनकी मृत्यु के पश्चात् गांधी जी ने कहा कि 'वे अब 'जगदम्बा' बन गई हैं।' जब गांधी जी लगभग १६ वर्ष के थे तब उनके एक पुत्र हुआ किन्तु वह दो चार दिन पश्चात् ही संसार से चल बसा। बाद में उनके चार पुत्र हुए—१-हीरालाल २-मणिलाल ३-रामदास ४-देवदास गांधी। विवाह के समय 'बा' निरक्षर, स्वभाव से सीधी साधी, धर्म परायणा और मिहनती थी। बाद में उन्होंने गुजराती और साधारण अंग्रेजी सीखी।

एक ओर गृहस्थ तथा सामाजिक जीवन में उनकी सापेक्ष्य कट्टरता और दूसरी ओर परिवार तथा आसपास के लोगों के प्रति उनके सहज तथा उदार वात्सल्य के कारण गांधी जी को अनेक बार संकट का सामना करना पड़ा, किन्तु जैसे जैसे समय व्यतीत हुआ, वे गांधी जी के जीवन में अधिकाधिक समाती गईं, और आगा खां महल में अन्तिम समय तो 'बा' और बापू, एक प्राण और दो देह जैसे बन गये थे।

विलायत प्रस्थान :—

गांधी जी के विलायत प्रस्थान करने के पूर्व ही उनकी जाति के लोगों ने उनके परिवार को बहिष्कृत कर दिया। गांधी जी यह सब सहते हुए और स्नेहियों तथा भाई को समझाकर ४ सितम्बर १८८८ को इंग्लैंड के लिए रवाना हो गये। इस समय पिता जी की मृत्यु हुए लगभग २ वर्ष हो चुके थे।

बम्बई से प्रस्थान कर गांधी जी २८ अक्टूबर को लन्दन पहुंचे और ९ नवम्बर को बैरिस्टरी की शिक्षा के लिए इनर टेम्पल में भरती हुए। वे भारत से डा० प्राण-जीवन मेहता, दलपतराय शुक्ल, प्रिन्स रणजीत सिंह और

दादा भाई नौरोजी के नाम परिचय की चिट्ठियाँ ले गये थे। इनमें से सब के साथ भविष्य में उनका निकट का सम्बन्ध स्थापित हुआ। परन्तु प्राणजीवन मेहता तो परिवार के सदस्य जैसे घनिष्ट बन गये और जीवन पर्यन्त गांधी जी के कार्यों में सहायता पहुंचाते रहे।

निरामिष भोजन :—

डा० मेहता ने गांधी जी को होटल से हटाकर रिचमंड में अपने एक मित्र के यहाँ रहने का प्रबन्ध कर दिया। वहाँ अन्नाहार का संकट था, किन्तु वे मित्र गांधी जी को वहुत स्नेह करते थे। उन्होंने मांसाहार के पक्ष में बड़ी दलीलें दी। किन्तु गांधी जी दृढ़प्रतिज्ञ रहे। यद्यपि शाकाहारी होने के कारण उन्हें प्राय: आधे पेट भोजन करना पड़ता था। तो भी सब कष्ट सहकर भी उन्होंने अपनी माता को दिये गये वचनों को पूरा किया।

चारित्रिक दृढ़ता :—

१८९० में पोर्टमथ में एक गंभीर प्रसंग उपस्थित हुआ। वे भारतीय मित्र के साथ अन्नाहारी मण्डल के एक सम्मेलन में शामिल हुये थे। वहाँ वे एक स्त्री के घर में ठहराये गये। गांधी जी ने अपनी अनुभूति स्वत: व्यक्त की है—"वहाँ की साधारण प्रथा के अनुसार गृहिणी के साथ तास खेलने का कार्यक्रम शुरू हुआ। खेलते खेलते वीभत्म विनोद होने लगा। वचन से कर्म में उतर पड़ने की तैयारी थी। परन्तु मेरे भले साथी के मन में राम बैठे। वे बोले अरे तुझमें यह कलियुग क्यों? तेरा यह काम नहीं है। भाग यहाँ से। मैं शरमाया। होश में आया। हृदय में उस मित्र का उपकार माना। माता के सामने की हुई प्रतिज्ञा याद आ गई। मैं भागा। अपनी कोठरी में कांपते-कांपते पहुंचा। छाती धड़क रही थी। मेरी वही हालत थी जो कातिल के हाथ से बच जाने वाले शिकार की होती है......मैंने दूसरे ही दिन पोर्टमथ छोड़ दिया।"

धार्मिक अध्ययन :—

इसी काल में गांधी जी ने थियासाफिस्ट मित्रों के प्रोत्साहन से गीता पढ़ी और उसके दूसरे अध्याय के ६२-६३ वें श्लोक (ध्यायतो विषयान......और क्रोधात् भवति......) का उनके मन पर गहरा असर पड़ा। उन्होंने एडविन आर्नाल्ड कृत गीता का अनुवाद भी पढ़ा, जो उन्हें सब अनुवादों से अच्छा लगा। आर्नाल्ड कृत 'लाइट आफ एशिया' उन्होंने बड़े चाव से पढ़ा। ब्लैवट्स्की लाज में जाने पर उन्होंने मैडम ब्लैवट्स्की तथा श्रीमती एनीबेसेंट से भेंट की। ब्लैवट्स्की की पुस्तक 'की टु थियासफी' पढ़ने पर उन्हें धर्म की पुस्तकें पढ़ने की इच्छा हुई। इन्हीं दिनों गांधी जी ने बाइबिल का पारायण भी किया और उनके मन पर 'गिरि प्रवचन' का स्थायी प्रभाव पड़ा। सरल और सात्विक वृत्ति के मानस पटल पर सहज ही सद्विचारों का समाहार कार्य रूप में परिणत होता रहा, जो जीवन पर्यन्त स्वाभाविक रूप से स्थायित्व को प्राप्त हुआ।

वकालत में ईमानदारी :—

गांधी जी १८९० में मैट्रिक की परीक्षा में पास हुए। जून-१०, १८९१ में वे बैरिस्टर बने और दूसरे दिन हाईकोर्ट की बैरिस्टरी की सूची में उनका नाम दर्ज हो गया। वे उसी दिन फ्रेडरिक पिनकाट से मिले, जिन्होंने उपदेश दिया कि वकालत में ईमानदारी और परिश्रम से काम लेने वाला व्यक्ति अधिक सफल होता है। गांधी जी को इस कथन से बड़ा प्रोत्साहन मिला और सत्यप्रतिज्ञ होने के कारण सफलता की आशा भी बँधी।

भारत आगमन :—

जून १२, १८९१ को वे भारत के लिए रवाना हुए। जुलाई ५ को बम्बई पहुँचकर उन्हें माता के देहावसान का दुखदसंमाद प्राप्त हुआ, जिससे उन्हें बड़ी ठेस लगी। नवम्बर-१६ को बम्बई के हाईकोर्ट ने वकील-सूची में उनका नाम दर्ज करने की आज्ञा दी। बम्बई से वे राजकोट आये। वहाँ उन्हें सफलता नहीं मिली। नये बैरिस्टर को कौन मुकदमा देता। किन्तु पुन: बम्बई आने पर उन्हें ममीबाई का मुकदमा मिला।

मुकदमों का आरम्भ :—

यह मुकदमा पहला था। जिरह करने उठे तो गांधी जी के पैर कांपने लगे। वे हारकर बैठ गये। उन्होंने ममीबाई से क्षमा माँगी तथा दूसरा वकील करने की सलाह देकर फीस वापस कर दी। इसके पश्चात् वे अरजी दावे का कार्य करने लगे। वह सब को ठीक लगा। अरजी दावा की भरभार भी हो गई। किन्तु बिला फीस काम कैसे चले यह समस्या उठी। अत: गांधी जी ने स्कूल में अध्यापक की नौकरी की चेष्टा की। ग्रेजुएट न होने के कारण वह भी उन्हें नहीं मिल सकी। बम्बई से पुन: राजकोट आकर गांधी जी ने वकालत का दफ्तर खोला और वहाँ अरजी-दावा लिखने में लगभग ३००) रु० मासिक की आय उन्हें होने लगी।

सहिष्णुता :—

इन्हीं दिनों गांधी जी को एक गम्भीर ठेस लगी। उनके बड़े भाई से पोलिटिकल एजेन्ट नाराज था। वह गांधी जी का परिचित था। सही बात समझाने के लिए गांधी जी उससे मिलने गये, किन्तु वह इतना अधिक नाराज था कि उसने उन्हें अपने चपरासी से निकलवा दिया। गांधी जी ने मानहानि के दावे के लिए उसे पत्र लिख कर धमकाया और माफी मांगने को कहा। उसने पुन:

अशिष्ट व्यवहार किया। उन्हीं दिनों फिरोजशाह मेहता वहाँ आये थे। गांधी जी ने उनसे सलाह मांगी। श्री मेहता ने उत्तर में यही समझाया कि अशिष्ट उत्तर को फाड़ फेंको, अपमान को पी जाओ। तुम्हें मानहानि के दावे में फूटी कौड़ी भी नहीं मिलेगी। उलटे हैरान और बरबाद होओगे। जीवन का अनुभव होना बाकी है। इस ठेस ने गांधी जी की जीवन–दिशा बदल दी। उनमें गांभीर्य और सहिष्णुता की वृद्धि हुई।

दादा अब्दुल्ला का मुकदमा :—

काठियावाड़ की धांधली और खुशामद के वातावरण में गांधी जी का मन ऊब उठा और वे उदासीन हो गये। इसी बीच नेटाल की दादा अब्दुल्ला फर्म के साझीदार सेठ-अब्दुल्ला करीम ने जो पोरबन्दर में रहते थे, संदेशा भेजा कि उन्हें अपने एक बड़े मुकदमें में मदद के लिए दक्षिण-अफ्रीका में एक वकील चाहिए। मुकदमा चालीस हजार पौंड़ का था और पारिश्रमिक १०५ पौंड मिलना था। काम लगभग एक वर्ष का था। गांधी जी ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और अप्रैल १८९३ में वे जहाज के द्वारा नेटाल लिए रवाना हो गये।

पगड़ी उतारने का आदेश :—

वहाँ भी गांधी जी को उनकी भारतीयता पर ठेस लगनी थी। डर्बन पहुंचने पर अदालत में मजिस्ट्रेट ने उन्हें पगड़ी उतार देने को कहा। गांधी जी ने इन्कार कर दिया। वहाँ अखबारों में इसकी विशेष चर्चा हुई और गांधी जी की दृढ़ता की प्रसिद्धि और प्रशंसा हुई। अब्दुल्ला-सेठ का मुकदमा ट्रांसवाल में चल रहा था। तीन चार दिन पश्चात् वहाँ की राजधानी प्रिटोरिया से गांधी जी का बुलावा आया।

तीसरे दरजे में जाओ :—

गांधी जी पहले दरजे में बैठ कर रवाना हुए। मैरिन्सबर्ग स्टेशन पर एक रेलवे आफिसर ने उन्हें तीसरे दरजे में चले जाने का हुक्म दिया और न मानने पर उन्हें गाड़ी से उतरवा दिया। गांधी जी ने रेलवे के जनरल-मैनेजर से तार द्वारा शिकायत की। आश्वासन प्राप्त होने पर वे दूसरे दिन की गाड़ी से चार्लसटाउन पहुँचे। वहाँ से सिकरम से जाना था। यहाँ भी बैठने के सम्बन्ध में एक गोरे नायक ने उनको दूसरे स्थान पर बैठने को कहा। न मानने पर उसने उन्हें खूब मारा। कुछ लोगों के बीच-बचाव से उन्हें मुक्ति मिली। सहिष्णु गांधी जी ने उसपर कोई मुकदमा नहीं चलाया। वे जानते थे कि जबतक रंग-भेद की मूल वृत्ति का नाश न होगा, कोई सुधार सम्भव नहीं है।

कुली बैरिस्टर :—

गांधी जी को इस प्रकार रंग-भेद के कारण कितनी ही-बार कष्ट और अपमान सहन करना पड़ा। जोहान्सबर्ग में होटल वाले ने उन्हें ठहरने नहीं दिया। बड़ी कठिनाई से पहले दरजे का टिकट लेकर वे प्रिटोरिया के लिए रवाना हुये। वहाँ भी गार्ड ने उन्हें तीसरे दरजे में जाने को कहा। किन्तु कुछ गोरे यात्रियों के बीच में पड़ जाने के कारण गार्ड को वापस जाना पड़ा। ग्यारह दिनों के अन्दर ही "कुली बैरिस्टर" को पता चल गया कि दक्षिण अफ्रीका में सम्मान से रहने के लिए जोरदार लड़ाई लड़नी पड़ेगी।

सहिष्णुता की पराकाष्ठा :—

प्रिटोरिया पहुँचते ही, अध्यक्ष क्रूगर के घर के सामने उन्हें पैदल पटरी से ठोकर मार कर हटा दिया गया। इस घटना ने आग में घी का काम किया। इन सब घटनाओं से आहत होने पर भी उनमें बदले की भावना जाग्रत नहीं हुई, बल्कि सारी जाति को इस हीन अवस्था से मुक्त करने की प्रेरणा बलवती हुई। इसी संकल्प को लेकर वे २१ वर्ष पर्यन्त दक्षिण अफ्रीका में रहकर और अत्याचार के विरुद्ध अहिंसात्मक युद्ध करते रहने के लिए कटिबद्ध हुये। आगे चलकर अहिंसात्मक सत्याग्रह का यही अनुभव भारत के स्वतन्त्रता युद्ध में उनके काम आया और अब विश्व के लिए आश्चर्यजनक तथा अनुकरणीय माध्यम बन गया।

पञ्च फैसले का आरम्भ :—

गांधी जी को धन का लोभ कभी नहीं रहा। उन्हें यह भाषित हुआ कि दादा अब्दुल्ला का मुकदमा रिश्तेदार के साथ होने के कारण अन्त में विनाशकारी सिद्ध होगा। अत: उन्होंने पञ्च फैसला कराकर अपनी फीस का नुकसान किया। इसके बाद तो दूसरे मुकदमेबाज भी पञ्च फैसले के लिए गांधी जी के पास आने लगे उनकी भीड़ सी लग गई। इससे उनकी ख्याति तो बढ़ी ही, साथ ही प्रमुख भारतीयों के सम्पर्क में आने का उन्हें अच्छा अवसर मिला।

सत्यनिष्ठा :—

गांधी जी की समस्त जीवन-धारा का सम्बल वह सत्यनिष्ठा थी जो उनके बाल्यकाल में प्रकट होकर निरन्तर दृढ़ होती गई—वह धर्म-निष्ठा थी, जिसका बीज बालपन में पड़ा और जो निरन्तर अंकुरित तथा पल्लवित होता गया, वह रामनाम की अमोघ शक्ति थी, जो लघु वय में कुटुम्ब की पुरानी नौकरानी और उनकी दासी रम्भा बाई से मिली थी, जो जीवन पर्यन्त साथ देती रहीं।

धर्म सम्बन्धी अध्ययन :—

उन्होंने अन्नाहार के जो प्रयोग और प्रचार के जो प्रयत्न किये तथा व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन को शुद्ध करने के लिए समय समय पर जिन उपवासों का आश्रय लिया, उन सबके मूल में यही निष्ठा थी। उनकी अहिंसा भी इसी निष्ठा से विकसित हुई थी। इस निष्ठा के कारण धार्मिक और आध्यात्मिक वृत्ति के स्त्री पुरुषों से उनका सम्बन्ध अधिक बढ़ा। गांधी जी ने ईसाई धर्म की, मुस्लिम धर्म की तथा उपनिषद् आदि हिन्दू धर्म की पुस्तकों का पारायण किया। इन सबका उनके मन पर गम्भीर सहिष्णुता-मूलक प्रभाव पड़ा, और वह निरन्तर बढ़ता ही गया।

भारतीयता का दण्ड :—

१८९४ में नैटाल में, "नैटालमर्क्युरी" नामक पत्र में प्रकाशित संवाद को पढ़कर उन्हें नई चिन्ता हुई। इस संवाद के अनुसार भारतीयों को कौंसिल के सदस्य चुनने का जो अधिकार था उसे छीन लेने को असेम्बली में बिल पेश था और उस पर बहस चल रही थी। गांधी जी भारत वापस आने को थे किन्तु ऐसी अवस्था में वहीं रहकर उस बिल के विरुद्ध आन्दोलन करने का निश्चय किया।

समस्याओं के उपाय :—

दक्षिण अफ्रीका के वासी भारतीयों को गोरों के तमाम अत्याचार से मुक्त कराना गांधी जी का व्रत हो गया। उन्होंने आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सभी प्रकार की समस्याओं पर ध्यान दिया। इस कार्य के लिए उन्होंने २२ अगस्त १८९४ में नैटाल इन्डियन कांग्रेस की स्थापना की। कांग्रेस का कार्य चलाने के लिए गांधी जी ने, कलोनियल बार्न–इण्डियन एजूकेशनल एशोशियेशन की स्थापना की। इसमें एक पुस्तकालय भी स्थापित किया।

इस संस्था के माध्यम से भारतीयों की दुर्दशा का विवेचन अकाट्य प्रमाणों के साथ करके, अंग्रेजों तथा अन्य गोरों से अपील की गई कि भारतीयों के प्रति सहानुभूति पूर्वक न्याय कराने में मदद करें। इसका अच्छा प्रभाव पड़ा।

गिरमिटिया मजदूर—

गिरमिटिया मजदूरों की दुर्दशा बहुत बढ़ी हुई थी। भारत से लोभ देकर पाँच वर्ष के एग्रीमेन्ट पर ले जाये गये मजदूरों को गिरमिटिया मजदूर कहा जाता था। उन्हें लोभ दिया गया था कि पाँच वर्ष के पश्चात् मालिक के खरचे पर उन्हें भारत वापस कर दिया जायगा, अथवा यदि वे चाहेंगे तो वहीं उन्हें बिना मूल्य जमीन देकर खेती करने अथवा व्यापार की सुविधा दी जावेगी। नैटाल के गोरों ने इसका विरोध किया तथा वे भारतीयों को वहाँ रह कर खेती या व्यापार करने नहीं देना चाहते थे। अतः भयंकर आन्दोलन छिड़ा। गांधी जी के नेतृत्व में दस हजार से अधिक भारतीयों ने जेल की सजा काटी और भीषण यातनायें सही। गोलियाँ खाईं तब कहीं कठिन तपश्चर्या एवं दृढ़ नेतृत्व के कारण उन्हें पुनः सुविधा प्राप्त हुई।

भारत आगमन :—

सन् १८९६ में गाँधी जी अपने परिवार से मिलने तथा भारतीयों की दक्षिण अफ्रीका में दुर्दशा का संवाद सुनाने भारत आये। यहाँ आकर बम्बई मद्रास और कलकत्ता में उन्होंने अनेक भाषण दिये तथा गोखले तिलक, फिरोजशाह मेहता, महादेव गोविन्द रानडे, बदरुद्दीन तैयब जी, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी आदि नेताओं और प्रमुख पत्र सम्पादकों से भेंट की और प्रवासी भारतीयों की दुर्दशा से उन्हें अवगत कराया।

गाँधी जी पर हमला :—

इन्हीं दिनों, नवम्बर १२ को गाँधी जी को दादा अब्दुल्ला का एक तार मिला कि नैटाल की पार्लियामेंट ने सिफारिश की है कि भारतीयों को जबरन पृथक बस्तियों में खदेड़ दिया जावे। अतः तुरन्त आइये। संकट में गांधी जी का ही का स्मरण आता था। उन सा मनस्वी दृढ़प्रतिज्ञ, न्यायपोषक तथा संकटमोचन और कौन था। अतः गांधी जी ३० नवम्बर को कस्तूरबा और दो पुत्रों के साथ नैटाल को रवाना हुए। वहाँ के गोरों ने योरोपियन प्रोटेक्शन एसोसियेशन, बनाकर योजना तैयार की कि गांधी जी को डर्बन में न उतरने दिया जाय। १३ फरवरी को जब वे जहाज से उतरे यूरोपियनों की भीड़ ने उन पर हमला कर दिया। यदि पुलिस कप्तान अलेकजेंडर उनकी रक्षा न करता तो गाँधी जी की हत्या कर दी जाती। हितैषियों के जिद करने पर भी गांधी जी ने अपनी सहिष्णुता वृत्ति से आक्रमणकारियों पर मुकदमा चलाने से इन्कार कर दिया।

बोर युद्ध :—

सन् १८९९ में बोर युद्ध छिड़ गया। उस समय गांधी जी इस मत के थे कि भारतीयों को राजभक्त प्रजा के नाते ब्रिटिश सरकार की मदद करना चाहिए। एक एम्बुलेंस कोर की उन्होंने स्थापना की, जिसने युद्ध में विशेष कार्य किया। अक्टूबर, १८, १९०१ को गांधी जी भारत के लिए रवाना हुए और दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों को यह आश्वासन दिया कि आवश्यकता पड़ने पर वे एक वर्ष में पुनः वापस आ जावेंगे।

भारतीयों की रजिस्ट्री :—

भारत आकर वे कलकत्ता काँग्रेस में शामिल हुए। गोखले के साथ भी एक मास तक रहे। उसके पश्चात् फरवरी १९०२ को पुनः राजकोट में उन्होंने वकालत प्रारम्भ की। कुछ समय पश्चात् (२० नवम्बर को) नैटाल से बुलावा आने पर उन्हें नेटाल रवाना होना पड़ा। प्रवासी प्रतिबंध के कानून लागू कर प्रवासी भारतीयों की रजिस्ट्री की जा रही थी तथा इस रजिस्ट्रेशन के लिये उन्हें ३ पौंड शुल्क भी देना था। समस्यायें बढ़ती गयीं। गाँधी जी ने प्रभावोत्पादक आन्दोलन के लिये 'इण्डियन ओपीनियन' नामक पत्र का प्रकाशन (जून ४, १९०३) में आरम्भ किया। इसका सारा व्यय गांधी जी को ही वहन करना पड़ता था। १६०६ तक गांधी जी ने फीनिक्स, जोहान्सवर्ग, ट्रान्सवाल में रहकर सेवा मार्ग को प्रशस्त किया तथा भारतीयों की शक्ति को बढ़ाया।

सत्याग्रह का प्रारम्भ :—

गांधी जी की आध्यात्मिक शक्ति निरन्तर बढ़ती गई। उन्होंने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। उनका वरण तो सत्य और अहिंसा के साथ तो पहिले ही हुआ था किन्तु इस दिशा में उनकी लगन निरन्तर बढ़ती जा रही थी। सत्याग्रह उनका साधन था। ट्रान्सवाल सरकार ने पुनः एक नया अध्यादेश 'ट्रान्सवाल एशियाटिक ला एमेंडमेंट' जारी कर दिया। जातीय भेदभाव रक्षा के हेतु यह आर्डिनेन्स जारी किया गया था। गांधी जी ने डटकर इसका विरोध किया। ११ सितम्बर १९०६ को आम सभा में इस कानून की अवज्ञा करके जेल जाने की प्रतिज्ञा की जा चुकी थी। सत्याग्रह का बिगुल बज गया, गिरफ्तारियां और सजायें शुरू हो गयीं। १९०७ में इस संघर्ष को सत्याग्रह का नाम दिया गया। गांधी जी को ४८ घन्टे के अन्दर ट्रान्सवाल छोड़ देने का आदेश हुआ। गांधी जी ने इसकी अवज्ञा की। इस पर उन्हें दो वर्ष के कारावास की सजा दी गई। सत्याग्रह और जोर पकड़ गया। अतः एक समझौता ३० जनवरी १६०८ को किया गया। समझौते की शर्तों के अनुसार प्रवासी भारतीयों को तीन मास के भीतर स्वतः रजिस्ट्री करा लेना निश्चित हुआ था। एक पठान ने शायद यह समझ कर कि गांधी जी ने इस समझौते को करके कौम के साथ विश्वासघात किया है, गांधी जी पर हमला कर दिया। हमले से गांधी जी बेहोश हो गये और आक्रमणकारी सम्भवतः उन्हें मरा समझ कर चलता बना। पास ही के एक पादरी ने उन्हें अपने घर में ले जाकर सेवा की और उनकी प्राण-रक्षा की। बहुत कहने पर भी गांधी जी उस आक्रमणकारी पर मुकदमा चलाने को तैयार न हुये।

पुनः सत्याग्रह में जेल :—

गांधी जी ने रजिस्ट्री की शर्त पूरी करा दी किन्तु ट्रान्सवाल के प्रधान मन्त्री ने गोरों की बराबरी का दर्जा स्वीकार नहीं किया। अगस्त १६, १६०८ को फिर सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। २७०० व्यक्ति जेल गये। गाँधी जी को भी जेल भेज दिया गया। सत्याग्रह जारी रहा। १९१० में अफ्रीका के सब देशों को मिला कर उनका स्वशासित संघ बना दिया गया। संघ सरकार ने यह स्वीकार कर लिया कि यदि सत्याग्रह उठा लिया जाय तो १९१२ में वह सन्तोषजनक कानून बना देगी।

सख्ती, सत्याग्रह और उपवास :—

१९१३ में सरकार ने फिर सख्ती की, संघ के सर्वोच्च न्यायालय ने एक फैसला दिया जिसमें भारतीयों के सब विवाह अवैध ठहराये गये। गांधी जी ने इसका उग्र विरोध किया। उन्हें नौ मास की सजा दी गई। सत्याग्रह आरम्भ हुआ। इस बार के सत्याग्रह में स्त्रियों ने भी भाग लिया। जिसमें प्रमुख कस्तुरबा थीं। जेल से छटने के बाद गांधी जी ने यूरोपीय पोशाक का त्याग कर दिया। वे दिन में एक बार ही फलाहार करते थे। इस प्रकार एकाशन प्रारम्भ करने के बाद पूर्ण उपवास की नौबत आई। सत्याग्रह समाप्त होने और सत्याग्रही कैदियों के छूटने पर थोड़े ही लड़के लड़कियां बच गये थे जो टालसटाय फार्म में शिक्षा दीक्षा के ख्याल से रक्खे गये थे। वहाँ के दो व्यक्तियों के भयंकर पतन के सम्वाद से दुखी होकर गांधी जी ने ७ दिन का उपवास और ४ मास का एकाशन व्रत प्रायश्चित-स्वरूप किया। इसके कुछ दिनों बाद ही पुनः १४ दिनों का उपवास किया। १९१४ में जर्मन युद्ध छिड़ गया और १९१५ में गांधी जी भारत वापस आ गये।

साबरमती आश्रम की स्थापना :—

यहां आने पर गोखले ने उनसे प्रतिज्ञा ली कि एक वर्ष तक यहां रहकर वे केवल स्थिति का अध्ययन करेंगे। भाषण आदि न देंगे। शान्ति निकेतन जाकर रवीन्द्रनाथ ठाकुर से जाकर गांधी जी मिले। वहीं काका कालेलकर से भेंट हुई। गोखले का देहावसान फरवरी १९१५ में हुआ। गांधी जी पूना पहुंचे। पूना से लौट कर मई १५, १९१५ में अहमदाबाद में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की, जो आगे चलकर साबरमती आश्रम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वहां उन्होंने १५ वर्ष से अधिक रहकर आश्रम जीवन की पुनः प्रतिष्ठा की। आश्रम के दैनिक आचार के नियम थे :— अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह, शरीर श्रम, अस्वाद, सर्वधर्म-समानतत्व, स्वदेशी का व्यवहार आदि। इन सब नियमों के साथ नम्रता और

और व्रत-निश्चय भी जुड़े थे। गोखले से की गई प्रतिज्ञा के अनुसार साल भर पश्चात् १९१६ में हिन्दू विश्व-विद्यालय में राजा महाराजाओं और गण्यमान्य अतिथियों की सभा में गांधी जी ने भाषण दिया जिसमें महाराजा और धनिकों से शान शौकत छोड़कर न्याययुक्त ट्रस्टी बनने की बात कही। गांधी जी ने स्पष्ट कहा "मेरा आदर्श है समान वितरण, परन्तु यह मुझे सम्भव नहीं जान पड़ता, इसलिये मैं इस सिलसिले में न्यायपूर्ण वितरण की दिशा में प्रयत्न करता हूं। सन् १९१७ में गांधी जी ने गिरमिटिया प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई अन्त में यह प्रथा मिट गई।

चरखे का महत्व :—

देश में बढ़ती बेकारी और भुखमरी को देख कर जन-साधारण के लिये उचित उद्योग की व्यवस्था करने तथा वृहत् धनराशि विदेशों में जाने से रोकने के लिये इस समय उन्हें चरखे का महत्व भी सूझा। अच्छे चरखे की खोज शुरू हुई। इसी बीच अप्रैल सन् १९१७ में चम्पारन के नील के मजदूरों पर होने वाले अत्याचारों पर गांधी जी की दृष्टि गई। अधिकारियों ने उन्हें वहां गिरफ्तार कर लिया क्योंकि गांधी जी चम्पारन से बाहर जाने को तैयार नहीं हुये। परिस्थिति की गम्भीरता को समझ कर सरकार ने गांधी जी को छोड़ दिया। मजदूरों की बहुत सी शिकायतें भी दूर हुईं। चम्पारन के कार्य में उनके मुख्य साथी ब्रजकिशोर बाबू, राजेन्द्र बाबू, आचार्य कृपलानी और मौलाना मजरुलहक थे। अहमदा-के मिल-मजदूरों की दशा बड़ी विपन्न थी। मालिकों की सख्ती बढ़ी हुई थी अतः १९१८ में अहमदाबाद के कपड़ा मिल मजदूरों की हड़ताल का संचालन उन्हें करना पड़ा। इसी सिलसिले में सार्वजनिक कार्यों में शुद्ध आचरण के लिये पहला गांधी जी ने उपवास किया। हड़ताल भी सफल हुई।

खेड़ा की जीत :—

इस समय खेड़ा में फसल खराब होने से किसानों पर संकट आ पड़ा। सरकार जबरन लगान वसूल कर रही थी। किसानों में लगान देने की बिल्कुल सामर्थ्य न थी। गांधी जी ने सत्याग्रह किया और किसानों की जीत हुई।

हिमालय जैसी भूल :—

गांधी जी को विश्वास था कि युद्ध संकट के समय सहायता करने से ब्रिटिश सरकार भारत के प्रति न्याय करेगी। अतः २७ अप्रैल १९१८ को वायसराय की युद्ध परिषद में शामिल होकर गांधी जी ने संक्षिप्त भाषण दिया और सहायता करने की बात कही। लड़ाई समाप्त होने पर पुरष्कार स्वरूप रौलट बिल पेश करके सरकार ने जनता की राष्ट्रीय आवाज को कुचलने का आयोजन किया। गांधी जी को इससे धक्का लगा। इस विश्वासघात को वह सह न सके। २८ फरवरी १९१९ को उन्होंने इसके विरुद्ध सत्याग्रह किया। अंग्रेजी सरकार ने अपने अमोघ अस्त्र को चलाकर गांधी जी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इसी बीच अहमदाबाद, खेड़ा और बीरमगांव में लोगों में उत्तेजना फैली। वे शान्त न रह सके। संयम की सीमा टूटी और हिंसा की वारदातें हुईं। गांधी जी को इस पर विशेष दुःख हुआ। उन्होंने नाड़ियाबाद की सभा में भाषण देते हुये कहा कि बिना उचित शिक्षा के सत्याग्रह करने की बात हिमालय जैसी भूल है। अतः प्रायश्चित्त स्वरूप में तीन दिन का उपवास उन्होंने किया और जनता के आक्रोश के विष को स्वतः पान किया। (१४ अप्रैल १९१९)

जलियांवाला हत्याकांड :—

पंजाब के अमृतसर के मार्सल ला लगा दिया गया और जलियांवाला बाग में जनरल डायर ने मशीनगनों से गोलियां चलाकर निहत्थे और शान्ति-सभा करने वाले चार सौ निरीह व्यक्तियों की हत्या कर डाली। (१३ अप्रैल १९१९) इस हत्याकाण्ड ने सारे भारत को हिला दिया और ब्रिटिश राज्य की नींव भी हिल गई। गांधी जी को इस काण्ड से ब्रिटिश सरकार पर बिलकुल आस्था जाती रही।

पत्रों का प्रकाशन :—

भारत में राजनैतिक आन्दोलन का संचालन करने के लिये गांधी जी ने सहायता के रूप में गुजराती का मासिक (नवजीवन) प्रकाशित किया। यही बाद में साप्ताहिक हुआ। कुछ दिनों पश्चात् इन्होंने 'यंग इण्डिया, अंग्रेजी में प्रकाशित किया। ये दोनों पत्र अहमदाबाद से ग्यारह वर्ष तक प्रकाशित होते रहे तथा जनता को उनके विचारों एवं कार्यप्रणाली से परिचित कराते रहे।

१८५७ की सी स्थिति :—

रौलट एक्ट और पंजाब की घटनाओं पर (दिसम्बर १९१९) अमृतसर कांग्रेस में विचार हुआ। दमन का जोर बढ़ता गया। ब्रिटिश सरकार की कठोरता में भी वृद्धि हुई। गांधी जी पर ही सबकी दृष्टि थी। वे ही एकमात्र त्राता जान पड़ते थे। न्यायप्रिय सत्यनिष्ठ गांधी जी को शासन की बर्बरता सहन न हुई। अथच लगभग १०मास पश्चात् सितम्बर १९२० में गांधी जी ने असहयोगी आन्दोलन आरम्भ किया। नवम्बर १९२० में बहिष्कार के कार्यक्रम को उग्ररूप देने के लिये गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की। काका कालेलकर को उपकुलपति नियुक्त किया। दिसम्बर १९२० में नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में

गाँधी जी का असहयोग एवं बहिष्कार आन्दोलन का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। आन्दोलन जोरों से छिड़ा। सत्ताधारियों से सत्ता एवं उपाधिधारियों से खिताब, वकीलों से अदालत, विद्यार्थियों से विद्यालय छोड़ने की बात चल पड़ी। विदेशी कपड़ों की होली, शराब की दुकानों पर धरना और देशभक्तिपूर्ण भाषणों से सर्वत्र नया जोश फैल गया। अध्ययन के हेतु राष्ट्रीय विद्यालयों, विद्यापीठों की स्थापना हुई। हिन्दू-मुसलमानों में भी मेल दिखाई दिया। सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम की सी स्थिति सामने आई। स्त्रियों ने भी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और परदे में रहने वाली स्त्रियां बाहर निकल आईं। इसी बीच एक वर्ष के अन्दर गाँधी जी ने रचनात्मक कार्यक्रम हेतु तिलक स्वराज्य फण्ड में एक करोड़ रुपया एकत्र किया। कांग्रेस के एक करोड़ सदस्य बनाकर २० लाख चरखे चलवाने का कार्य भी प्रारम्भ हुआ। (अप्रैल १९२१)

चौरी चौरा में हिंसा :—

फरवरी सन् १९२२ में वायसराय को गांधी जी ने एक नोटिस दिया जिसमें बारडोली में सत्याग्रह करने की बात लिखी। नोटिस का प्रभाव न होने पर गांधी जी ने सत्याग्रह आरम्भ कर दिया। किन्तु ५ फरवरी को चौरी चौरा में हिंसात्मक स्थिति हो गई। भीड़ ने २१ पुलिस सिपाहियों और सब-इन्सपेक्टर को जिन्दा जला दिया। गांधी जी हिंसा के विपरीत थे। उन्हें बड़ी ठेस लगी और इस पर गांधी जी ने पांच दिनों का उपवास किया तथा सत्याग्रह आन्दोलन बन्द कर दिया। भयभीत सरकार ने फिर भी मार्च १० को उन्हें राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया और अठारह मार्च को छह वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया। इस मुकदमे में गांधी जी ने अदालत के सामने जो वक्तव्य दिया और न्यायाधीश ने निर्णय में जो कहा वह इतिहास की अमूल्य निधि बन गई।

पेट में फोड़ा :—

जेल में उन्हें एपेन्डिसाइटिस होगया और ५ फरवरी १९२४ को उन्हें छोड़ दिया गया। इन दिनों साम्प्रदायिक दंगों की भरमार हुई। यह भी 'विभक्त करके शासन करो' नीति का परिणाम था। गांधी जी ने २१ दिन का उपवास किया। ऐसे विपिन्न समय में देश को कर्मठ नेता की आवश्यकता थी। कांग्रेस ने दिसम्बर १९२४ में बेलगांव कांग्रेस अधिवेशन के लिये अध्यक्ष चुना। चरखे की स्थति मजबूत करने तथा गृह-उद्योग की वृद्धि कर गरीबी एवं भुखमरी दूर करने हेतु, सन् १९२५ में उन्होंने चरखा संघ की स्थापना की और अपनी आत्म कथा भी लिखना शुरू की। इस बीच गांधी जी रचनात्मक कार्यक्रम में लगे रहे।

दिसम्बर ३१, १९२८ को लाहौर कांग्रेस में गांधी जी के परामर्श के अनुसार कांग्रेस का उद्देश्य पूर्ण स्वराज्य घोषित कर दिया गया। २६ जनवरी को देश भर में सभायें कर स्वाधीनता प्रस्ताव दोहराया गया। तब से अब तक २६ जनवरी को स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाता है। सन् १९५० की २६ जनवरी को गणराज्य की स्थापना करके इस तिथि का नाम गणराज्य दिवस रक्खा गया।

प्रसिद्ध डांडी यात्रा :—

आन्दोलनों का कोई प्रभाव न होते देख कांग्रेस की महा—समिति ने गांधी जी को सत्याग्रह आन्दोलन का सर्वाधिकारी बना दिया। और उनसे सामूहिक संघर्ष के नेतृत्व की याचना की। दो मार्च को गांधी जी ने वायसराय को पुनः पत्र लिखा कि उनकी मांगें स्वीकार न होने पर वे सत्याग्रह प्रारम्भ कर देंगे। नमक कानून को तोड़ने के लिये बारह मार्च को गांधी जी ने प्रसिद्ध डांडी यात्रा प्रारम्भ कर दी। डांडीयात्रा में जो सत्याग्रही गांधी जी के साथ गये थे उन सभी ने यह व्रत लिया था कि स्वराज्य होने तक वे अपने घरों में नहीं जावेंगे और निरन्तर स्वराज्य के लिये प्रयत्नशील रहेंगे। इतिहास में यह यात्रा आन्दोलनों की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। ५ मई १९३० को गांधी जी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। देश में जोश फैल गया। जगह जगह नमक कानून तोड़ा गया। लगभग एक लाख देशवासी जेलों में भरे गये। समझौते की बात चली। और २६ जनवरी सन् १९३१ को गांधी जी बिना शर्त जेल से रिहा कर दिये गये। वायसराय लार्ड इरविन से लम्बी वार्तायें हुईं और एक समझौता होने के कारण सब सत्याग्रही बन्दी रिहा कर दिये गये। इसी बीच हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य-स्थापन कार्य करते हुये साम्प्रदायिक दंगे में कानपुर में गणेशशङ्कर विद्यार्थी का कत्ल हुआ। गांधी जी को इससे बहुत धक्का लगा।

२९ अगस्त १९३१ को गांधी जी कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि होकर गोलमेज परिषद में भाग लेने लन्दन गये। वहां से वापस होने के सात दिन बाद ही उन्हें पुनः गिरफ्तार कर बिना मुकदमा चलाये जेल में कैद कर दिया गया। सरकार के द्वारा पृथकी करण द्वारा शासन व्यवस्था को दृढ़ करने हेतु साम्प्रदायिक आधार पर शासन व्यवस्था का प्रबन्ध हुआ। इस निर्णय में हरिजनों के लिये की गई प्रथक चुनाव योजना घोषित की गई थी। हिन्दुओं का एक वृहद् अंग हरिजन (अछूत) हिन्दुओं से अलग किये जा रहे थे इसे बदलवाने के लिये गांधी जी ने २० सितम्बर सन्१९३२ को आमरण अनशन प्रारम्भ किया। सरकार ने उनकी संयुक्त मताधिकार मांग स्वीकार कर ली।

२६ सितम्बर को उन्होंने अपना उपवास तोड़ा। उसके पश्चात् गांधी जी ने अंग्रेजी में (हरिजन), गुजराती में (हरिजन वन्धु) और हिन्दी में (हरिजन सेवक) पत्रों का प्रकाशन किया। (फरवरी ग्यारह १९३३)

आन्दोलन को अधिक सक्रिय बनाने तथा दमनचक्र के विरुद्ध अधिक कर्मठता लाने के लिये जुलाई २६, १९३३ को गांधी जी ने साबरमती आश्रम सदा के लिये छोड़ दिया। गांधी जी ने आश्रम-जीवन से मुक्ति पाकर सत्याग्रह करने की सूचना सरकार को दी। सरकार को दमन-चक्र पर विश्वास था। अतः ३१ जुलाई को उन्होंने गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया। किन्तु उससे देश में भयंकर असन्तोष की वृद्धि हुई। सरकार निर्णय न कर सकी कि गांधी जी के जेल-आवास से किस प्रकार शांति रहेगी। आशंका यह थी कि असन्तुष्ट और क्रुद्ध जनता शांतिमय आन्दोलन के स्थान पर अन्य मार्ग का अनुसरण न करने लग जाय। स्थिति भी भयंकर हो चली थी। अतः सरकार ने उन्हें ४ अगस्त को रिहा कर दिया, किन्तु कुछ समय पश्चात् अनिश्चय की अवस्था में पुनः गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के समय उनका निश्चय हरिजन उद्धार के कार्य का था। जेल में कैद रहने के कारण हरिजन-सेवा में असुविधायें उत्पन्न हुईं। विरोध-स्वरूप गांधी जी ने उपवास आरम्भ कर दिया। फलतः अत्यन्त विवशता में सरकार ने उन्हें बिला शर्त मुक्त किया। गांधी जी ने भी अपने निश्चयानुसार देशभर में, हरिजन सेवा के लिये प्रचार तथा धनसंग्रह हेतु, यात्रायें की और हिन्दू समाज के वृहत् परित्यक्त एवं पीड़ित अंग हरिजनों के लिये विकास का मार्ग प्रशस्त किया। साथ ही उनकी ओर सबकी सहानुभूति आकर्षित की।

ग्रामोद्योग और बुनियादी तालीम :—

गांधी जी की क्रियाशीलता सर्वांगीण रही है। वे सब ओर अपनी प्रखर दृष्टि रखते थे। लघु-उद्योगों एवं तत्सम्वन्धी शिक्षा के बिना बेकारी घटने की बात निर्मूल जानकर उन्होंने ग्रामोद्योग एवं बुनियादी तालीम की ओर ध्यान लगाया। गरीब, बेकार जनता को काम मिला तथा देश का धन विदेशों में जाने से बचा। सन् १९३६ के अप्रैल तक पूर्णरूप से सक्रिय होकर इस कार्य में तल्लीन रहे।

इसी बीच ३० अप्रैल १९३६ को वर्धा के निकट सेवाग्राम की स्थापना की और वहीं रहने लगे।

आमरण अनशन :—

मार्च ३, १९४९ में राजकोट में दमनचक्र ने विकट रूप धारण कर लिया। शासन सुधार के लिये गांधी जी ने आमरण अनशन आरम्भ किया। वायसराय के हस्तक्षेप से देश के शासन सुधार के सम्बन्ध में एक समझौता हुआ। गांधी जी ने ७ मार्च को उपवास तोड़ा।

प्रान्तों में कांग्रेसी सरकारें :—

भारत के ग्यारह में से आठ प्रान्तों में कांग्रेसी सरकारें स्थापित हुईं। (१९३७) प्रांतीय स्वशासन की रूपरेखा का अभिनय हुआ। १९३९ में जर्मन युद्ध छिड़ गया। ब्रिटिश सरकार ने भारत से युद्ध में सहायता मांगी। भारत सरकार ने कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलों से पूछे बिना भारत को युद्ध प्रयत्नों में झोंक दिया। फलतः १९३९ के अन्त में कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल ने त्यागपत्र दे दिया। १९४० में विरोधस्वरूप व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया गया। पहले सत्याग्रही बिनोबा, दूसरे जवाहरलाल नेहरू सामने आये। देशभर में व्यक्तिगत सत्याग्रह का वातावरण फैल गया। १९४२ में सर स्टेफर्ड क्रिप्स की अध्यक्षता में कैबिनेट मिशन भारत आया। २७ मार्च १९४२ को गांधी जी से दिल्ली में सर स्टेफर्ड मिले और समझौते की वार्ता असफल रही। गांधी जी ने "अंग्रेज भारत छोड़ दें, वह अपनी रक्षा आप कर लेगा" का नारा बुलन्द किया। नौ अगस्त को गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया। आगा खां महल में उनके साथ महादेव देसाई और कस्तूरबा भी रख दी गईं। पन्द्रह अगस्त को वहीं महादेव देसाई दिवंगत हुये। आगा खां महल में इक्कीस दिनों का उपवास गांधी जी ने किया। जो मार्च तीन १९४३ में समाप्त हुआ। बाईस फरवरी १९४४ में वहीं कस्तूरबा का भी देहान्त होगया। मई ६, १९४४ को उन्हें बिना शर्त छोड़ दिया गया। कस्तूरबा निधि के नाम से एक करोड़ दस लाख की थैली गांधी जी को अर्पित की गई। (अक्टूबर २, १९४४)

१९४५ के दिसम्बर तथा १९४६ जनवरी मास में गांधी जी ने आसाम और बंगाल का दौरा अस्पृश्यता निवारण और हिन्दुस्तानी प्रचार के लिये किया। युद्ध के पश्चात् १९४५ में ब्रिटेन में मजदूर दल सत्तारूढ़ हुआ। स्टेफर्ड क्रिप्स का मिशन फिर भारत आया। शासन हस्तान्तरण की वार्ता शुरू हुई। मुस्लिम लीग ने अड़ंगे लगाये और सीधी कार्यवाही की धमकी दी। पूर्वी बंगाल में सांप्रदायिक दंगे का रूप भीषण होगया। गांधी जी नोआखाली के लिये रवाना हुये। इधर बिहार में हिंसा उभड़ पड़ी। वहां कुछ शांति होने पर गांधी जी नोआखाली में सात नवम्बर १९४६ से दो मार्च १९४७ तक करुणा का सन्देश लेकर गांव गांव घूमते रहे हिन्दू मुसलमानों को भाई-भाई बनकर रहने को अपील करते रहे।

ब्रिटिश सरकार सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलनों से बहुत ऊब चुकी थी। सारे भारतवर्ष पर गांधी जी का प्रभाव फैला था। विवशता में ब्रिटिश सरकार ने लार्ड वैवेल को वापिस बुलाकर लार्ड माउन्डट बैटन को वायसराय नियुक्त किया उन्होंने देश के विभाजन की योजना को सफल बनाया और कांग्रेस को पाकिस्तान की मांग स्वीकार करने को राजी किया। इस प्रकार मुस्लिम लीग को सन्तुष्ट किया गया। लार्ड माउन्टेबेटन ने मई १९४७ में गांधी जी को सलाह मशिवरे के लिये और उन्हें समझाने के लिये दिल्ली बुलाया। गांधी जी ने देश का विभाजन करके पाकिस्तान की स्थापना को नामन्जूर कर दिया। किन्तु अपने साथियों के बीच यह विचार रखने वाले वे अकेले ही थे। इसलिये उन्होंने अपना हाथ खींच लिया और कांग्रेस को अपने विचारों के अनुसार काम करने को स्वतन्त्र छोड़ दिया।

अगस्त १५, १९४७ को भारत दो भागों में बंट गया। स्वतन्त्र राज्य के रूप में पाकिस्तान का जन्म हुआ। सारे देश में मारकाट मच गई। भाई भाई के इस खून से गांधी जी का रहा सहा सन्तोष और शान्ति भी खो गई और उन्होंने स्वतन्त्रता दिवस के देशव्यापी उत्सव में शामिल होने से इन्कार कर दिया। उन्होंने पीड़ितों के आंसू पोछने और घाव भरने के एकाकी मिशन को और जोरों से अपनाया। सितम्बर के शुरू में कलकत्ते की स्थिति से व्याकुल होकर उन्होंने एक बार फिर उपवास के द्वारा भगवान से अनुग्रह की प्रार्थना की। कलकत्ते में शान्ति स्थापित हुई और गांधी जी ने ७३ घण्टे बाद ४ सितम्बर को अपना उपवास तोड़ा। उसी महीने में वे दिल्ली लौट आये। पश्चिम पाकिस्तान में हिंसा ने घोर रूप धारण कर रखा था। उसकी प्रतिक्रिया दिल्ली में हुये बगैर न रही। इस दावानल को रोकना आसान नहीं था। गांधी जी ने अपनी सारी शक्ति उसे शान्त करने में लगा दी, किन्तु समस्यायें एक के बाद एक बढ़ती ही गईं। आखिर १३-१-१९४८ को उन्होंने अन्तिम बार उपवास का आश्रय लिया। इस समय तक वे महसूस करने लगे थे और आम तौर से कहने भी लगे थे कि १२५ वर्ष जीने की उनकी जो इच्छा थी वह अब नहीं रही। जीवन भर जिस विभूति ने आशावाद और तज्जनित संघर्षों में व्यतीत किया उसके मुंह से इस वाणी का निकलना उसके हृदय में व्याप्त निराशा, दुख और उद्वेग की उत्कटता का सूचक था। उनका यह अन्तिम उपवास १८-१-१९४८ को समाप्त हुआ, जब दिल्ली के सब दलों के नेताओं ने मिल कर उन्हें आश्वासन दिया कि वे शांति कायम रखने का हृदय से पूरा प्रयत्न करेंगे। परन्तु उग्रपंथी हिन्दू तत्वों ने गांधी जी के प्रयत्नों में मुसलमानों के प्रति पक्षपात देखा और उनमें से कुछ उनके इस जीवन को अन्त कर देने पर तुल गये।

किसी भटके हुये नौजवान ने २० जनवरी १९४८ को उनकी प्रार्थना सभा में बम रख दिया जिसके फूटने से कुछ दीवारों को धक्का पहुंचा, पर प्रार्थना जैसी की तैसी चलती रही। इससे भगवान की कृपा पर उनका विश्वास और भी दृढ़ हुआ और उन्होंने प्रार्थना स्थल पर पुलिस का संरक्षण लेने से इन्कार कर दिया।

गांधी जी ने एक बार कहा था कि 'चाहे आप मुझे मार डालें, आप मुझ पर थूकें, मैं मरते दम राम-रहीम, कृष्ण-करीम कहता रहूँगा। और फिर उस वक्त भी जब हाथ चलाते होंगे तो आपको दोष न दूँगा। मैं ईश्वर से यह न कहूँगा कि तू मेरे ऊपर क्या कर रहा है। मैं उसका भक्त हूँ मैं उसका किया स्वीकार करूँगा।'

और अन्त में ३० जनवरी, १९४८ को वह कलुषित दिन आ पहुँचा जबकि सत्य, अहिंसा और प्रेम के अनन्य उपासक का स्थूल शरीर पिस्तौल की तीन गोलियों से गोडसे नामक हत्यारे द्वारा छेद दिया गया और "हे राम" के साथ उनके प्राण पखेरू उड़कर सारे विश्व में व्याप्त होगये। उनकी निस्सीम शक्ति एवं प्रभु पर अगाध श्रद्धा यथावत सिद्ध रही।

हे राम !

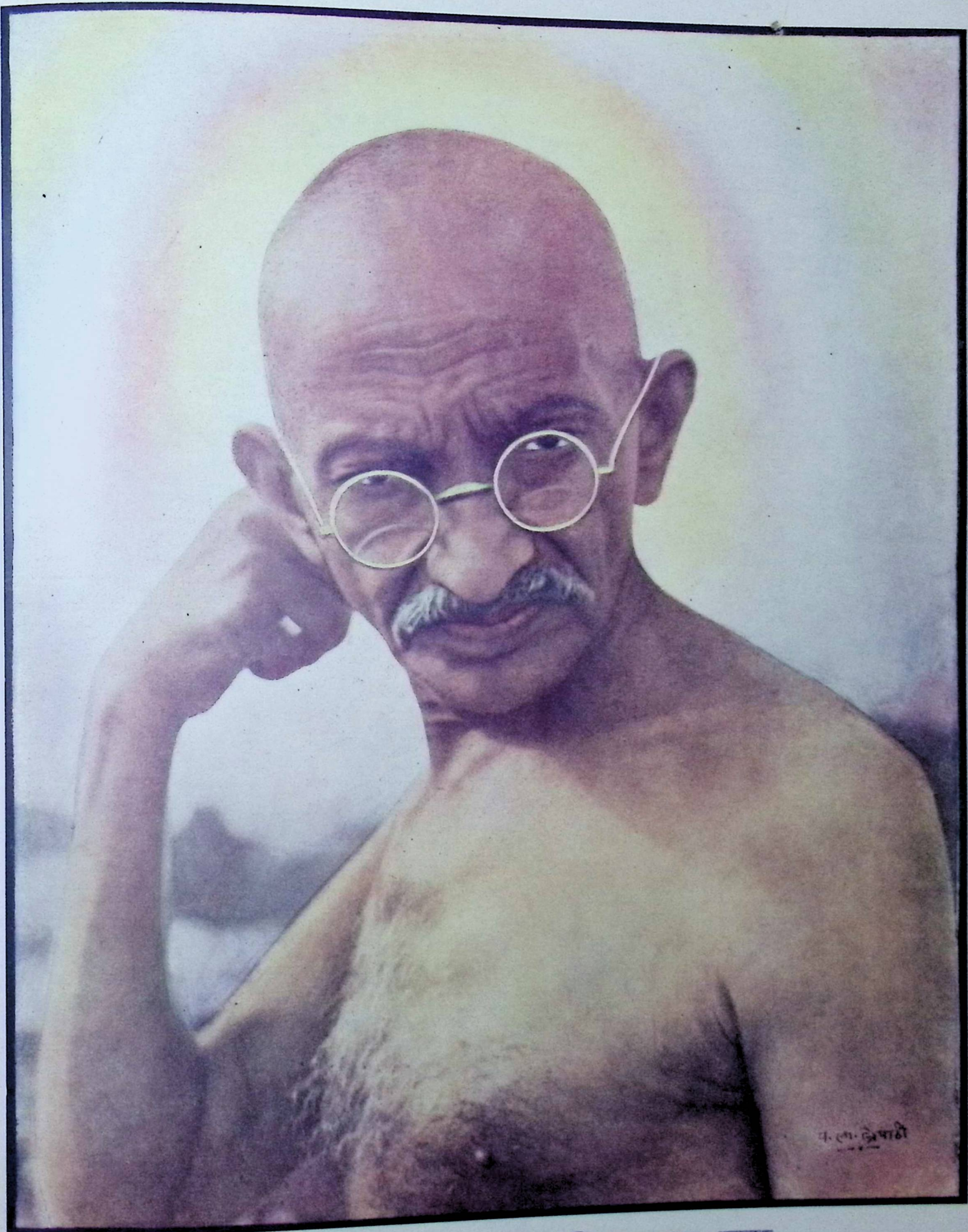

विचारक की अद्भुत मुद्रा

हरिजन आन्दोलन सम्बन्धी कानपुर-यात्रा का अन्तिम दिवस था। बापू की मार्मिक अपील
पर प्रभावित हो स्त्रियां अपनी सोने की चूड़ियां, जंजीर तथा अन्य आभूषण देने लगीं। सभी
को प्रतिस्पर्धा थी कि बापू के हाथ में ही अपनी निधि सौंपे। बापू इतनी भीड़ और उतावली
को देखकर किंकर्तव्य-विमूढ़ से हो गये। उस समय की उनकी विचारक की मुद्रा अत्यन्त
अद्भुत है।

—१९३४

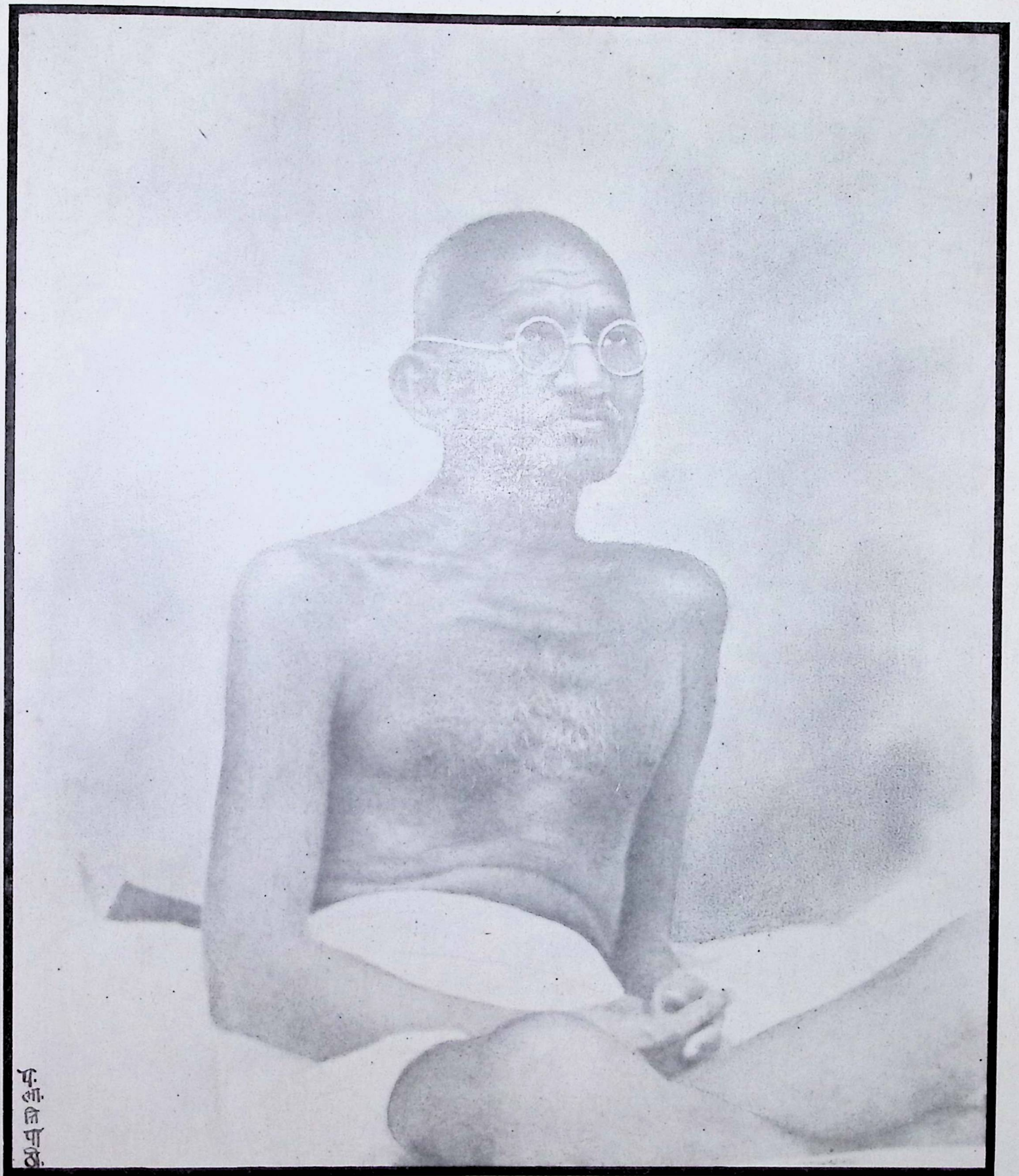

विलग, अत्यन्त विलग !

अत्यंत विशालकाय सभा में भाषण देने के पूर्व गांधी जी श्रद्धानन्द पार्क में बैठे हैं। ऐसा भासित होता है कि तत्कालीन वाह्‌य-वातावरण से अत्यंत विलग वे निस्सीम प्रेरणा-शक्ति के आवाहन में संलग्न हैं। गांधी जी ने कहा है :– 'प्रभु कहते हैं कि मुझ पर विश्वास करने वाला नाश को प्राप्त नहीं होगा।' किन्तु विश्वास ही पर्याप्त नहीं है। जो इंद्रियादिजनित लोभ से निवृत्ति की चेष्टा के लिये सतत युद्ध करेगा वही प्रभु का वरदान पावेगा। उनकी मूक-वाणी सदा पुण्य-कर्म की प्रेरक रही है।

–१९३४

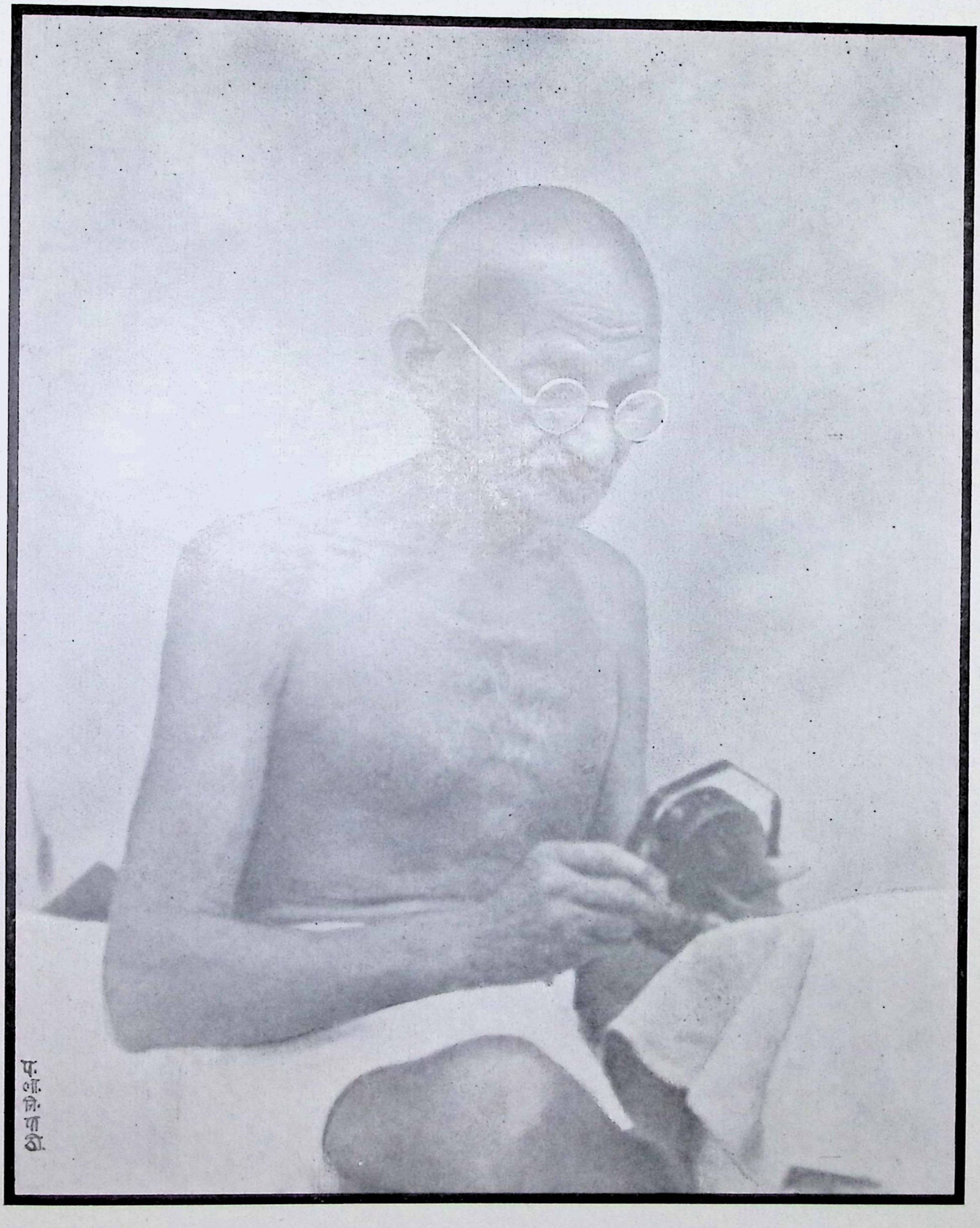

ऐ, छोटे से यंत्र !

"क्या तू मेरे आत्मा की पुकार सृष्टि में प्रसारित कर सकेगा ?"
ऐसा भासित होता है कि बापू ध्वनि प्रसारण यंत्र से, भाषण देने के पूर्व, यह प्रश्न कर रहे हैं ।

उन दिनों माइक्रोफोन आरम्भिक अवस्था में थे और उन्हें प्रायः हाथ में लेकर बोलने में सुविधा होती थी ।

–१९३४

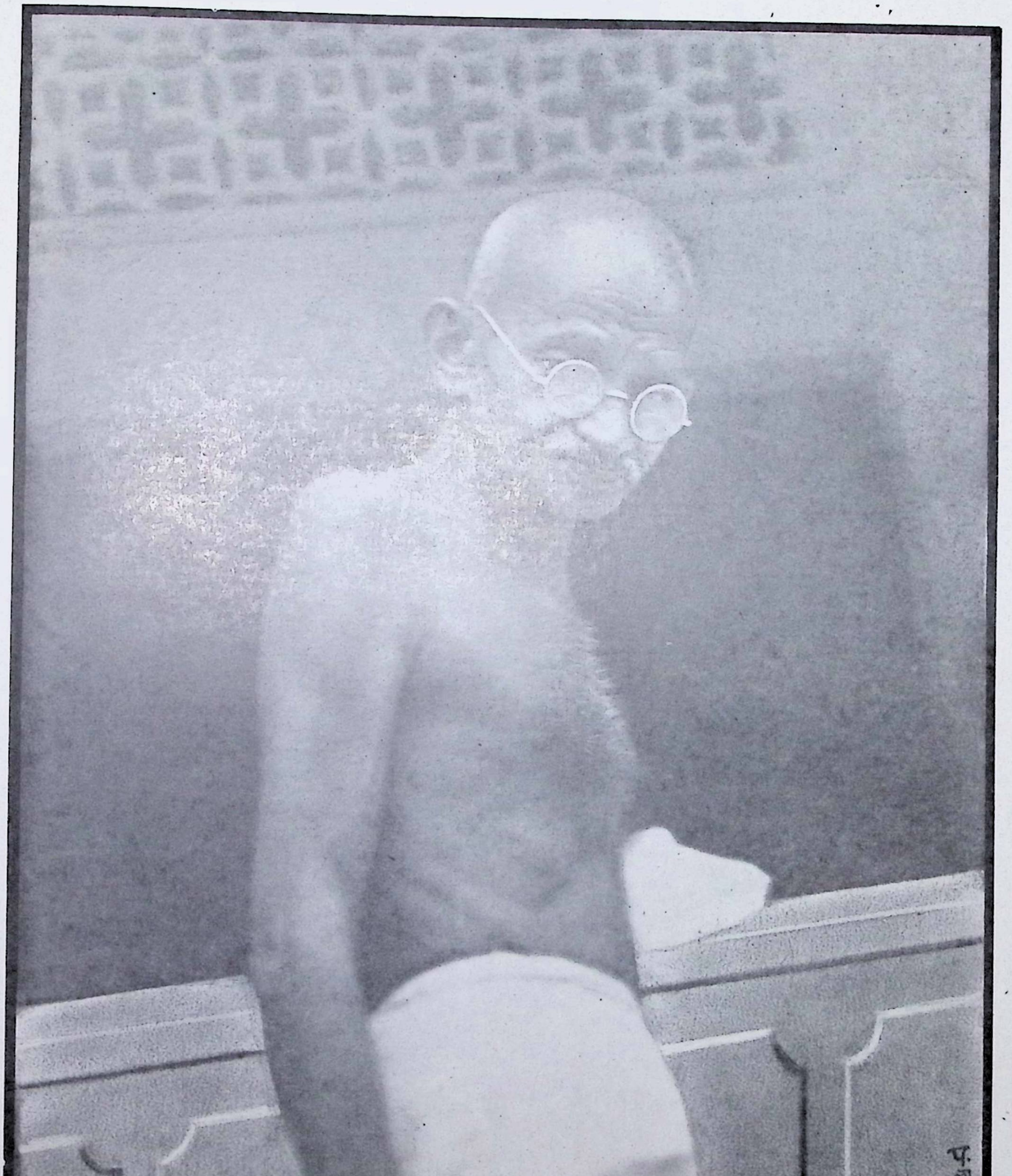

देखो, अच्छी तरह देख लो !
'इस दुर्बल शरीर पर जितना चाहे दृष्टि-पात करो, किन्तु मेरे मार्ग को अवरुद्ध न करो। मुझे आवश्यक कार्य से जाना है अतः जाने दो।' ऐसा जान पड़ता है कि बापू की मूक-वाणी उमड़ती हुई श्रद्धालु दर्शन हेतु आये जन-प्रवाह से जो निरन्तर आगे बढ़ रहा था, उक्त अभ्यर्थना कर रही हैं। तिलक-हाल के उद्घाटन समारोह के पश्चात् लिया चित्र।
—१९३४

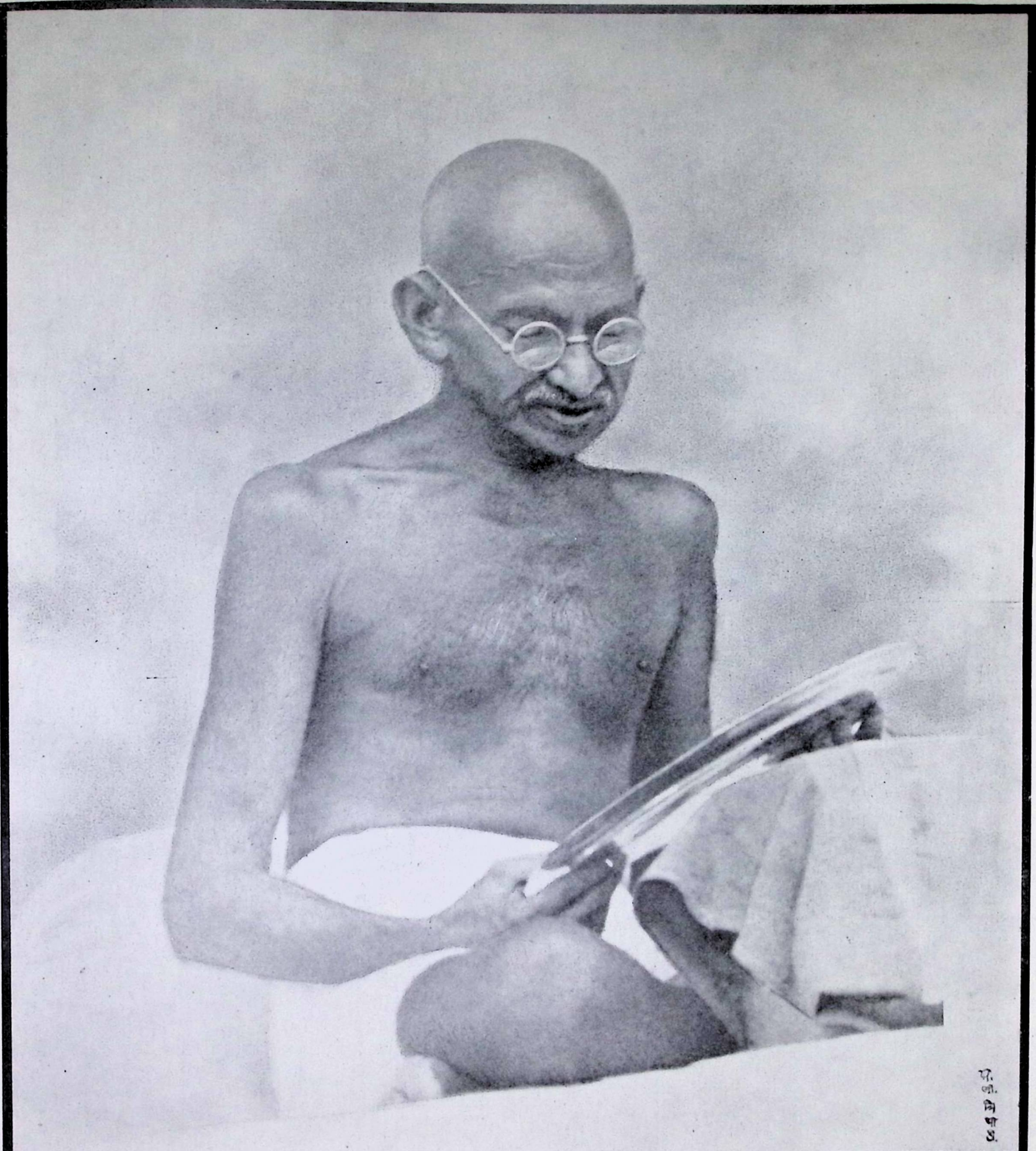

'मैं हरिजनों के लिये भीख मांगना अपना कर्त्तव्य समझता हूं।' –महात्मा गांधी। 'बापू' जो कहते थे उससे कहीं अधिक कार्य–रूप में उसे परिणित करते थे। किसी ने 'बापू' को एक चाँदी की थाल भेंट की। उसे वे गंभीरता पूर्वक निरीक्षण कर रहे हैं। सम्भवतः यह सोच रहे हैं कि इसके कितने अधिक दाम आ सकते हैं।

—हरिजन-उद्धार-अन्दोलन-यात्रा–१९३४

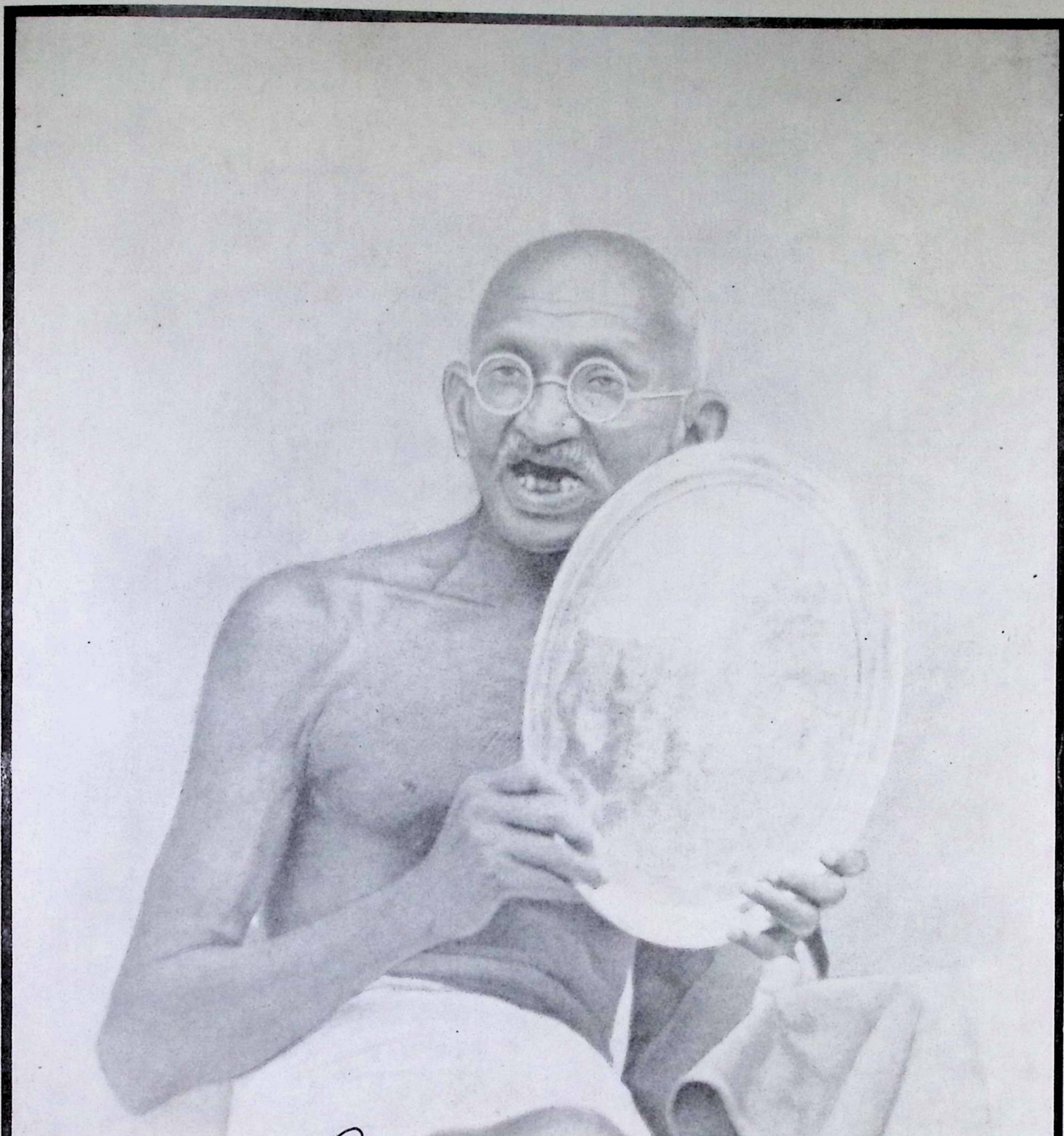

हरिजन आन्दोलन के सहायतार्थ भेंट में दी हुई थाली को गांधी जी नीलाम कर रहे हैं। उनका कहना हैं :—
'ये थाली चान्दी की है। इसकी खूब किम्मत आनी चाहिये'। किसी ने सौ रुपये लगाये।' 'बापू' इतने कच्चे व्यापारी न थे।
अतः उन्होंने जोर लगाकर कहा :– 'ये असली चान्दी की थाली सौ रुपये में नहीं बिकनी। इसकी खूब किम्मत लगनी चाहिये।'
'बापू' की बात रही और थाली ग्यारह सौ रुपये में नीलाम हुई।
'बापू' की स्वच्छ दंतावली में सामने के दो दांत स्पस्ट रूप से गायब दिखते हैं। —१९३४

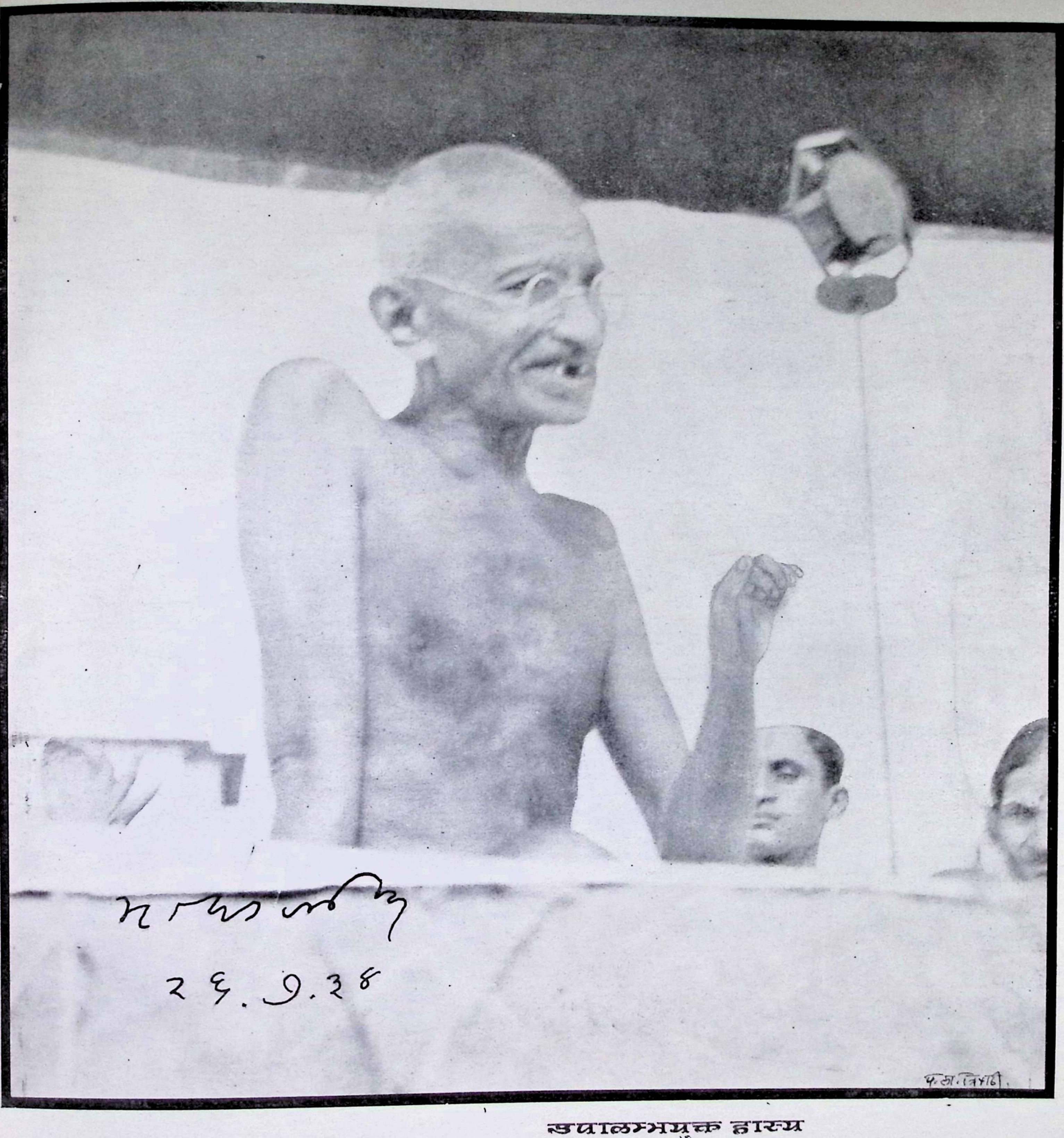

उपालम्भयुक्त हास्य

बापू की गम्भीरता के साथ उनका चुभता हास्य अत्याकर्षक होता था। विद्यार्थियों की एक सभा में बापू ने कहा :— 'युक्तप्रान्त के विद्यार्थी बड़े ही मेधावी होते हैं। वे पढ़ने के साथ साथ पति और पिता भी बन जाते हैं। विद्याध्ययन के समय तो **ब्रह्मचारी** रहना ठीक कहा गया है किन्तु यहां तो विद्यार्थी एक समय में अनेक काम कर लेते हैं।' दक्षिण अफ्रीका में टूटे बापू के दो दांत स्पष्ट दिखाई देते हैं।

—१९३४

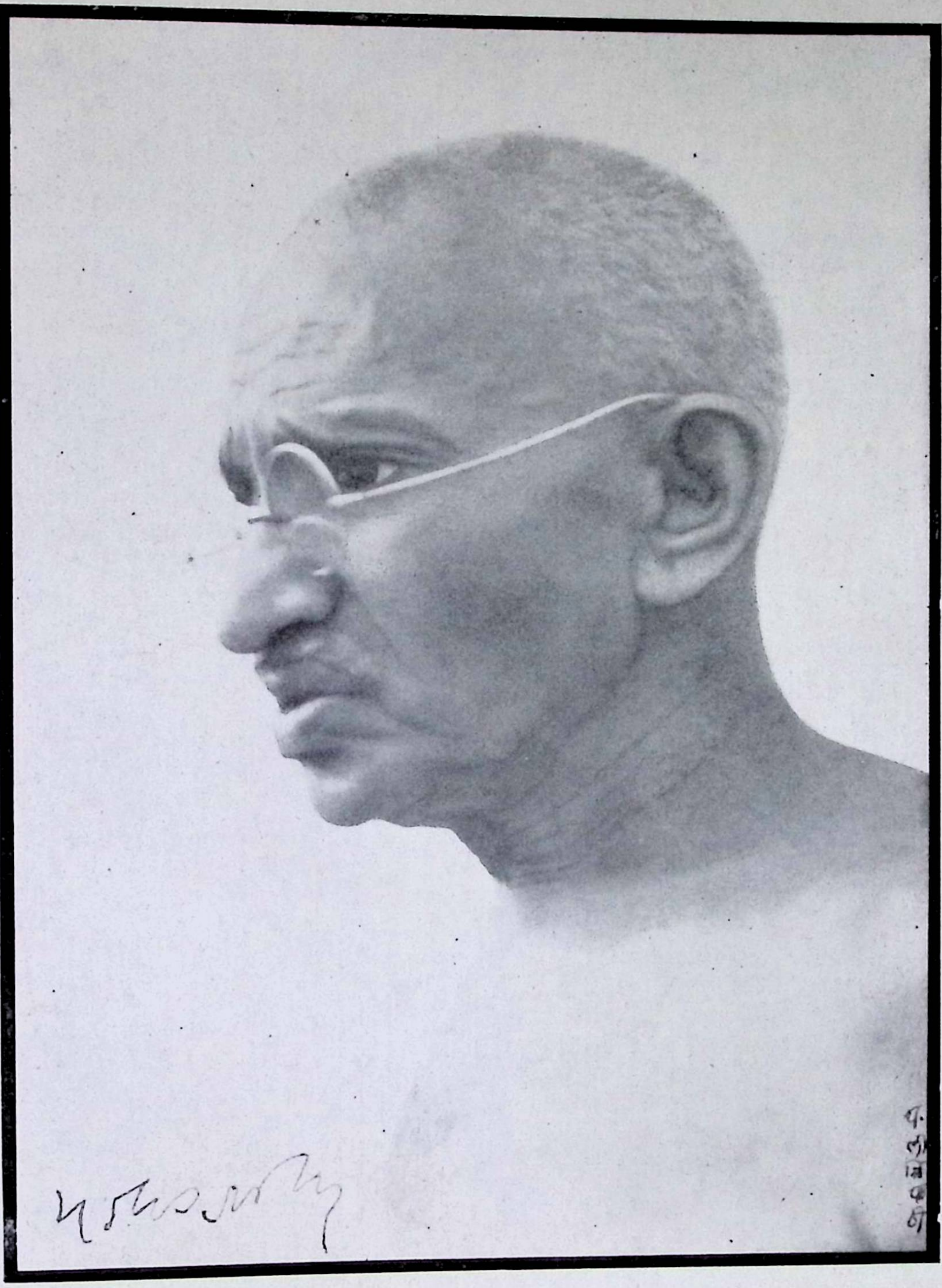

प्रकटतः व्यग्र

मानव–मुख उसके हृदय का दर्पण होता है किन्तु सन्त जनों के मुख पर विशेष भाव उनकी गम्भीरता और गहनता के द्योतक हैं। ऐसा जान पड़ता है कि बापू किसी गहरी चिन्ता के पश्चात् एक निश्चय पर पहुँचे हैं और अब सबके सामने प्रकट करने जा रहे हैं। बापू की यह असाधारण मुद्रा अत्याकर्षक है।

–१९३४

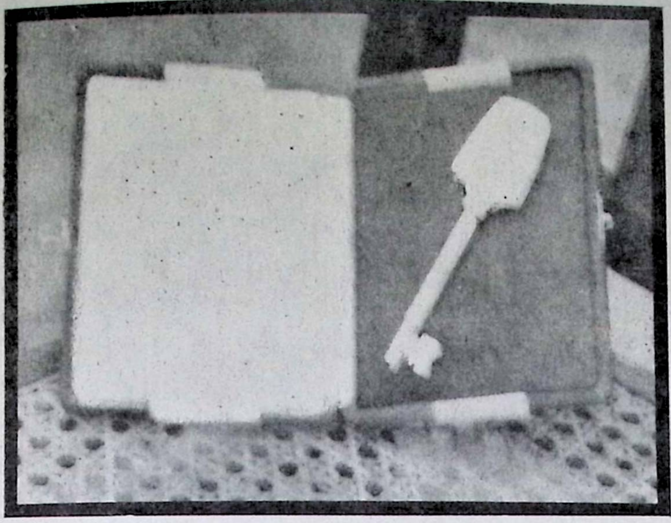

श्रीमती कमला नेहरू स्मारक चिकित्सालय के उद्घाटन हेतु एक चांदी की ताली बनवाई गयी थी। बापू के पास मानव संकट दूर करने की तालिका सदैव रही है। यह तालिका सत्य और अहिंसा द्वारा प्रेम पूर्वक सेवा में संलग्न होना है। बापू की सदैव यही आकांक्षा रही है कि इस तालिका से प्रत्येक मानव अपने तथा समाज के दुख दूर करे।

गांधी जी तथा मालवीय जी

श्रीमती कमला नेहरू स्मारक चिकित्सालय के उद्घाटन समारोह हेतु महामना मालवीय जी भी उपस्थित थे। सभा-मंच पर पहुंच कर गांधी जी उनसे सस्नेह भेंट कर रहे हैं।

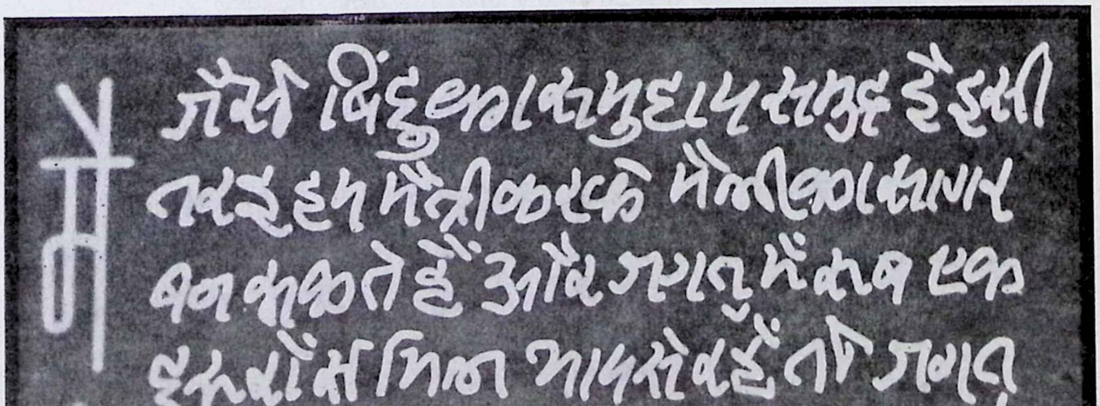

प्रखर एवं दृढ़ लेखनी

गांधी जी कहा करते थे कि उनका लिखावट सुन्दर नहीं होती, किन्तु उनके एक एक अक्षर इतने दृढ़, सशक्त एवं प्रभावोत्पादक हैं कि उनके लिखावट में पार्थिव सौंदर्य की ओर ध्यान जाने के पूर्व स्पष्ट भासित होता है कि उन्होंने अपने कर्मठ जीवन में अवतरित सिद्धान्तों को अत्यंत सरल और सीधी भाषा में लिखा है। साथ के चित्र में उनकी लेखनी का उदाहरण है जो स्वयं सौंदर्य का मूर्तिमान स्वरूप है।

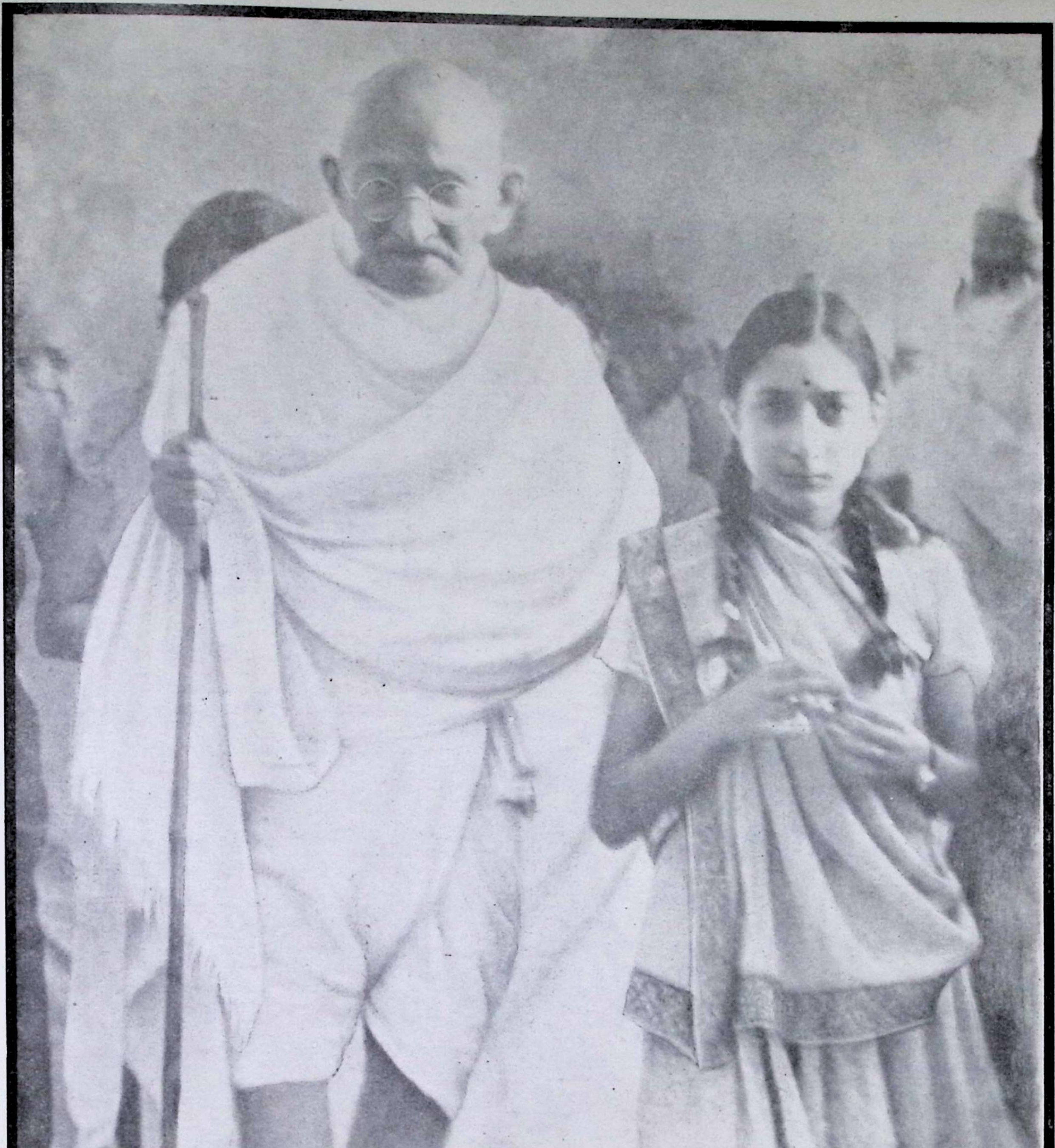

यज्ञ-शाला की ओर

श्रीमती कमला नेहरू स्मारक चिकित्सालय के उद्घाटन के पूर्व शुभ-कार्य सम्पन्नार्थं एक यज्ञ की व्यवस्था हुई थी। बापू स्वयं 'होता' थे। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित की कन्या का सहारा ले बापू यज्ञ-शाला की ओर जा रहे हैं।

—१९४१

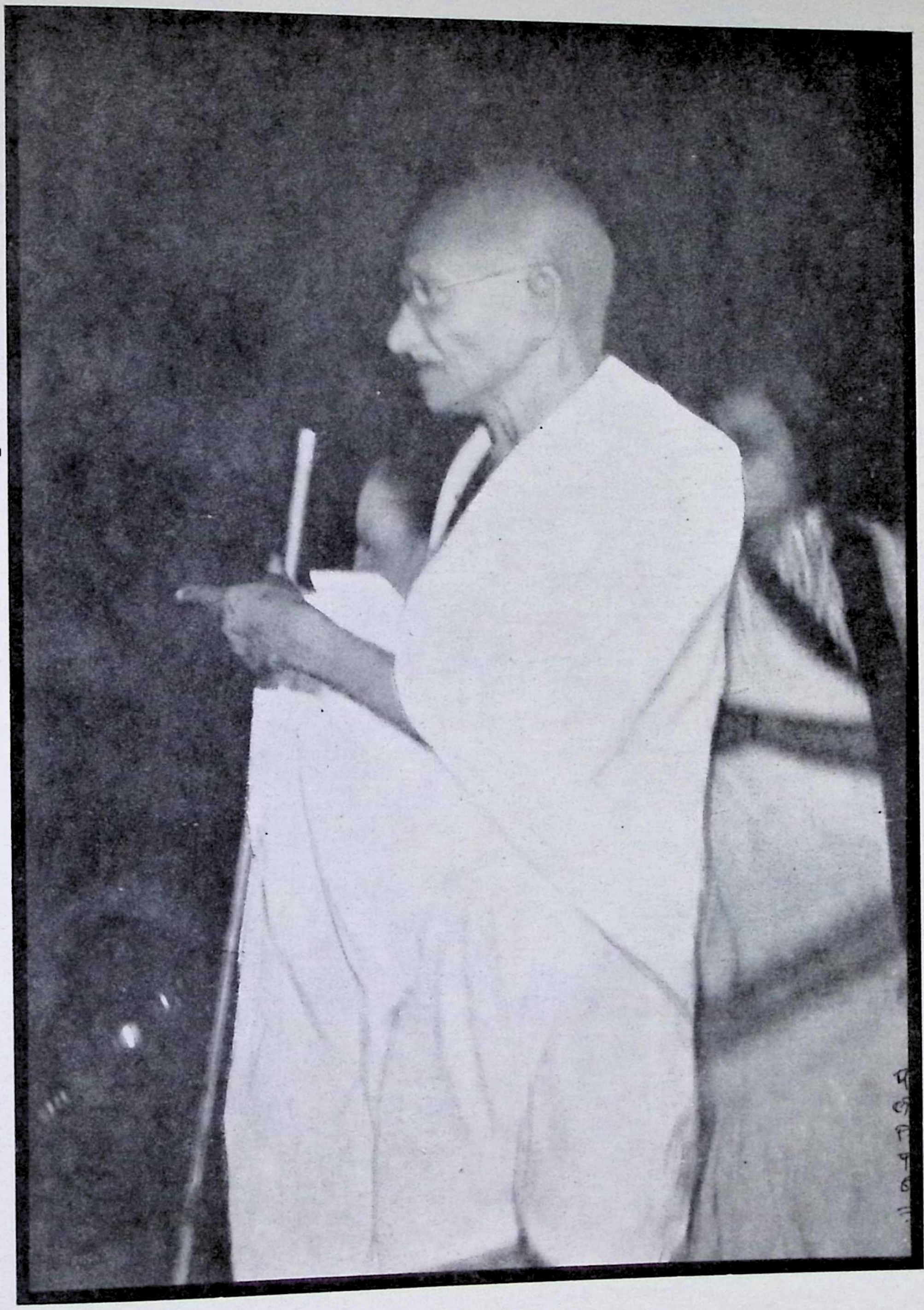

एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु.......

जो देदीप्यमान ज्वालाओं में अग्निहोत्र करता है :– उचित मार्ग का अनुसरण करता है, वह साधक सत्य के सन्निकट रहता है। सत्य और अहिंसा के पुजारी बापू सम्भवतः उसी उचित मार्ग की ओर इंगित कर रहे हैं। यहां जो भी हो—किन्तु बापू ने जीवन पर्यन्त सन्मार्ग की ओर ही प्रेरित किया है।

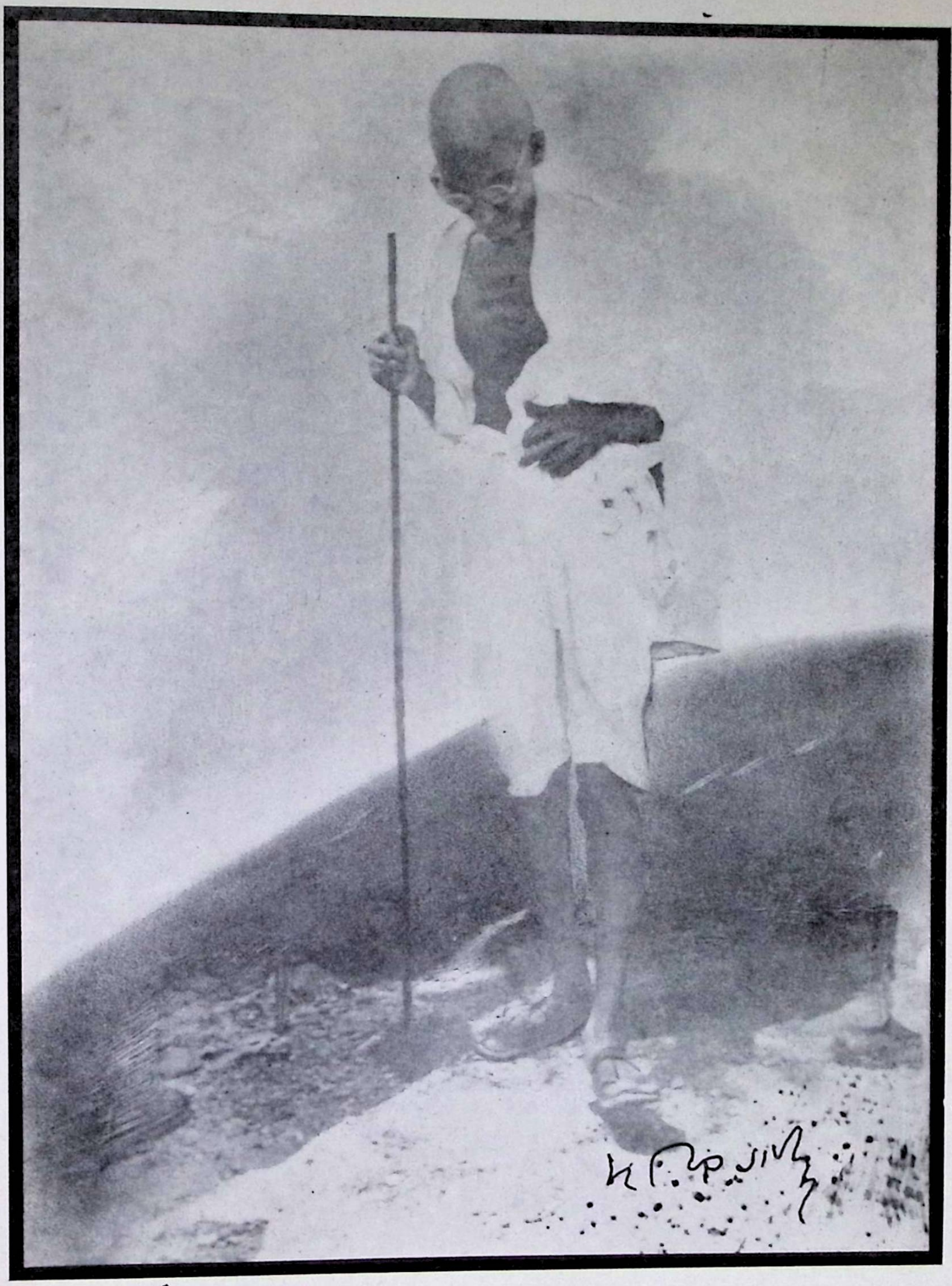

'एकला चलो'

जदि तोर डाक सुने केउ न आशे तबे एकला चलो रे ।
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे ॥

सत्य और अहिंसा जिनके लिये ऋत था, ऐसे बापू सन्मार्ग की ओर अग्रसर होते समय किसी की प्रतीक्षा में रुकने वाले न थे । कर्म-पथ के वे स्वयं मूर्तिमान पथिक थे । प्रभु की प्रेरणा सदैव उनके साथ थी ।

दिवंगता कमला नेहरू स्मारक चिकित्सालय के उद्-घाटन समारोह के संदर्भ में आयोजित यज्ञ की हवि के लिये, बापू, नारिकेल एवं पुष्पांजलि, मंत्रोच्चार के मध्य, समर्पित कर रहे हैं। बापू कर्म-कांडी थे अथवा नहीं किन्तु यह निश्चित है कि ऐसे शुभग सुकुमार अवसरों पर कोमल भावनाओं की सुरक्षा करना भली भांति जानते थे।

–१९४१

बापू की सात्विकी-वृत्ति अमोघ शक्तिशालिनी रही है। हरिजन-उद्धार-आन्दोलन के समय बड़े-बड़े सनातनी रूढ़िवादी पंडितों ने भी बापू के सिद्धांतों को स्वीकार किया। बापू को मालायें अर्पित करने के लिये सनातनी-पंडितों का एक समुदाय, चित्र में, दर्शित है।

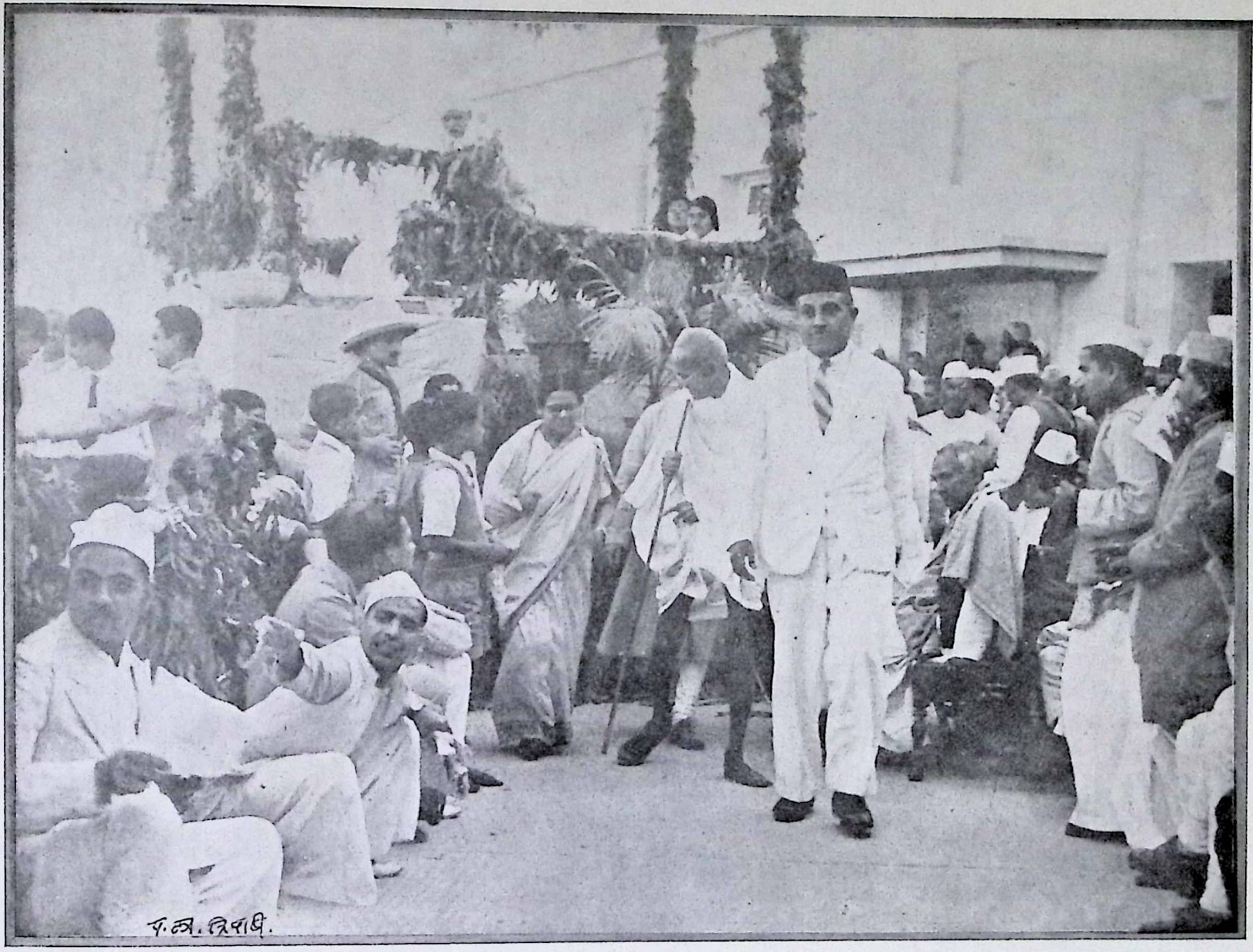

बापू, समारोह के सभापति श्री जिवराज मेहता के साथ, श्रीमती कमला नेहरू स्मारक चिकित्सालय के उद्‌घाटन के लिये जाते समय, पीछे मुड़कर कुछ कहते हुये आगे बढ़ रहे हैं। बापू के पीछे बायें ओर मंच पर पंडित मदनमोहन मालवीय प्रतीक्षा में बैठे हैं।

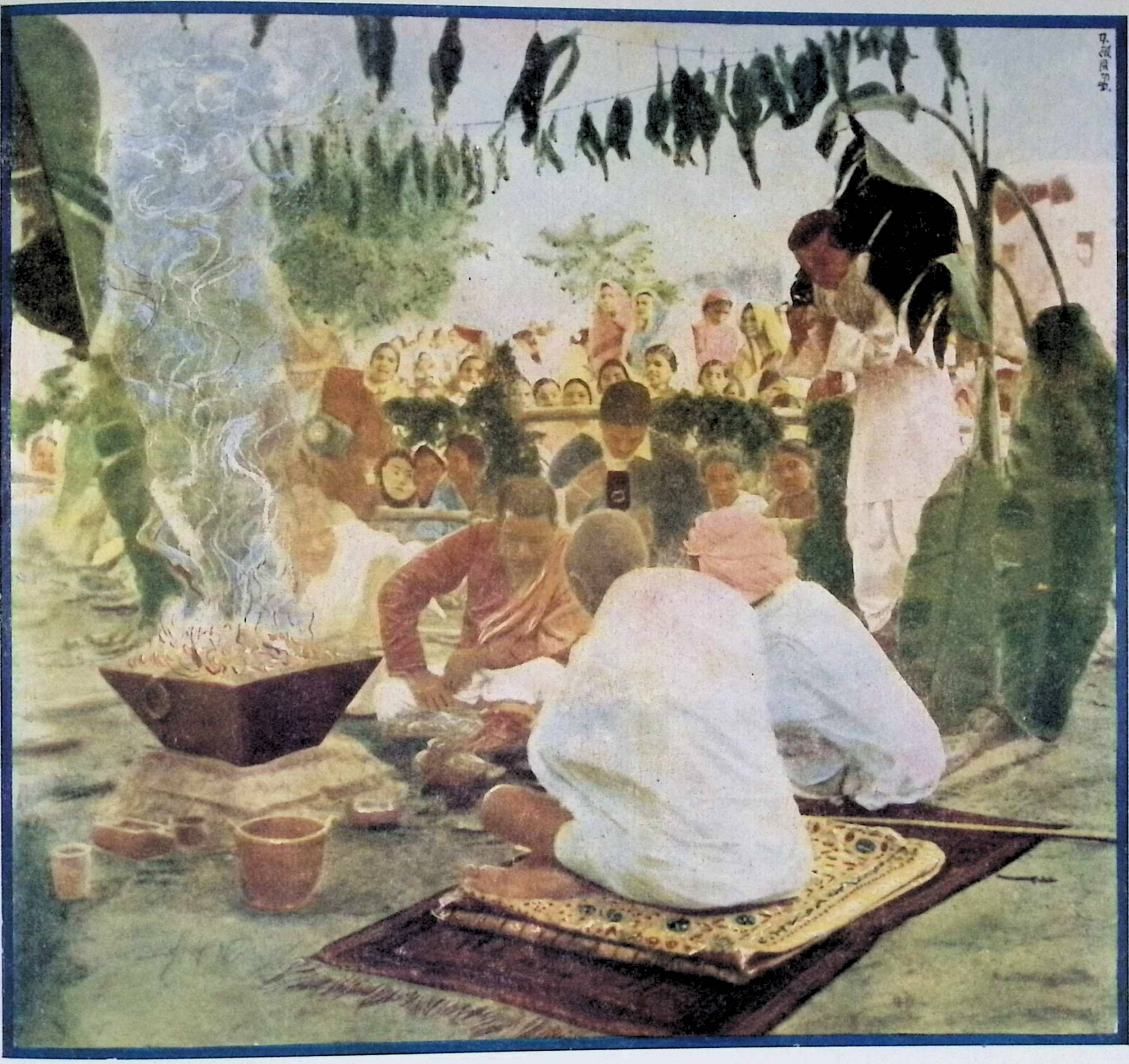

दिवंगता कमला नेहरू की स्मृति में निर्मित्त चिकित्सालय के उद्‌घाटन के पूर्व मंगल कार्य के निर्विघ्न समाप्ति-हेतु एक यज्ञ की व्यवस्था हुई थी। याज्ञिक-होता के अद्‌भुत श्रद्धालुरूप में धर्मवान बापू काशी की विद्वत् पंडित मण्डली के समक्ष यज्ञ रूपी मंगल कार्य का सम्पादन कर रहे हैं। इस चित्र में देश पूज्य पंडित जवाहरलाल नेहरू की एक मात्र कन्या श्रीमती इंदिरागांधी हरे रंग की साड़ी पहिने बापू के सामने बैठे कैमरा मैन के पीछे खड़ी हैं। यह परम अद्‌भुत चित्र अब तक प्रकाश में नहीं आया।

२८ फरवरी १९४१

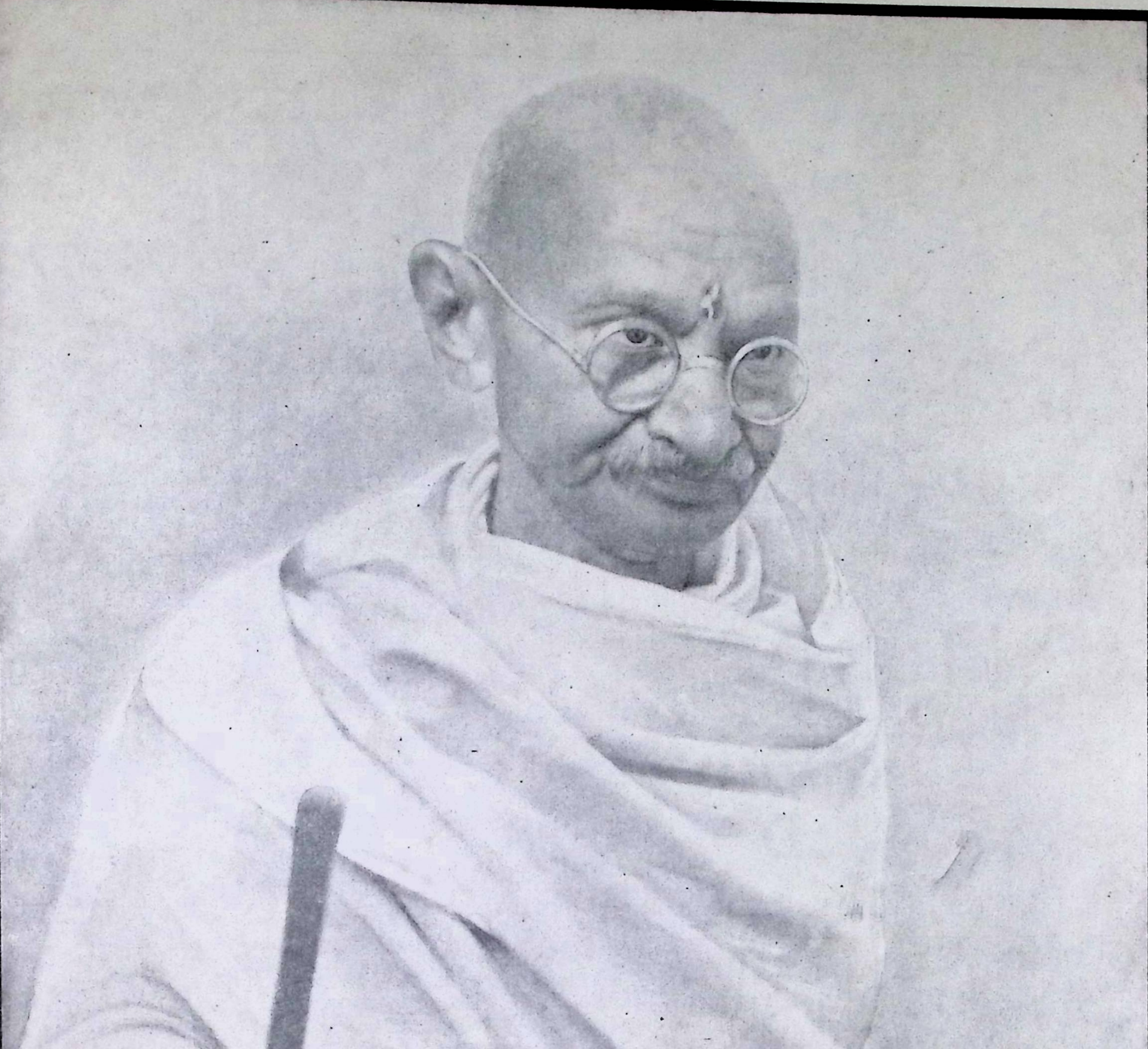

दिवंगता कमला नेहरू की स्मृति में निर्मित विशाल चिकित्सालय का उद्घाटन करते हुये 'बापू' अत्यन्त कोमल भावनाओं से ओतप्रोत हो उठे थे। चांदी की ताली से मुख्य द्वार को खोलने के पश्चात् वे देवी कमला की स्नेहमयी स्मृति में खो से गये। उद्घाटन के समय पं० जवाहरलाल नेहरू जेल में कैद थे। ऐसे समय में 'बापू' का कोमल हृदय न मालूम कितनी स्मृतियों से भर गया और उनकी आंखों में शुभ्र जल-कण छल-छला आये।

—१९४१

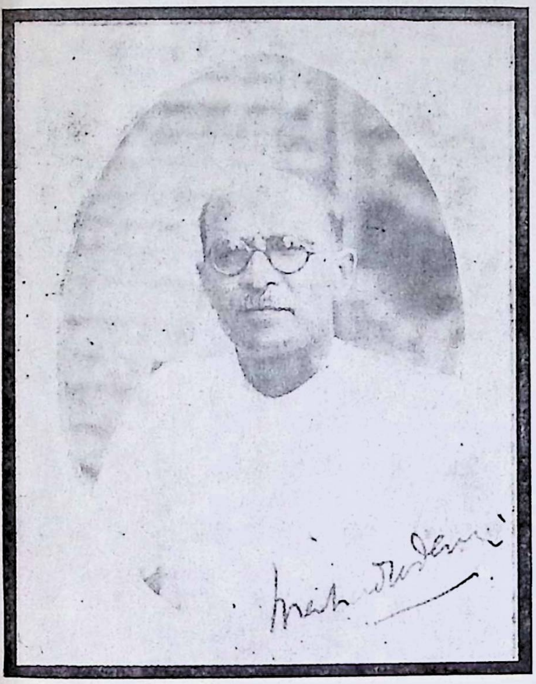

दिवंगत महादेव देसाई बापू के निजी सचिव ही न थे वरन् उनके विशेष अंग थे। जिस तन्मयता से उन्होंने बापू की सेवा की और उनकी कृतियों का लेखा सुरक्षित रखा वह इतिहास में सदा अमर रहेगा। आगाखाँ महल के कैदखाने में महादेव–भाई १५ अगत सन् १९४२ को दिवंगत हुए।
चित्र–१९३४

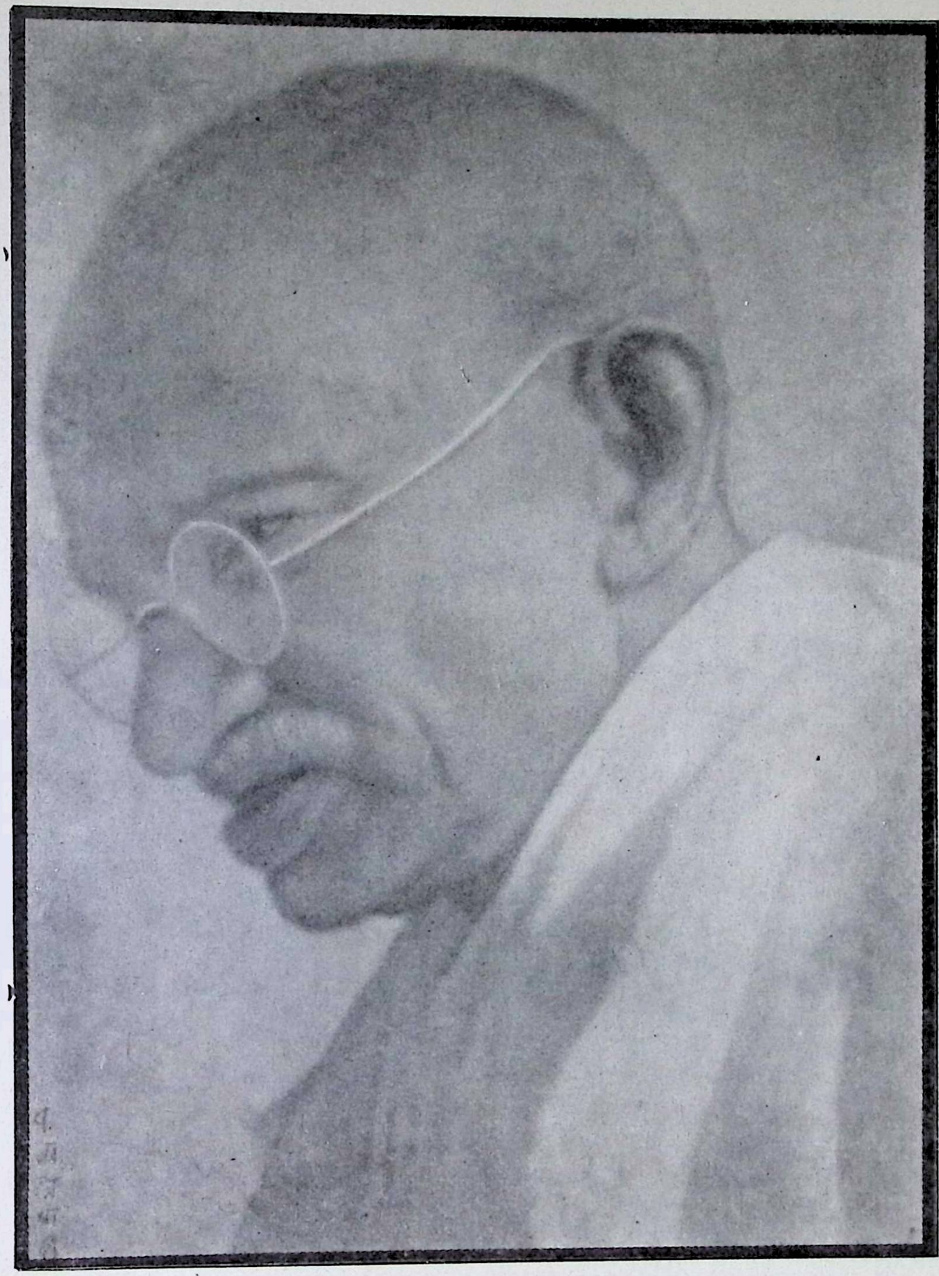

बापू गंम्भीर विचार में तल्लीन हैं। उनके ऊपर देश के कल्याण की बहुत बड़ी जिम्मेदारी रही है। ऐसा भासित होता है कि किसी उलझी हुई समस्या का हल उन्हें प्राप्त हो गया है। ऐसी असाधारण-मुद्रा यदा-कदा ही दर्शित होती थी।

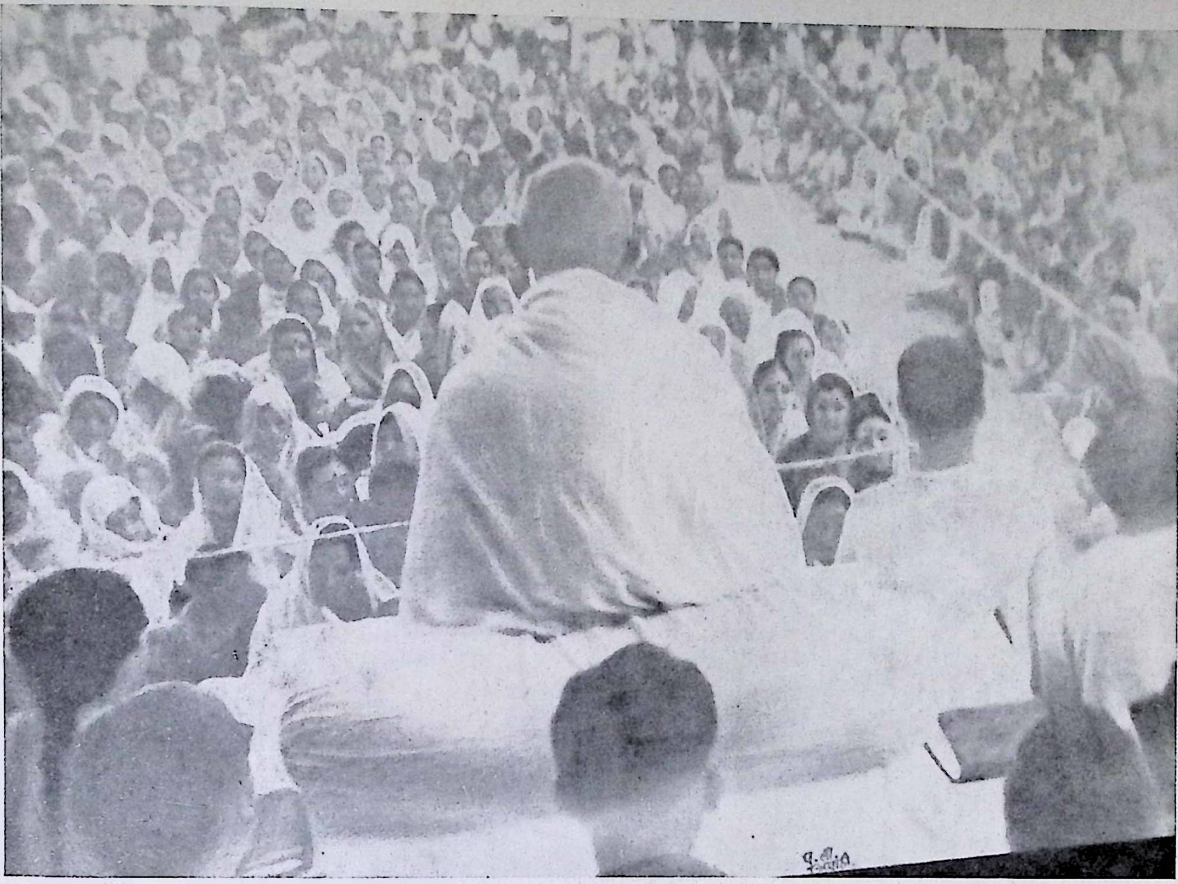

प्रार्थना में बैठे बापू का अद्भुत रूप हो जाता था। वे स्वतः श्रद्धा की साकार मूर्ति लगने लगते। बापू ने कहा है :– मैं अपना कोई काम बिना प्रार्थना किये नहीं करता।

प्रार्थना नम्रता की पुकार है; आत्म शुद्धि एवं आत्म निरीक्षण का आह्वान है। प्रार्थना धर्म और प्राण का सार है। बापू की तल्लीनता और एकाग्रता सदा चिरस्मणीय है।

रामधुन के पश्चात् प्रार्थना सभा के माध्यम से बापू प्रायः अपने संक्षिप्त भाषणों में, जन-कल्याण-हित विचार भी प्रकट करते थे। श्रद्धा पूर्वक सभी उनकी वाणी के रसामृत से लाभान्वित होते थे।

यह चित्र–१९४६ मसूरी के सिलवरटन होटल के प्रांगण में लिया गया था।

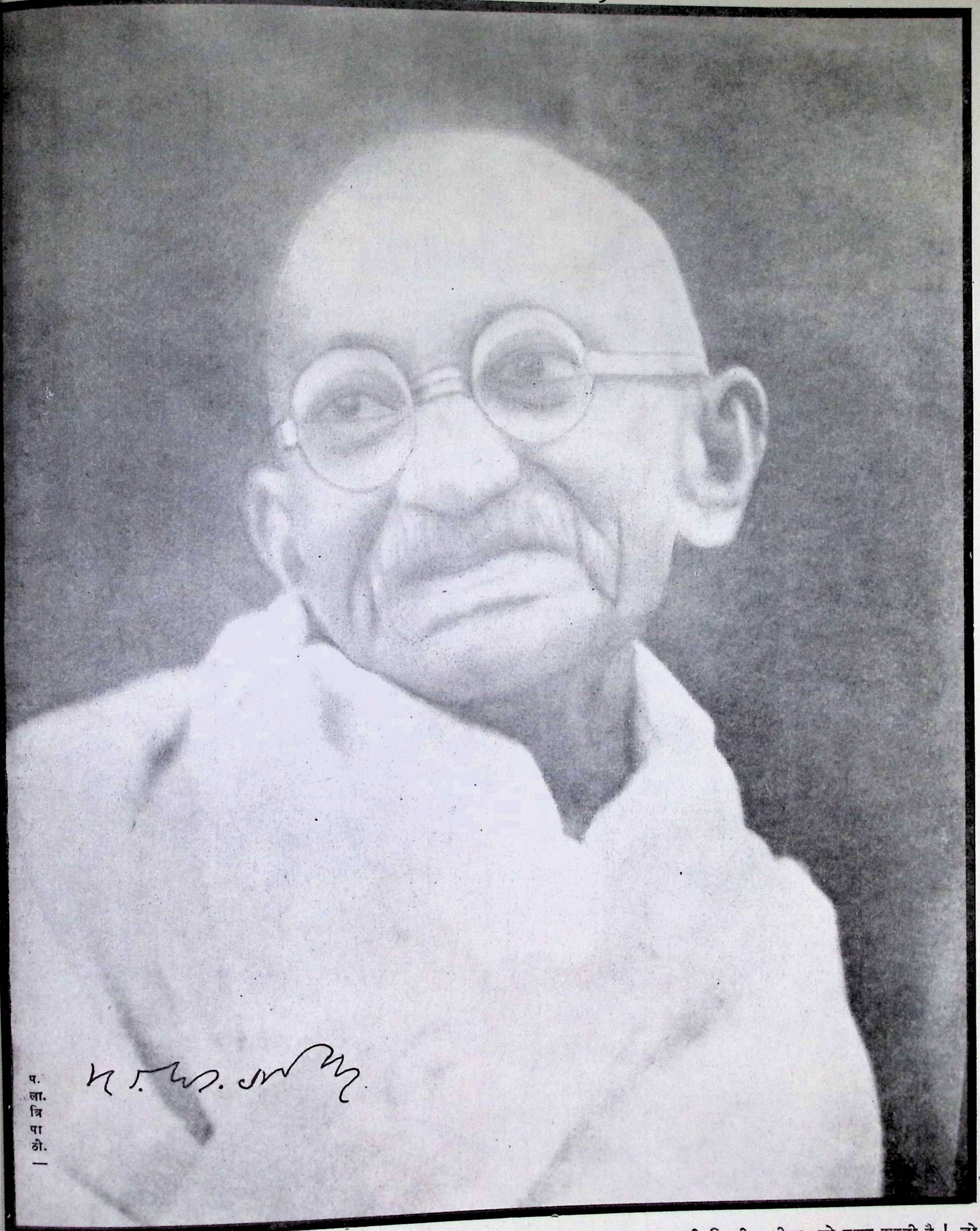

गांधी जी की यह मुद्रा मौन आर्त–पुकार को प्रकट करती है अथवा अपने प्रभु के सम्मुख हृदय की निस्सीम पीड़ा को प्रकट करती है ! जो भी हो उनकी करुणामय प्रार्थना 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की याचना करती है। कुछ हिला हुआ यह चित्र गांधी जी की आसाधारण मुद्रा को प्रकाशित करता है ।

—१९४७

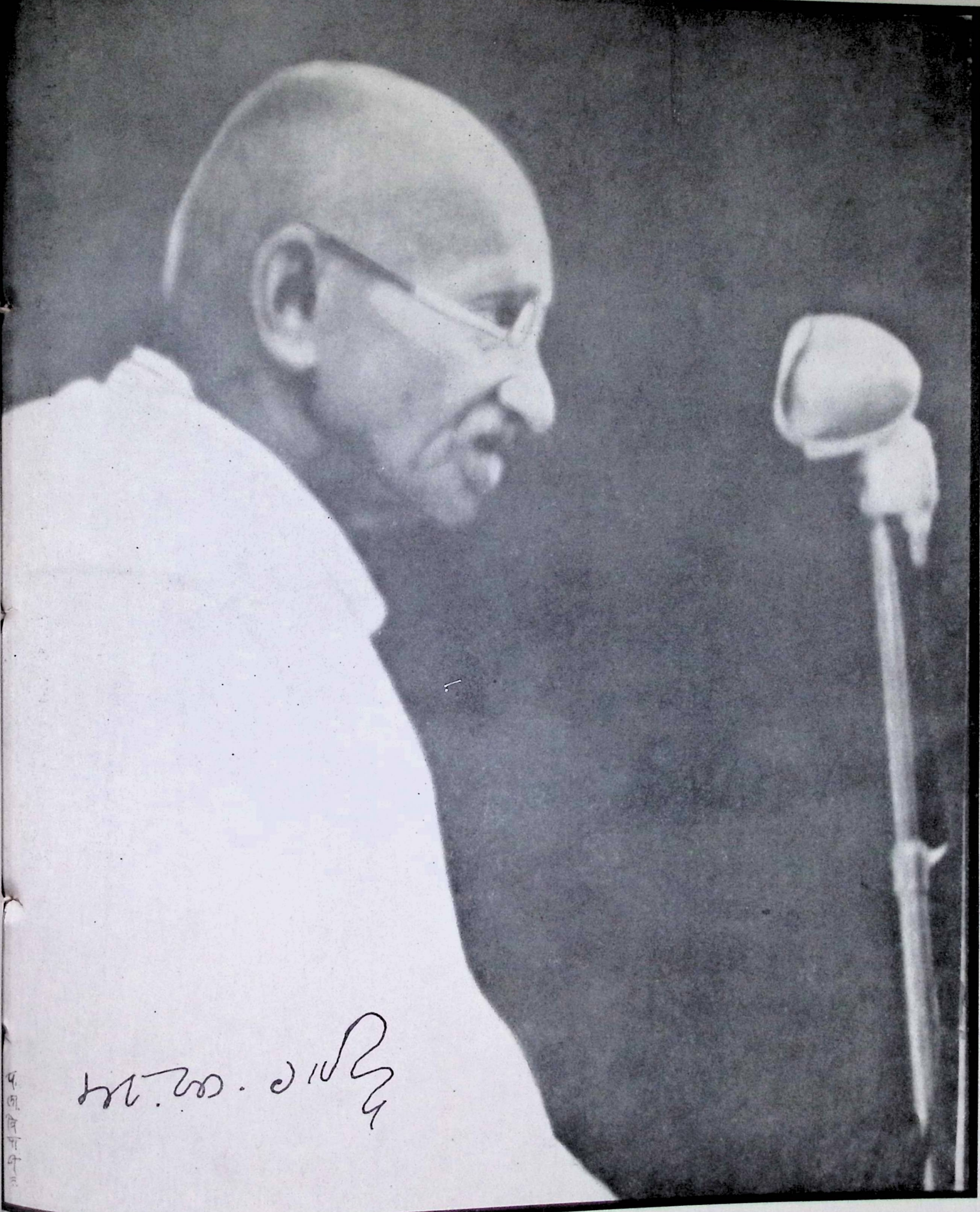

नेताओं ने मई १९४७ में अत्यंत नैराश्य और विवशता के कारण भारत विभाजन को मान्यता देना स्वीकार किया । बढ़ी हुई साम्प्रदायिक वैमनस्यता ने संभवतः अन्य निर्णय की गुंजाइश ही न रखी थी । तत्कालीन वायसराय लार्ड माउन्टबैटन ने गांधी जी को वार्ता के हेतु आमन्त्रित किया था । गांधी जी ने भारत को खण्डित कर के पाकिस्तान की स्थिति को स्वीकार नहीं किया, किन्तु इस निर्णय में वे अकेले ही रह गये । विवश हो उन्होंने फैसला अन्य नेताओं पर छोड़ दिया । ऐसी अवस्था में यह चित्र गांधी जी की असीम व्यथा का द्योतक है ।

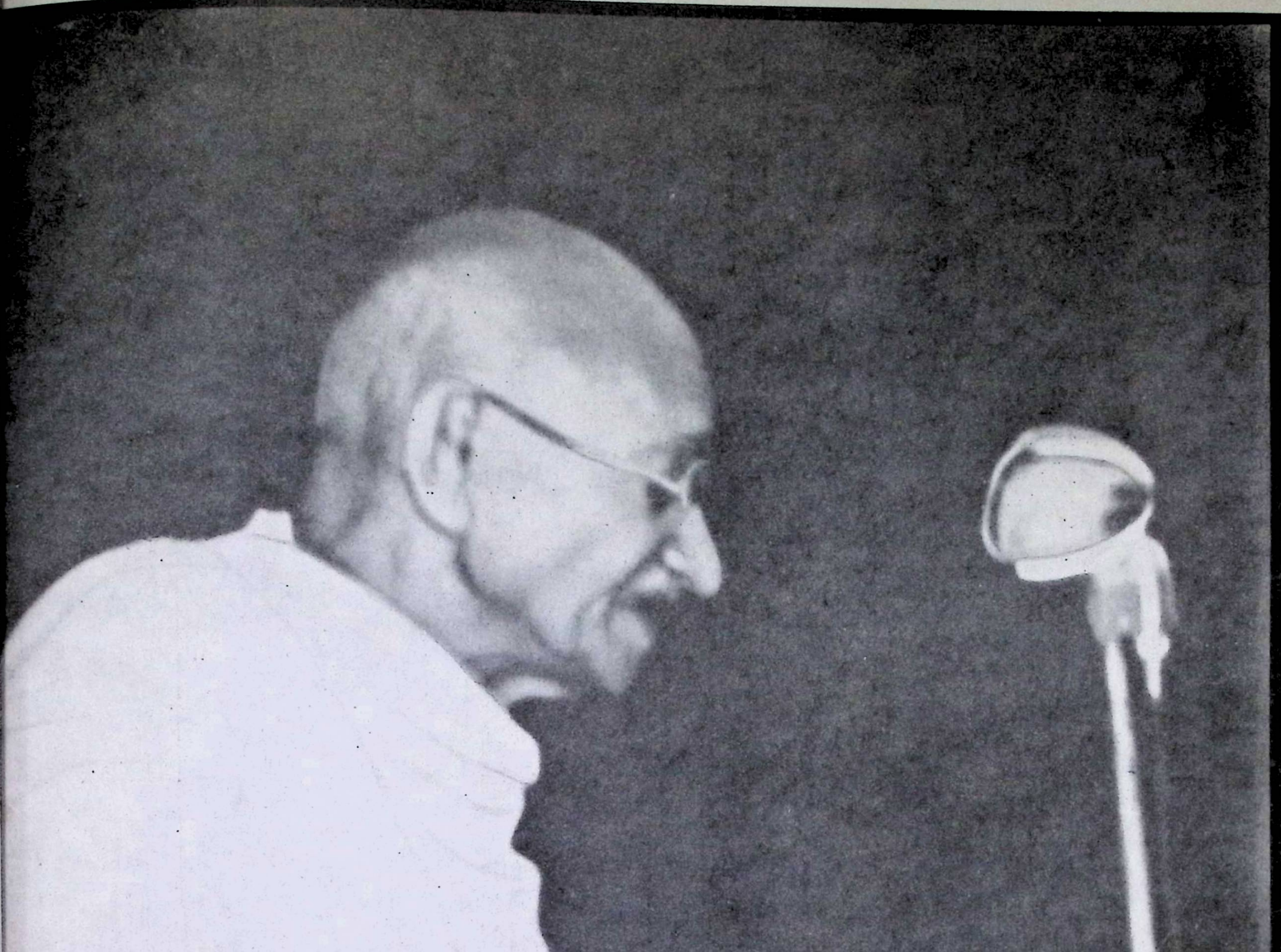

बापू का उन्मुक्त, बच्चों सा सहज हास्य अत्यंत मोहक रहा है। कट्टर शत्रु भी उनकी ऐसी मुद्रा से प्रभावित ही नहीं होता था। वरन हतप्रभ हो अपनी हार स्वीकार करने में संकोच नहीं करता था। सत्य और अहिंसा के साधक की सरलता और मोहिनी शक्ति देखते ही बनती थी।

गांधी जी ने कहा है :—

प्रार्थना या भजन जीभ से नहीं हृदय से होता है। प्रार्थना ईश्वर के साथ महकार है। इस तथ्य को जानने वाले और 'कथनी' की अपेक्षा करनी के विश्वासी गांधी जी की प्रार्थना दिव्य होती थी। ऐसा भासित होता था कि प्रभु की ज्योति उनमें समाहित है और वे 'पुरुष एवेदं सर्व यद्भूतं यच्च मव्यम्,' मूलमंत्र के ज्ञाता थे।

—सायं की प्रार्थना में लिया चित्र।

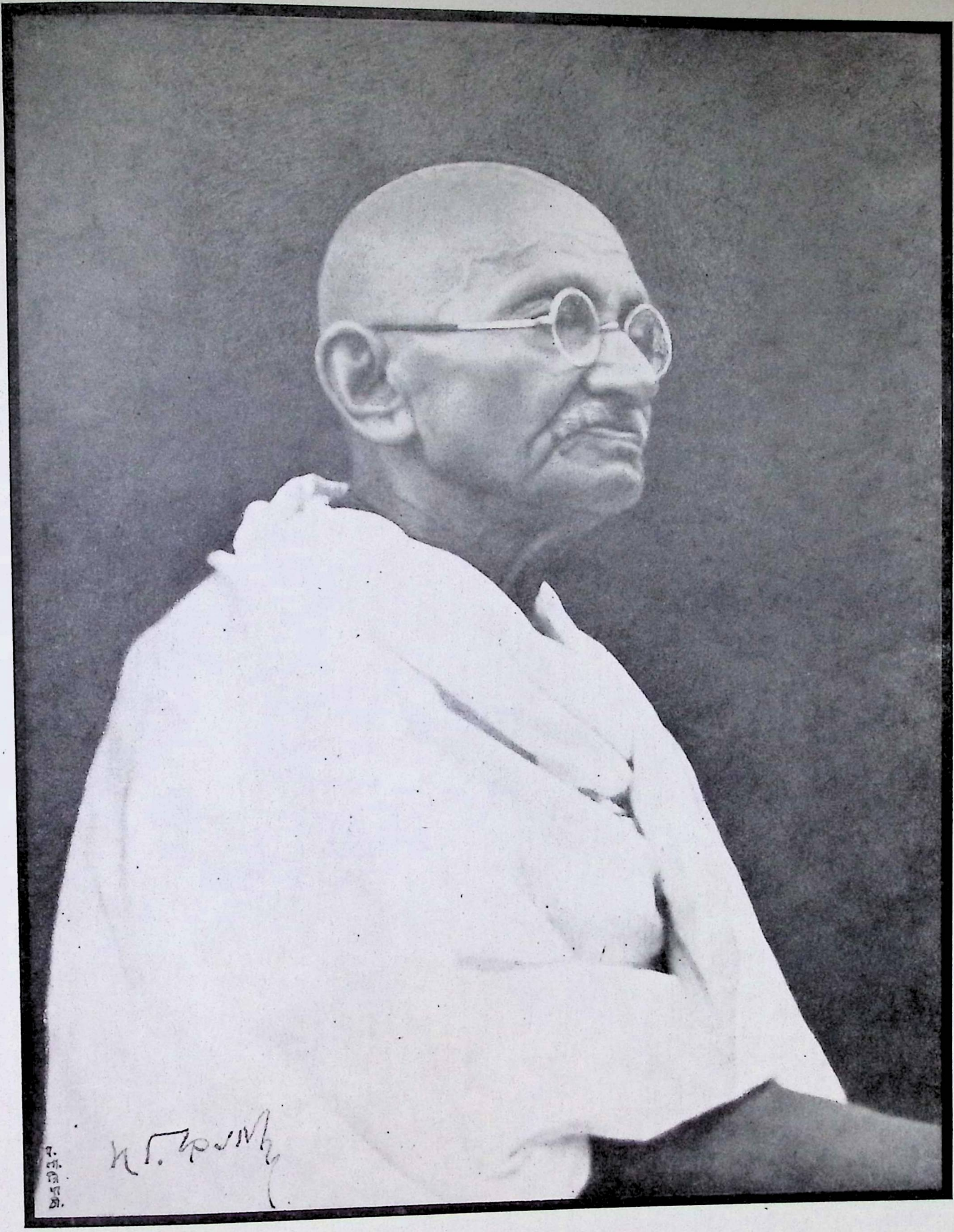

दुर्बल किन्तु दृढ़ एवं प्रभावोत्पादक

अत्यन्त निकट से लिया हुआ गांधी जी का गहन विचार में निमग्न चित्र। गांधी जी भाषण देते हुये शांत हो कुछ सोचने लग गये। इस समय गांधी जी कुछ अधिक दुर्बल हो गये थे किन्तु उनकी दृढ़ता एवं आत्म-बल सदा की भांति ही समान थे। हिमालय सी उच्चता और समुद्र सी गम्भीरता उनका सहज स्वभाव था। यह चित्र भी १६४७ के अंतिम दिनों में लिया गया था।

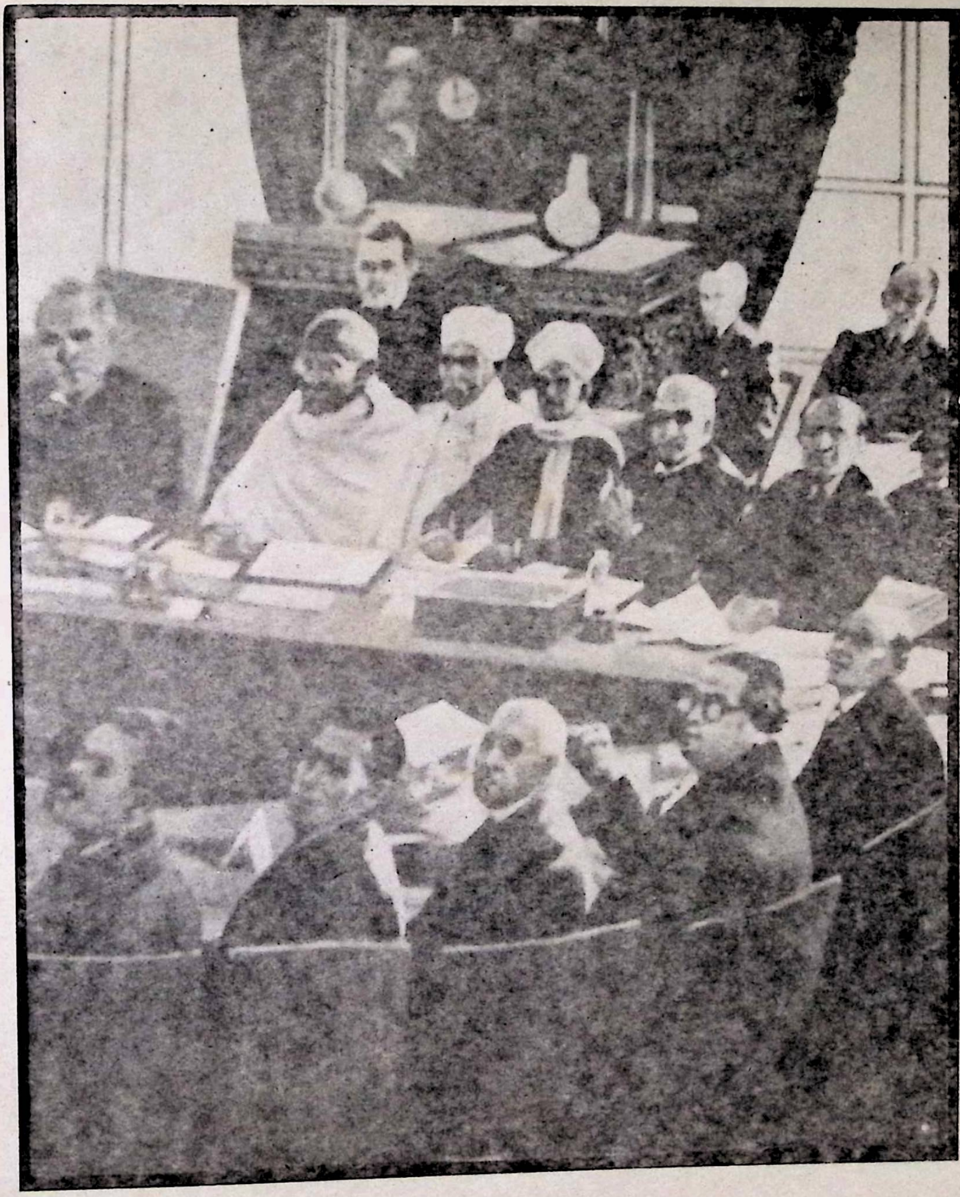

नेताओं के साथ गोलमेज कांन्फ्रेन्स, लन्दन में महात्मा गांधी का चित्र। महात्मा जी ने वहां शासन, सेना तथा वित्त पर भारतीय नियंत्रण की मांग की जिसे अंग्रेजी सरकार ने ठुकरा दिया।

(अ० भा० गांधी स्मा० श० प्र० लखनऊ की पेंटिंग का चित्र)

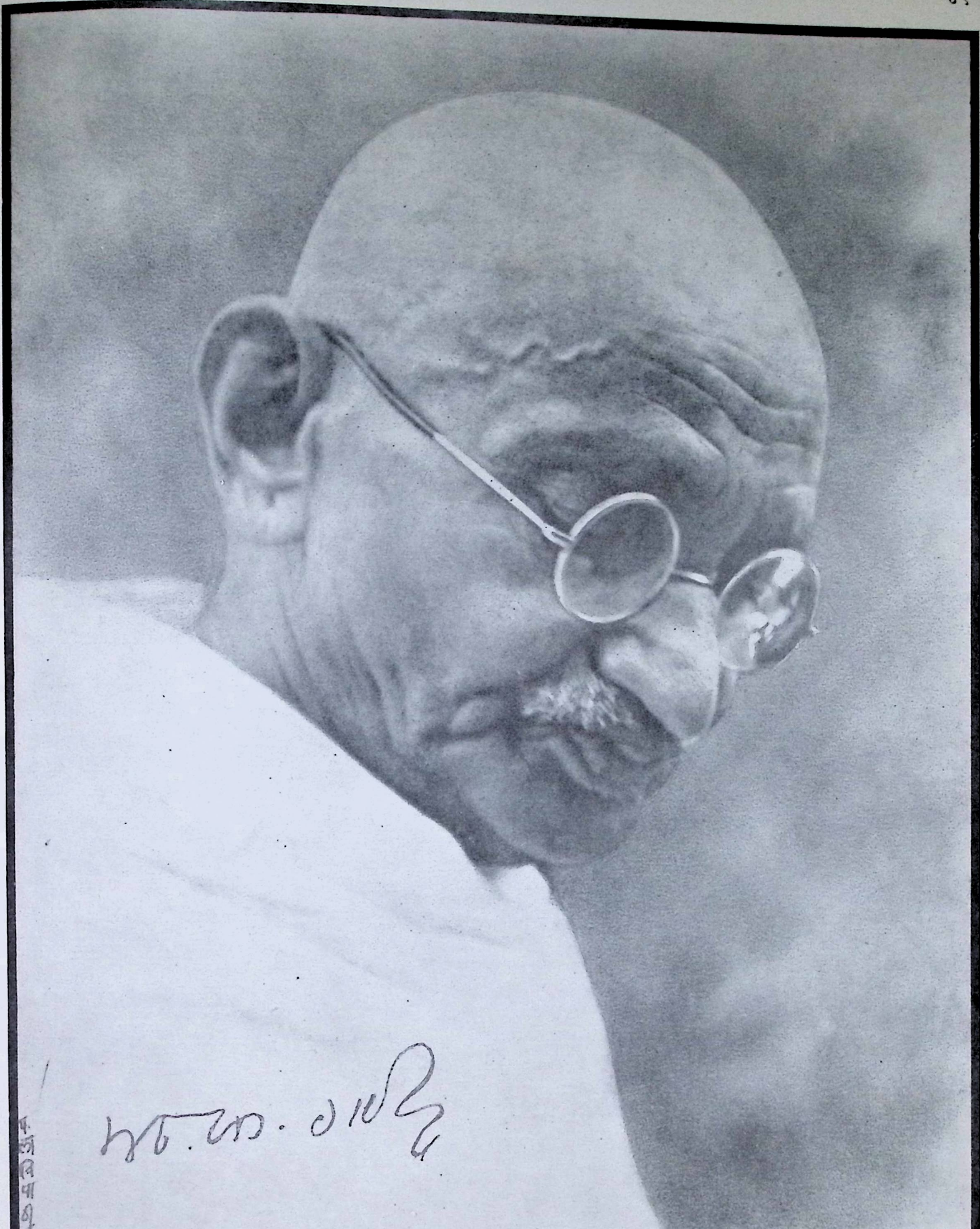

बापू का अत्यन्त निकट का यह चित्र श्री प्यारे लाल की सहायता से लिया गया था। बापू सभा मंच पर बैठे हुए थे और मेरे तथा उनके बीच उनके निजी-सचिव श्री प्यारेलाल बैठे हुए थे। मैंने श्री प्यारेलाल से अनुरोध किया कि जब मैं चित्र लेने लगूं तब वे अपना सिर झुका लें, जिससे मेरे और बापू के बीच कोई आड़ न रहे। उनके माथे की प्रत्येक नस तथा चिन्ता के गम्भीर चिन्ह साक्षात दिखाई देते हैं। बापू ने इस चित्र को बहुत पसन्द किया था।

–१९४७

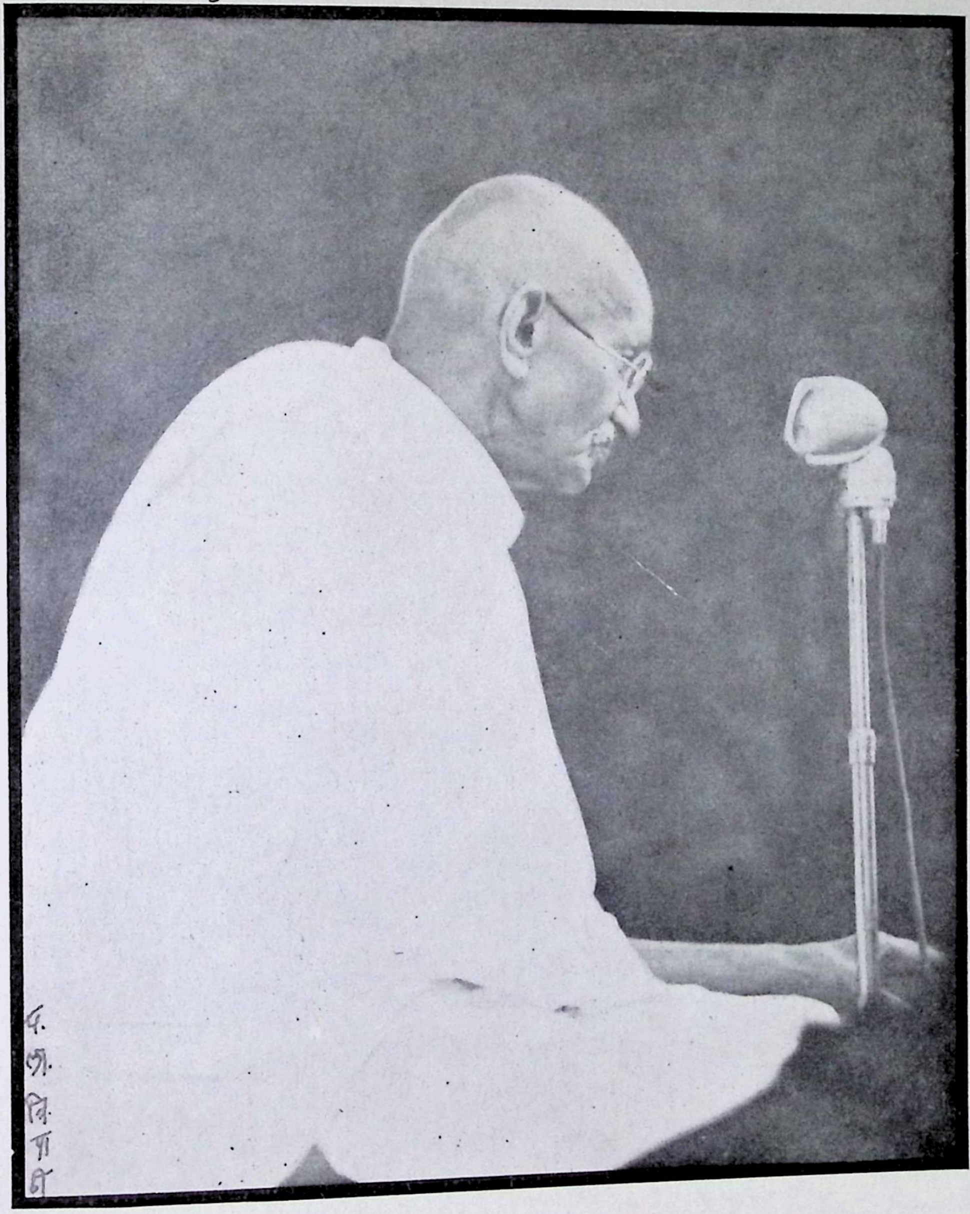

गांधी जी अब माइक के सामने बोलने ही जा रहे हैं। उनके प्रत्येक शब्द पर जनसाधारण को अखण्ड विश्वास था। उनकी गम्भीर-मुद्रा, निष्काम-भावना एवं कल्याणकारी विचारधारा ने देश में चेतना की सृष्टि की। उनकी अमोघ शक्ति और प्रभु की प्रेरणा उनके मुख पर स्पष्ट है।

—१९४७

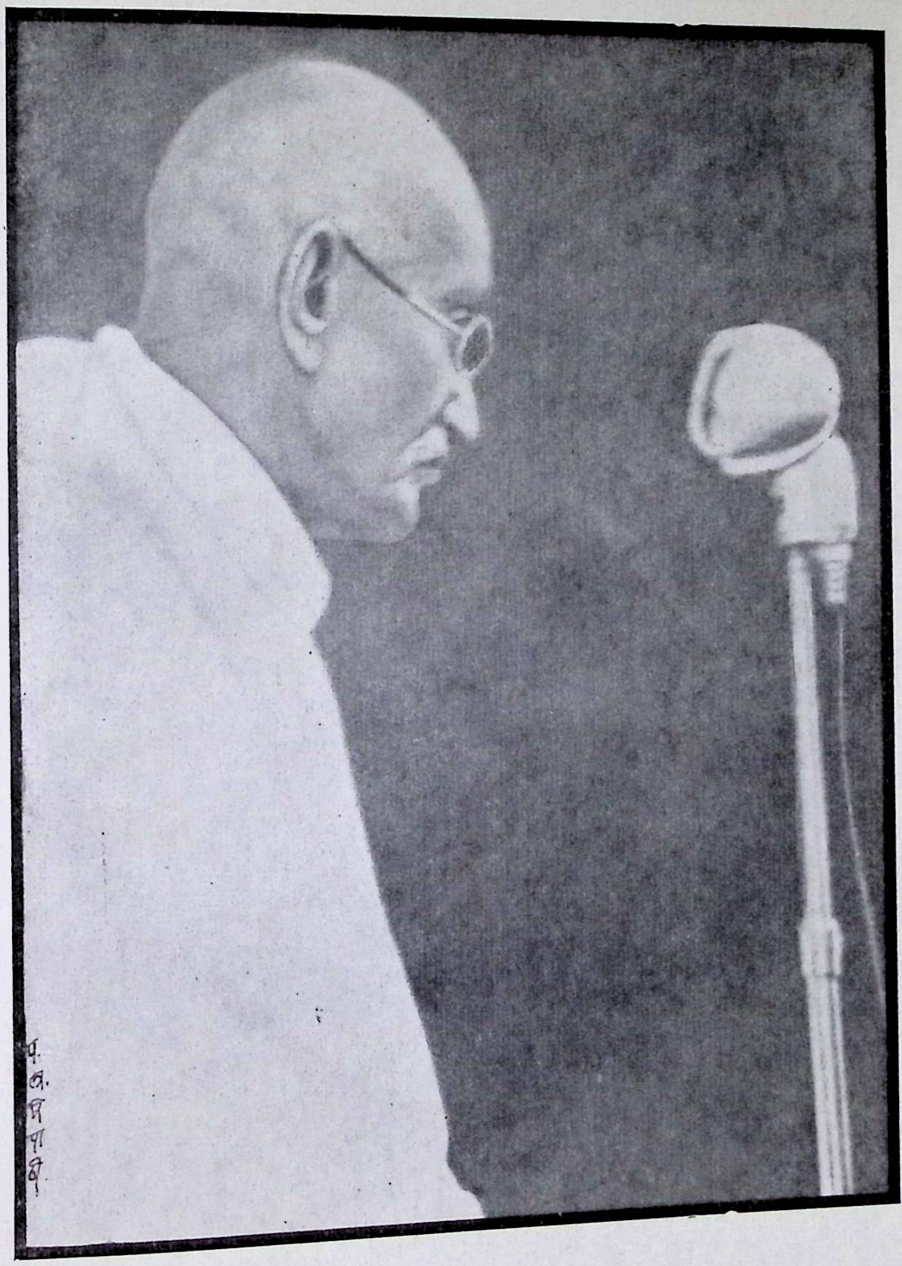

माइक्रोफोन से अपनी दृष्टि हटाकर, गांधी जी दिल्ली की एक सभा में, भाषण देने वाले ही हैं। देश में स्वराज्य प्राप्ति के पूर्व एक विभीषिका सीमची थी। सब की दृष्टि एक मात्र गांधी जी पर ही केन्द्रित थी। उनके मुख से निकले, सुलझे समाधान की अपेक्षा सब को थी। अथच ऐसी विपन्न अवस्था में उनकी विचार-धारा अत्यन्त गंभीर हो जाती थी। ऐसे ही एक क्षण में यह चित्र लिया गया है।

—१९४७

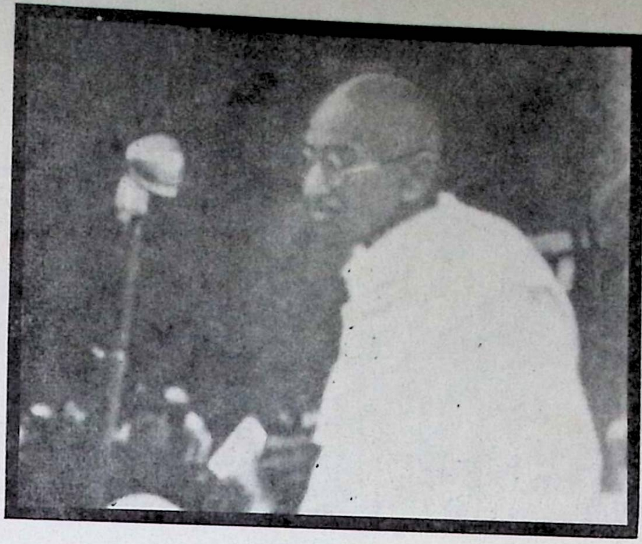

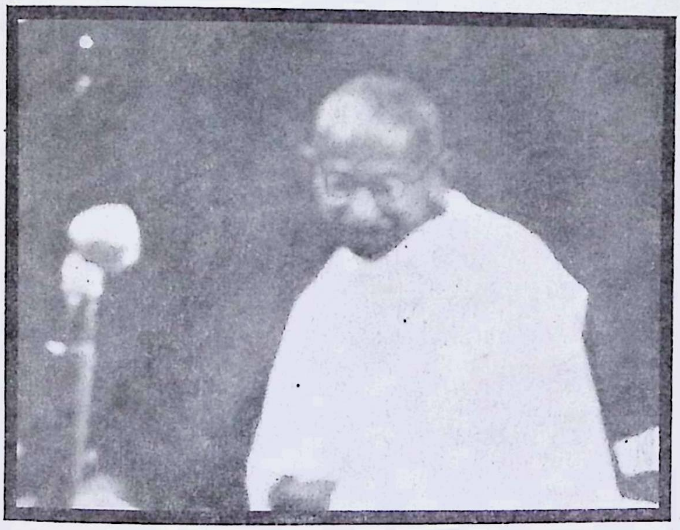

गांधी जी की तमन्यता उनकी विभिन्न मुद्राओं में देखते ही बनती थी। उनकी अत्यंत सरल, स्वाभाविक एवं पारदर्शक भावनायें अगाढ़ श्रद्धाभाजन रही हैं।
'धर्मज्ञस्य कृतज्ञश्च सत्य वाक्यो दृढ़वतः ·····। यशस्वी ज्ञान सम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान।'
इन गुणों से सम्पन्न महात्मा गांधी विश्व वंदित है।
(उपर्युक्त चित्र ८ एम० एम० के समय समय पर स्वनिर्मित सिनेमा फिल्म के अंश हैं।)

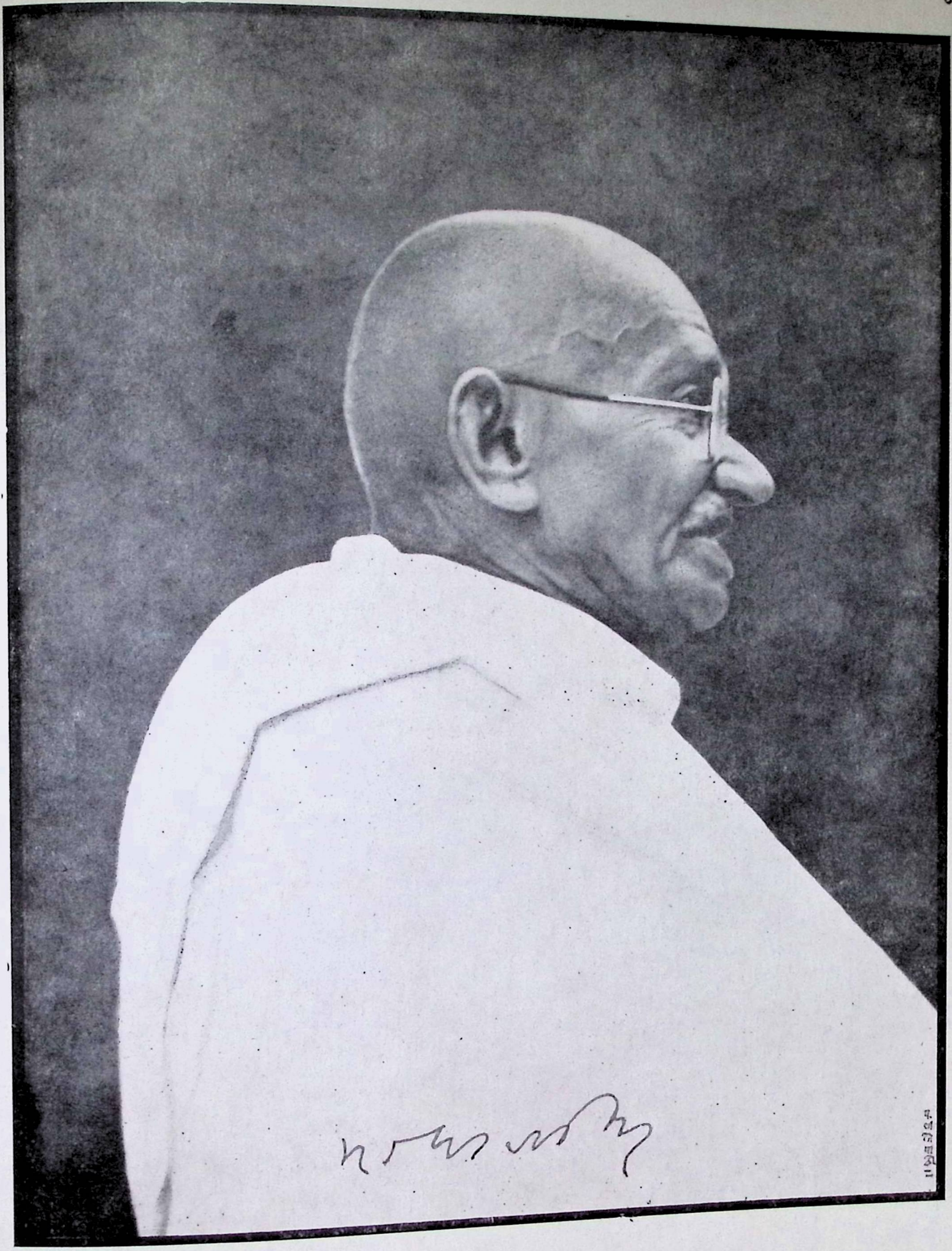

"मैं तो केता हूँ" कहकर बापू सामने देखने लग गये, जैसे वे ही कुछ प्रश्न सा कर रहे हैं। वे प्रायः 'कहता हूँ' को 'केता हूँ' अत्यन्त सरलता से कहते। उनके मुखपर जो प्राण और ज्योति विराजमान है वह प्रभु की अलौकिक देन एवं उनके अपार तपश्चर्या का मूर्तिमान स्वरूप है।

–१९४६

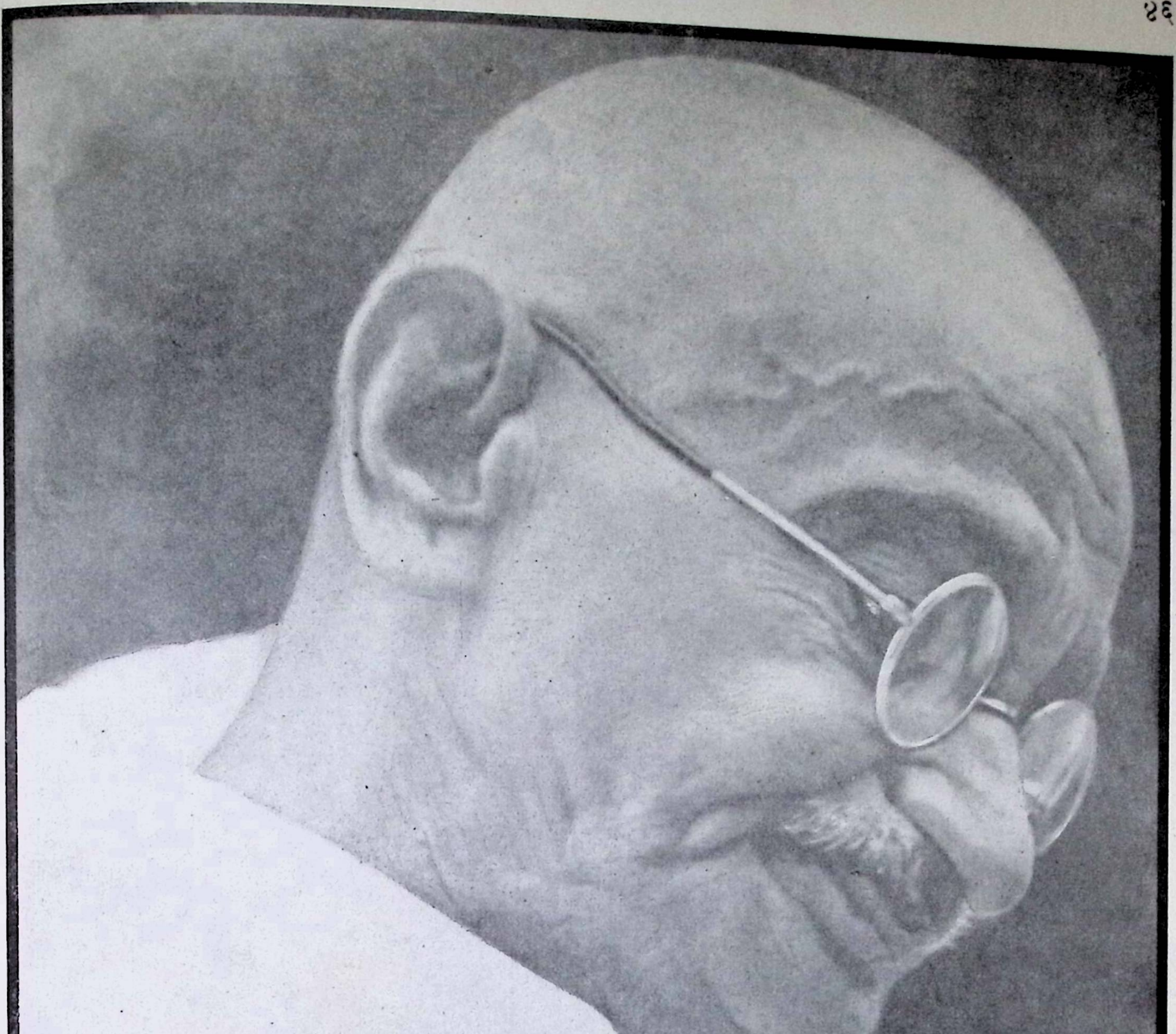

बापू की भव्य रूप-रेखा एवं श्रद्धालु शांत आकृति देखते ही बनती थी। उस मोहक छवि को पार्थिव रूप देने की आकांक्षा ने अनेक प्रयास करवाये। अन्य उपाय न देख कर प्रार्थना-सभा में चित्र लेने का निषेध होने पर भी साहस बटोरकर अत्यंत निकट से इस चित्र को लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

बापू ने ऋक्-मूल-मंत्र 'ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत्'। (प्रज्वलित तपस्या से ही ऋत और सत्य सम्भव है) का बोध किया। अथच वे जीवन के रहस्य को सृजनात्मक बलिदान की संज्ञा मानते थे। उनके मुख पर अपार आत्म-तुष्टि का मूर्तिमान स्वरूप विद्यमान है।

—१९४७

बापू हरिजन आन्दोलन के सम्बन्ध में कानपुर आये थे। मैंने पूज्यनीया बा से उनके चित्र लेने में सहायता मांगी। शायद बा को मेरे सामर्थ्य पर भरोसा नहीं हुआ। उन्होंने पूछा "तुझे तस्वीर लेना आता भी है" जब मैंने उन्हें भरोसा दिलाने का प्रयत्न किया तो वे मानो मेरी परीक्षा लेने के लिये बोली "अच्छा मैं देखती हूँ। तू पहले मेरी ही तस्वीर बना।" और बा हंस पड़ीं। मैंने उनकी हंसी में कही हुई इस बात का लाभ उठा कर तुरन्त बा का चित्र ले लिया और लगभग घंटे भर में उसे तैयार करके बा को भेंट भी कर दिया। बा खुश होकर बोल उठीं "अरे हां रे, तू तो सचमुच तस्वीर खींच लेता है। यह तो तूने बड़ी अच्छी तस्वीरबनाई है। इतनी जल्दी कैसे बना लाया रे।" मैं इतने में धन्य हो गया। बाद में बा ने कहा "अच्छा मैं मदद तोकरूँगी, लेकिन तू दूर से तस्वीर लेना। और फिर वे जरा जोर से हंसकर बोलीं। "याद रखना नजदीक जायगा तो बापू लाठी से मारेंगे।"

—१९३४

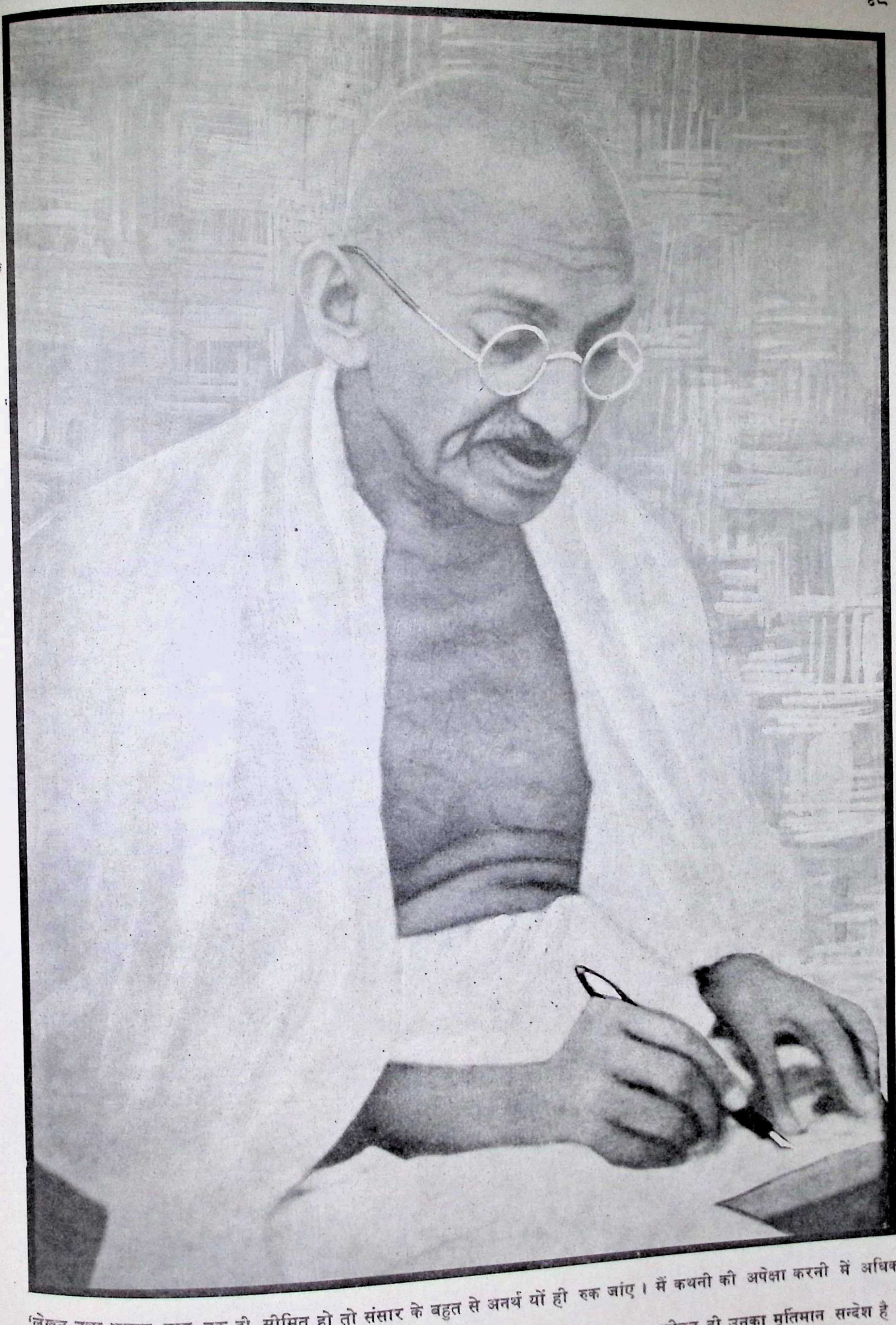

'लेखन तथा भाषण सत्य तक ही सीमित हो तो संसार के बहुत से अनर्थ यों ही रुक जाएं। मैं कथनी की अपेक्षा करनी में अधिक विश्वास रखता हूँ।' —महात्मा गांधी

गांधी जी ने जो लिखा, कहा अथवा कल्पना की, वही कर्म में परिणित किया। अथच उनका जीवन ही उनका मूर्तिमान सन्देश है।

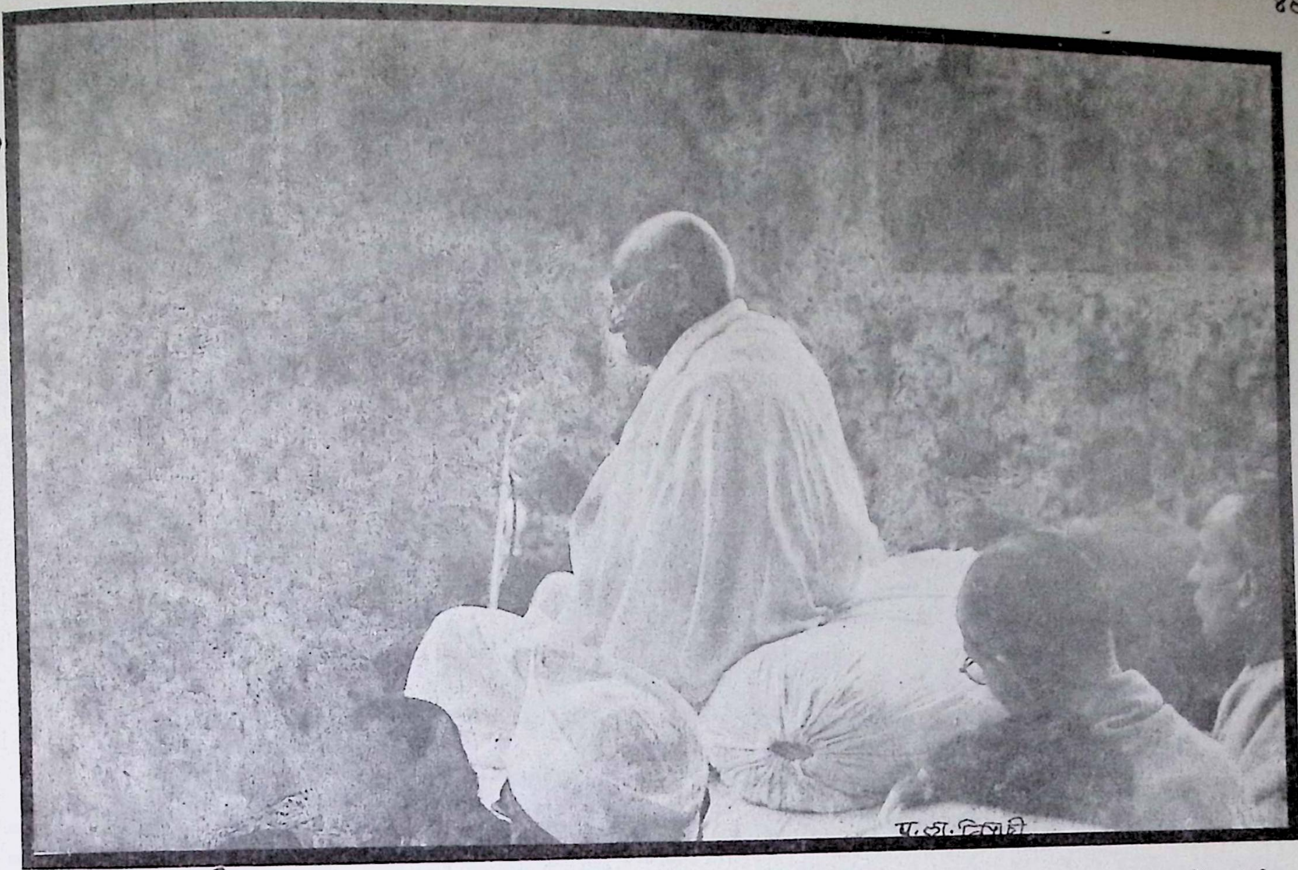

गांधी जी की प्रेरणा शक्ति, उपस्थित-अनुपस्थित निकट और दूर की सीमा में बंधी न रहकर समस्त मानव-समाज को समान रूप से प्रभावित करती रही है। उनके प्रत्येक शब्द सदा प्रतिध्वनित होकर अमरवाणी के रूप में जीवित रहेंगे। इस चित्र में व्यक्तियों के समुदाय की उपस्थिति न दिखाकर, बापू की सशक्त प्रेरणा शक्ति को प्रतीक रूप में चित्रित किया गया है।

बापू जितने महान् थे उनकी कुटिया उतनी ही साधारण थी। भारत की करोड़ों गरीब जनता के साथ सदा उनका सान्निध्य रहा है।

गांधी जी के जीवन-क्रम की तालिका

१८६९–२ अक्टूबर को पोरबन्दर में जन्म ।

१८७६–राजकोट में शिक्षारम्भ–कस्तुरबाई से सगाई ।

१८८३–कस्तुरबाई से विवाह ।

१८८५–पिता जी की मृत्यु ।

१८८७–मैट्रिक परीक्षा पास की, भावनगर के सामलदास कालेज में दाखिला ।

१८८८–४ सितम्बर को शिक्षा के लिये विलायत रवाना ।

१८८९–पहला सार्वजनिक भाषण-इंग्लैण्ड की निरामिषाहारियों की सभा में ।

१८९१–१० जून को बैरिस्टर हुये, ७ जुलाई को बम्बई पहुँचे, माताजी की मृत्यु का समाचार ।

१८९२–राजकोट तथा बम्बई में वकालत ।

१८९३–अप्रैल में मुकदमे के लिये दक्षिण अफरीका रवाना ।

१८९४–जिस मुक़दमे के लिये दक्षिण अफरीका गये थे, उसका पंच-फैसला हुआ ।

१८९५–नेटाल सुप्रीमकोर्ट के एडवोकेट हुए, नेटाल भारतीय कांग्रेस का संगठन ।

१८९६–छः मास के लिए भारत आगमन, तिलक गोखले आदि नेताओं से भेंट, २८ नवम्बर को वापसी ।

१८९७–डर्बन लौटने पर विरोधी प्रदर्शन, जीवन में महान् परिवर्तन ।

१८९९–बोअर युद्ध में अंग्रेजों की सहायता ।

१९०१–राजकोट में महामारी कमेटी द्वारा सेवा, भारत आगमन, कलकत्ता कांग्रेस में शामिल ।

१९०२–बर्मा-यात्रा, रेल के तीसरे दर्जे में भारत प्रवास । जुलाई में बम्बई में आफिस, तीन महीने बाद दक्षिण अफरीका के लिये पुनः प्रस्थान ।

१९०३–ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडिया एसोशियशन की स्थापना । 'इंडियन ओपिनियन' की स्थापना ।

१९०४–गीताध्ययन, रस्किन के "अनटूदि लास्ट" सर्वोदय को पढ़ कर जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन, फिनिक्स आश्रम की स्थापना ।

१९०६–जूलू-विद्रोह में घायलों की सेवा । ब्रह्मचर्य से रहने की प्रतिज्ञा, सत्याग्रह शब्द का अविष्कार । शिष्टमण्डल के सदस्य के तौर पर इंग्लैण्ड रवाना ।

१९०७–ख़ूनी कानून के विरुद्ध सत्याग्रह ।

१९०८–अन्तरिम समझौता, पठान द्वारा आक्रमण, पुनः सत्याग्रह आरम्भ, गिरफ्तारी ।

१९०९–टालस्टाय का प्रथम पत्र, दूसरी बार शिष्टमंडलमें इंग्लैण्ड रवाना, वापसी में जहाज पर 'हिन्द स्वराज्य' लिखा ।

१९१०–जोहन्सवर्ग में टालस्टाय फार्म की स्थापना ।

१९१२–गोखले की दक्षिण अफरीका की यात्रा, नीति-धर्म प्रकाशित । आरोग्य विषयक सामान्य ज्ञान पुस्तक लिखी ।

१९१३–सत्याग्रह फिर आरम्भ, गिरफतारी व रिहाई, सात दिन का उपवास तथा साढ़े चार मास तक एक समय भोजन ।

१९१४–चौदह दिन का उपवास, समझौता व सत्याग्रह की सफलता, १८ जुलाई को इंग्लैण्ड रवाना, ४ अगस्त से प्रथम महायुद्ध, सरोजिनी नायडू से परिचय और महा युद्ध में सेवा ।

१९१५–भारत आगमन और कैसरे हिंन्द मेडल की प्राप्ति, भारत भ्रमण, काका कालेलकर व आचार्य कृपलानी से परिचय । १९ फरवरी को गोखले की मृत्यु, २५ मई को आश्रम की स्थापना ।

१९१६–काशी विश्वविद्यालय की स्थापना के अवसर पर प्रसिद्ध भाषण, लखनऊ कांग्रेस मे जवाहरलाल नेहरू से पहली बार भेंट ।

१९१७–राजेन्द्र बाबू से पहली बार भेंट, १९ अप्रैल को चम्पारन सत्याग्रह, ३१ मई को गिरमिटिया कानून रद्द, ३० जून को दादाभाई नवरोजी की मृत्यु और महादेव भाई देसाई से सम्पर्क ।

१९१८–अहमदाबाद में मिल मजदूरों की हड़ताल, तीन दिन का उपवास, खेड़ा सत्याग्रह, चर्खे का पुनरुद्धार ।

१९१९–रौलट कानून–६ अप्रैलको प्रार्थना और उपवास दिवस, १३ अप्रैल को जलियाँवाला बाग कांड, यंग इंडिया और नवजीवन का सम्पादन शुरू । खिलाफत द्वारा असहयोग–अमृतसर कांग्रेस ।

१९२०–१ अगस्त को लोकमान्य तिलक की मृत्यु–२ अक्टूबर को तिलक स्वराज्य फण्ड की स्थापना, गांधी जी द्वारा तैयार किया हुआ कांग्रेस का संविधान स्वीकृत। असहयोग आन्दोलन का आरम्भ, गुजरात विद्यापीठ की स्थापना।

१९२१–अन्य राष्ट्रीय विद्यापीठों की स्थापना, प्रिन्स आफ वेल्स आगमन के बहिष्कार के कारण दंगा, अशान्ति, पांच दिन का उपवास, अहमदाबाद कांग्रेस।

१९२२–५ फरवरी को चौरीचौरा कांड, सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित, ५ दिन का उपवास, १० मार्च को गिरफ्तारी, ६ वर्ष की सजा।

१९२४–अपेंडिसाइटिस का आपरेशन, ५ फरवरी को रिहाई, २४ सितम्बर को हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिये २१ दिन का उपवास, बेलगांव कॉंग्रेस के अध्यक्ष।

१९२५–६ जून को देशबन्धु चितरंजन दास की मृत्यु, एक सप्ताह का उपवास, कानपुर–कांग्रेस, चर्खा-संघ की स्थापना।

१९२६–स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान।

१९२७–खादी यात्रा, १९ दिसम्बर को हकीम अजमल खाँ की मृत्यु।

१९२८–साईमन कमीशन, बारडोली सत्याग्रह, मगनलाल गांधी की २२ अप्रैल को पटना में मृत्यु, १७ नवम्बर को लाला लाजपतराय की मृत्यु, नेहरू रिपोर्ट, कलकत्ता कॉंग्रेस में समझौता प्रस्तुत।

१९२९–लाहोर कॉंग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव।

१९३०–२६ जनवरी को पूर्ण स्वाधीनता की प्रतिज्ञा, १२ मार्च को नमक कानून तोड़ने के लिये डाँडी यात्रा, ५ मई को गिरफ्तारी।

१९३१–४ जनवरी को इंगलैण्ड में मौ० मुहम्मदअली की मृत्यु, २५ जनवरी को रिहाई, ६ फरवरी को पं० मोतीलाल नेहरू की मृत्यु, ४ मार्च को गांधी इर्विन पैक्ट, २४ मार्च को भगतसिंह को फाँसी, कराची कॉंग्रेस, २५ मार्च गणेशशंकर विद्यार्थी का बलिदान, दूसरी गोल–मेज कॉन्फेस में भारत के एक मात्र प्रतिनिधि के रूप में शामिल, दिसम्बर में गोल-मेज-परिषद से खाली हाथ लौटे।

१९३२–कॉंग्रेस गैर कानूनी घोषित, सत्याग्रह फिर से आरम्भ, ४ जनवरी को गिरफ्तारी, "नव जीवन" "यंग इण्डिया" पत्र बन्द, २० सितम्बर को साम्प्रदायिक निर्णय के विरोध में आमरण अनशन, २४ सितम्बर को यरवदा पैक्ट, २६ सितम्बर को उपवास समाप्त।

१९३३–८ मई से २१ दिन का उपवास, "हरिजन" पत्रों का प्रारम्भ, रिहाई फिर गिरफ्तारी, एक वर्ष की सजा, १६ अगस्त से आमरण उपवास जो एक सप्ताह चला, २३ अगस्त को रिहाई, २० सितम्बर को ऐनी बेसंट की मृत्यु, २२ सितम्बर को विट्ठलभाई पटेल की मृत्यु, साबरमती आश्रम का विसर्जन, वर्धा में रहने का निश्चय, ७ नवम्बर से हरिजन यात्रा।

१९३४–विहार भूकम्प, ७ मई को सत्याग्रह स्थगित, ७ दिन का उपवास, २६ अक्टूबर को ग्रामोद्योग–संघ की स्थापना, बम्बई कांग्रेस।

१९३५–कांग्रेस की स्वर्ण जयन्ती।

१९३६–१० मई को डा० अन्सारी की मृत्यु, सेवाग्राम-आश्रम की स्थापना।

१९३७–जुलाई में कांग्रेस-पद ग्रहण, नई तालीम शुरू।

१९३९–४ जनवरी को मौ० शौकतअली की मृत्यु, राजकोट में आमरण अनशन, वाइसराय के हस्तक्षेप से चार दिन बाद समाप्त, त्रिपुरी–कांग्रेस सुभाष बाबू का कांग्रेस के अध्यक्ष–पद से त्यागपत्र, ३ सितम्बर को द्वितीय महायुद्ध का आरम्भ, ८ नवम्बर को प्रान्तों में कांग्रेस सरकारों द्वारा पद–त्याग।

१९४०–११ अक्टूबर से व्यक्तिगत सत्याग्रह–विनोवा प्रथम सत्याग्रही 'हरिजन' पत्रों पर रोक।

१९४१–७ अगस्त को रवीन्द्रनाथ ठाकुर की मृत्यु, कांग्रेस के नेतृत्व से मुक्ति, ३० सितम्बर को गो–सेवा–संघ की स्थापना।

१९४२–कांग्रेस का फिर नेतृत्व, ११ फरवरी को सेठ जमनालाल बजाज की मृत्यु, क्रिप्स-मिशन, हिन्दुस्तानी प्रचार की स्थापना, ८ अगस्त को 'भारत—छोड़ो' प्रस्ताव, ९ अगस्त को भारत भर में नेताओं की सामूहिक गिरफ्तारियां, १५ अगस्त को महादेव भाई की मृत्यु।

१९४३–आगाखां महल में २१ दिन का उपवास।

१९४४–२२ फरवरी को कस्तूरबा गांधी की मृत्यु, ६ मई को जेल से रिहाई, गांधी–जिन्ना–वार्ता।

१९४५–नेताओं की जेल से मुक्ति, पहली शिमला कान्फ्रेंस।

१९४६–केबिनट मिशन, मुस्लिम लीग द्वारा १६ अगस्त को 'सीधी कार्रवाई' का दिन, साम्प्रदायिक दंगे, नोआखाली की पैदल यात्रा शुरू।

१९४७–१५ अगस्त को स्वतन्त्रता–प्राप्ति, कलकत्ता में ७३ घण्टे का उपवास।

१९४८–दिल्ली में शान्ति–स्थापना तथा आमरण अनशन, जो पांच दिन चला। ३० जनवरी को **हे राम!** शब्द के साथ महा प्रयाण तथा अमरत्व की प्राप्ति।

53849

'एकला चलो'

एकान्त पथिक महात्मागांधी बंगाल के गांव-गांव तथा जन-समूहों के मध्य, प्रेम और शांति की अमर ज्योति से द्वेष और अशांति को दूर करने की चेष्टा में तन्मय हैं।

गांधी जी ने कहा था :— 'यदि मुझे किसी हत्यारे की गोली का शिकार होना पड़े तो होठों से ईश्वर का नाम जपते हुये मेरे प्राण टूटें । ३० जनवरी १९४८ को सायं तीन गोलियों ने उनके वक्षस्थल को पार किया और उन्होंने **हे राम !** उच्चरित करते हुये परम शांति लाभ किया ।

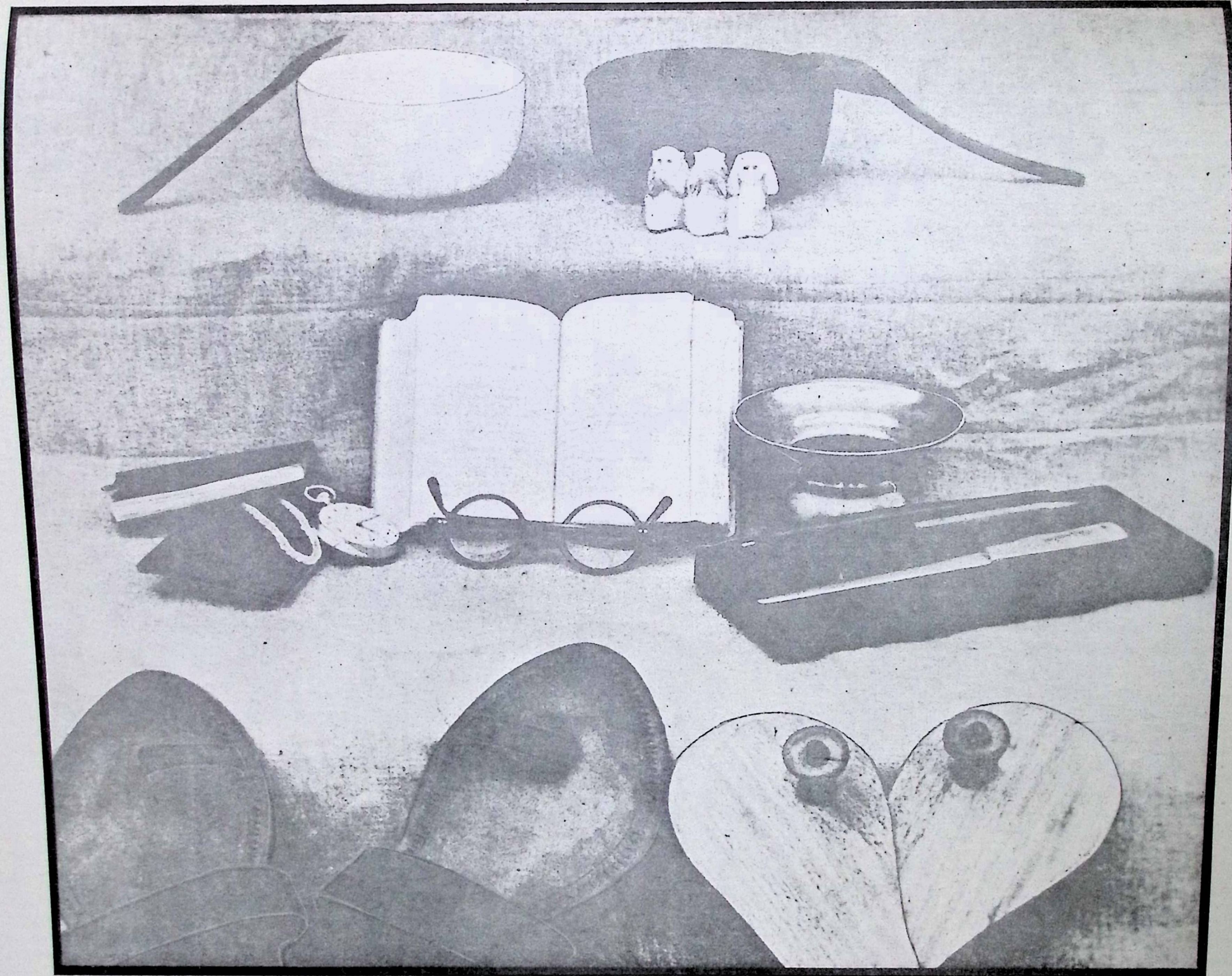

गांधी जी ने, साधारण कल्पना के पेर, अपनी आवश्यकताओं अत्यल्प कर लिया था। चित्र में उनके नित्य–व्यवहार की वस्तुयें दृष्टिगत हैं।

बापू के पार्थिव शरीर का भस्मावशेष पवित्र जान्हवी-यमुना-सरस्वती के नैसर्गिक संगम प्रयाग में प्रवाहित करने हेतु ले जाये गये। चित्रों का संक्षिप्त परिचय निम्न है :-

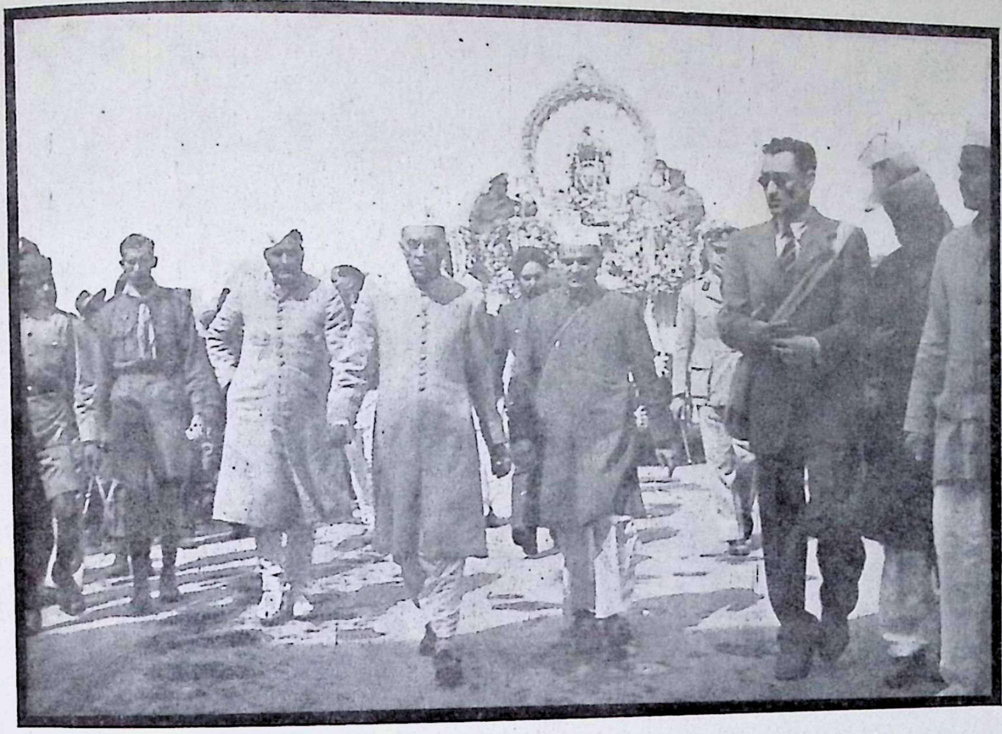

१-पंडित जवाहरलाल नेहरू और श्री लालबहादुर शास्त्री भस्म युक्त कलश की ओर संगम तट पर जा रहे हैं। अत्यंत दुखी, वे यंत्रवत्, अपने शरीर का वहन कर रहे हैं।

२-श्रीमती सरोजिनी नायडू (तत्कालीन गवर्नर उत्तरप्रदेश) भावावेग में रो पड़ी। बापू का सान्निध्य सदा के लिये तिरोहित होने जा रहा है। भावनाओं की सुकुमार देवी के लिए यह स्थिति अत्यंत असहय थी।

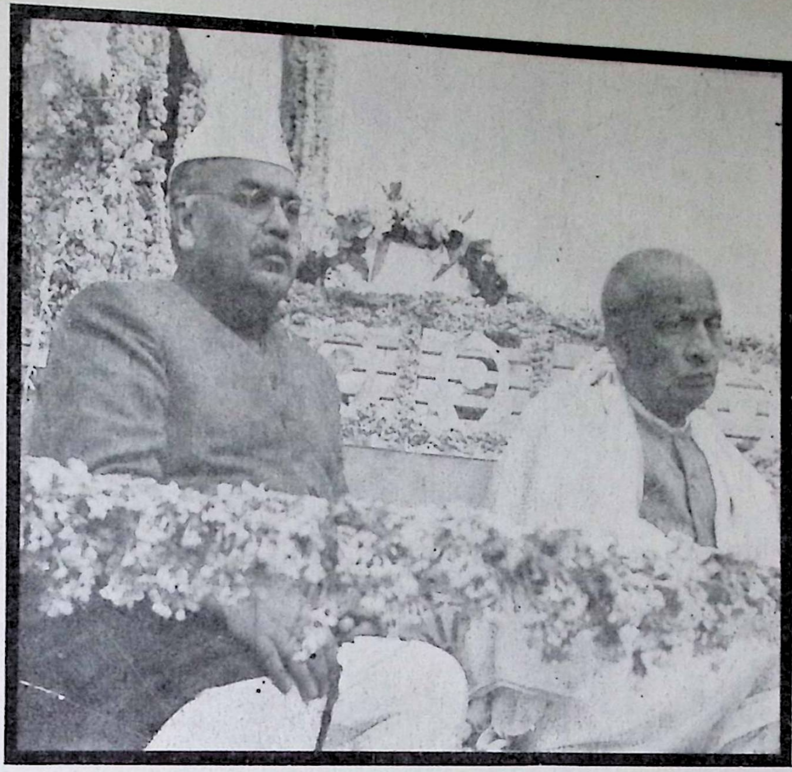

३–(दाहिनी ओर) श्री सरदार पटेल अपने अत्यंत विह्वल हृदय को संभालने में असमर्थ हैं। अब बापू का अपार प्रेम और सौहार्द्य उन्हें कहां मिलेगा।

(बाईं ओर) श्री रफी अहमद किदवई दुख से अभिभूत होकर प्रायः जड़वत् हो गये हैं।

४–पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त अपार चेष्टाओं के विपरीत अपने हृदय के उद्गारों का रोकने में अक्षम है।

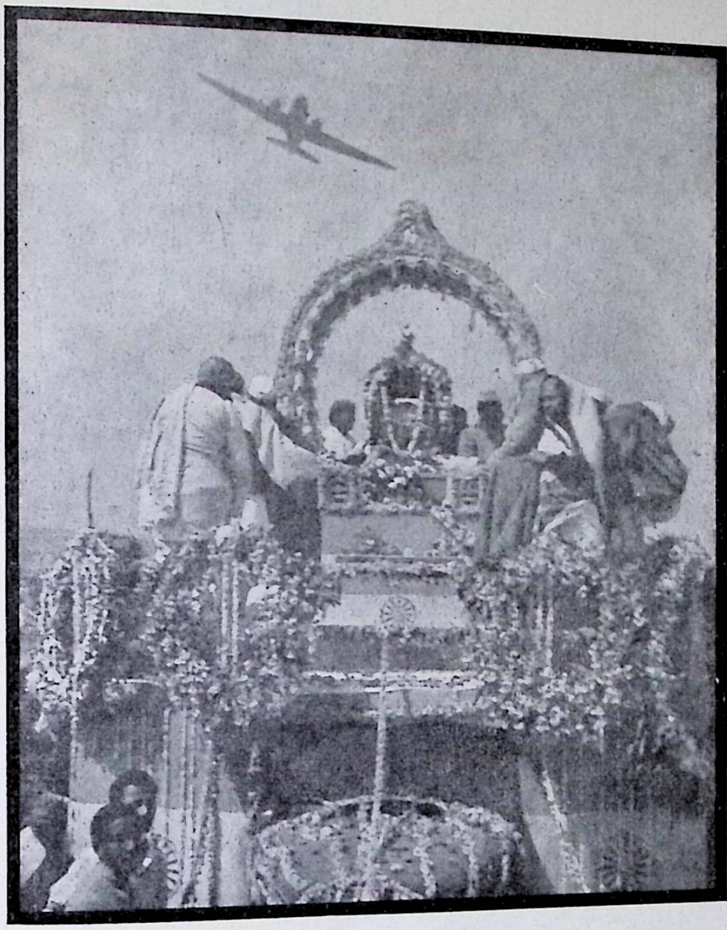

५–भस्मावशेष कलश उठाने के पूर्व वैदिक मंत्रों का उच्चारण हो रहा है। पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल तथा अन्य नेता, श्वासवरोध सी स्थिति में अत्यंत विह्वलता और विवशता के साथ विसर्जन कार्य सम्पन्न कर रहे हैं।

ऊपर वायुयान सिर झुकाकर, आकाश के देवताओं सदृश्य, पुष्पवृष्टि करते हुये अपनी श्रद्धालु भावनाओं को प्रकट कर रहा है।

इस भीषण हृदय–विदारक अवस्था में अत्यंत करुणा एवं विवशता विराजती थी। सब ओर एक ही आवाज थी–बापू गये, बापू चले गये, अब क्या होगा ?

हे–राम !

जीवन तथा मृत्यु में समान विजयी

दिल्ली में बिड़ला भवन के पिछले भाग के प्रागंण में प्रार्थना सभा में जाते समय आततायी की तीन गोलियों से बापू के पार्थिव शरीर को शांत कर दिया गया था। बापू सदा कहा करते थे कि यदि कोई पागल व्यक्ति मुझे मार डाले तो मुझे क्रोध न आवे और हंसते हुये प्रभु का नाम मेरे हृदय और जिह्वा में हो। बापू जीवन में तो विजयी रहे ही—मृत्यु में भी उनकी विजय रही। 'हे राम' कहते हुये उन्होंने प्राण-परित्याग किया। बापू के मृत्यु स्थान पर बना स्मारक।

राजघाट में समाधि

इसी स्थल पर बापू के पार्थिव शरीर का वैदिक-विधि से अन्तिम संस्कार किया गया था। इस समाधि पर नित्य हजारों की संख्या में श्रद्धा-पुष्प चढ़ाने, दूर दूर से लोग, आते हैं और दिन भर भीड़ बनी ही रहती है। इस चित्र के ऊपर के भाग के संलग्न चित्र में एक विद्यालय की छात्रायें बापू की समाधि के दर्शनार्थ उपस्थित हैं। दर्शनार्थियों की अपार श्रद्धा देखते ही बनती है।

'बापू और बा'

थकान भरी यात्रा के पश्चात् माता कस्तुरबा बापू क चरणों को गरम पानी से धो रही हैं। उनकी अपार श्रद्धा और भक्ति सदैव एक सी रही है तथा वे सेवा भावना की साकार मूर्ति रही हैं। बापू और बा एक प्राण दो शरीर हो गये थे और जीवन पर्यन्त ऐसे ही रहे।

आज बापू और बा अमरत्व को प्राप्त हो गये हैं।

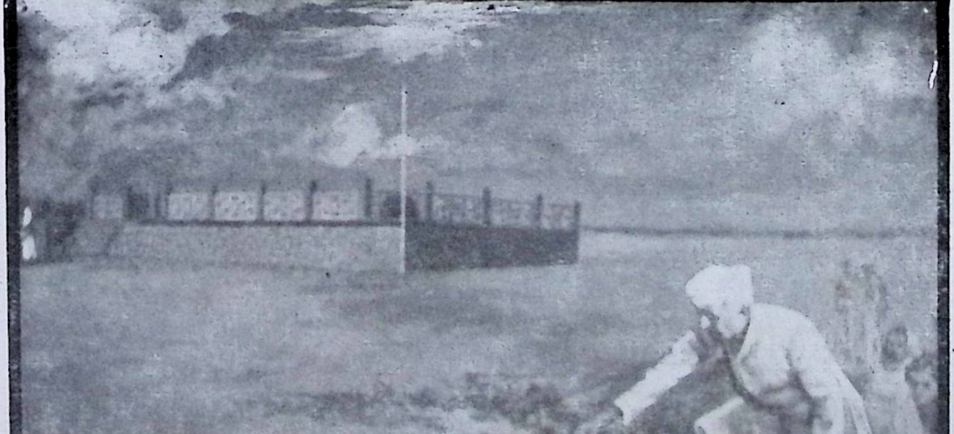

दिवगंत बापू की अस्थियों पर पुष्प चढ़ाते हुए पं० जवाहरलाल नेहरू

Date Due

20.10.8		

S. N. D. T. WOMEN'S UNIVERSITY LIBRARY

H 080
Gan/Tri R 53849

AUTHOR Tripāthi, Pannālāl.
TITLE Bāpū chitrāvalī
athava Gandhi darshan.

H 080
Gan/Tri
53849